राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 25.00 संख्या 130

निशाचर

©RAJA POCKET BOOKS

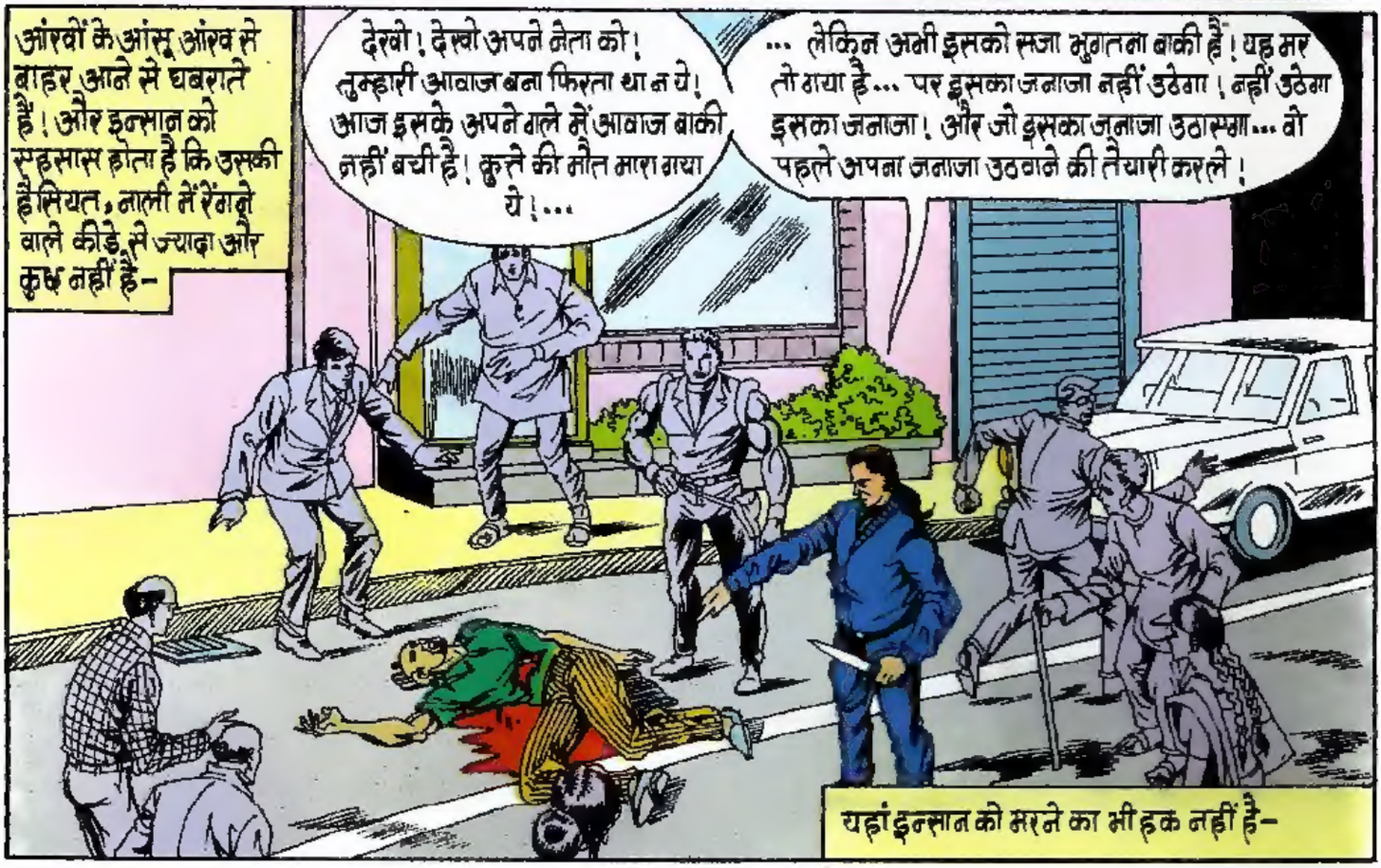

मुम्बई– मायानगरी मुम्बई ! जहां किस्मत मिट्टी छूने वालों को सोने से लाद देती है ! यहां पर राज करते हैं, किस्मत, मेहनत–
और माफिया–
तूने इस इलाके के दुकान वालों को हफ्ता देने के खिलाफ भड़काया है डेविड ! इसलिए यह हफ्ता ...
... तेरी जिन्दगी का आखिरी हफ्ता है...
आऽऽहऽऽ !
EXPRESSIONS
इन इलाकों में दहशत का बोझ आह तक को दबा देता है। जुबानें लकड़ी की हो जाती हैं ! और दिल पत्थर के –
आंखों के आंसू आंख से बाहर आने से घबराते हैं ! और इन्सान को एहसास होता है कि उसकी हैसियत, नाली में रेंगने वाले कीड़े से ज्यादा और कुछ नहीं है –
देखो ! देखो अपने नेता को ! तुम्हारी आवाज बना फिरता था न ये ! आज इसके अपने गले में आवाज बाकी नहीं बची है ! कुत्ते की मौत मारा गया ये !...
... लेकिन अभी इसको सजा भुगतना बाकी है ! यह मर तो गया है ... पर इसका जनाजा नहीं उठेगा ! नहीं उठेगा इसका जनाजा ! और जो इसका जनाजा उठाएगा ... वो पहले अपना जनाजा उठवाने की तैयारी करले !
यहां इन्सान को मरने का भी हक नहीं है–

शायद इसीलिए कोई मरना नहीं चाहता-

लेकिन मौत खुद ही मौत का डर कम कर देती है! डेविड के सगे संबंधियों और मित्रों का डर फिलहाल खत्म हो गया था-

क्योंकि बिना सही क्रिया-कर्म के वे डेविड को छोड़ कर जाने वाले नहीं थे-

बान्द्रा के पुराने कब्रिस्तान में-

दफनाने की रस्में जल्दी पूरी कीजिएगा फादर! उस माफिया डॉन छोटे हाजी का कोई भरोसा नहीं है!

यू आर राइट, सन...

मैं बहुत जल्दी-जल्दी ही करूंगा! क्योंकि मुझे कई मुर्दों को दफनाना है!

कई मुर्दों को? ओह, समझा! आपको दूसरे कब्रिस्तानों में भी जाना है!

नहीं! सारे मुर्दे यहीं दफनाए जाएंगे!... मैं फादर नहीं, छोटे हाजी का आदमी हूं। हमें मालूम था कि तुम लोग हमारी चेतावनी को धमकी मानोगे!

इसीलिए हम तुमको ऐसी मिसाल बनायेंगे, जिसे देखकर लोग 'हफ्ता' तो क्या 'डेली' पैसे देने शुरू कर देंगे!
कूद! इस कब्र में कूद! अगर जगह बची तो डेविड को भी डाल देंगे!
जगह नहीं बचेगी 'फादर'...
... क्योंकि तुम लोग कुत्ते हो, और मेरी शक्ल कुत्ते जैसी है!
... क्योंकि इससे पहले तू कूदेगा, और फिर तेरा पिल्ला! उसके बाद इसमें जगह नहीं बचेगी...
मैं वह हूं, जिसे देखकर तुम जैसे लोग तुरन्त पहचान जाते हैं...
धांय
आह! तू... तू तो ताबूत उठाने वाले लोगों में से ही एक है! लेकिन तेरे पास बन्दूक?... कौन है तू?
डोगा!

हां, डोगा! मैं इन्सानों को फाड़ खाने वाले भेड़ियों से बहुत नफरत करता हूं। लेकिन उससे भी ज्यादा नफरत तुम जैसे जोकों से करता हूं। जो इन्सान का खून आहिस्ता-आहिस्ता चूसते हैं। धीरे-धीरे मारते हैं इन्सान को...
तड़ाक
...छोटे हाजी के पीछे तो मैं बहुत दिनों से था। पर ये पता नहीं चल रहा था कि वह आखिर रहता कहां है? अब ये बात तुम लोग मुझे बताओगे?
धाड़
जरूर बताएंगे! अगर तू जिन्दा बचा तो जरूर बताएंगे!
तड़ तड़ तड़ तड़

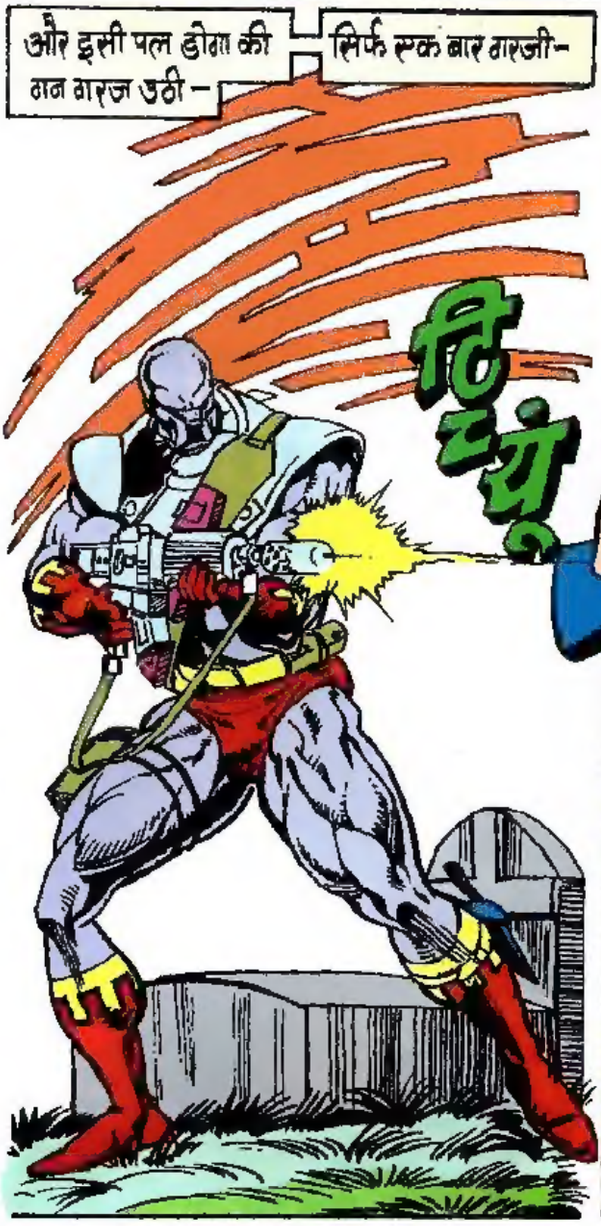

पता तो लगाऊंगा ही ! चाहे इसके लिए मुझे तुम लोगों की उंगलियां तोड़नी पड़ें या नाखून उखाड़ने पड़ें।
तड़ तड़ तड़ तड़
ट्रिगर पर दबी उंगली, पलभर के लिए ढीली हुई, गोलियां रुकीं—
और इसी पल डोगा की गन गरज उठी —
सिर्फ एक बार गरजी—
निशाना गजब का था—
डोगा की गोली उस गुंडे की बन्दूक की नाल में घुसती चली गई—
?
मैगजीन एक धमाके के साथ फट पड़ी—
और साथ ही साथ बन्दूक के भी जोड़ खुलते चले गए—
धड़ाम

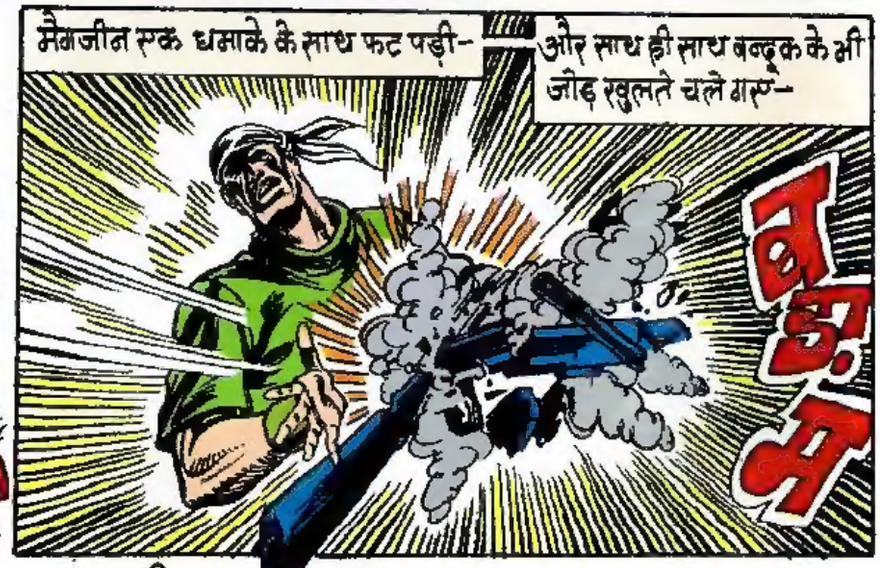

अगले ही पल वह डोगा की गिरफ्त में था-
बता, पहले तेरी उंगलियां तोड़ूं या तेरा दाहिना हाथ कंधे से उखाड़ दूं?
क...कसम लेलो डोगा! हमको नहीं पता कि छोटा हाजी कहां मिलेगा! सच!
सच! आऽऽऽह!
कड़ाक
प्रतिवाद का धीमा सा स्वर उभरते ही, उस गुंडे के बाजू और कंधे के बीच के जोड़ खुल गए-
वातावरण रुक न रुकने वाली चीख से कांपने लगा। अंधेरी होती रात में डोगा की क्रूरता, घृणा और चीखते गुंडे की दर्दभरी कराहें और आर्तनाद की तरंगें तैरने लगीं-
आह ईया ऊ
आऽऽ हहहहह
आ ऊ
और हवा में बुराई फैलाने लगीं। रात के अंधेरे में पलने वाले पाप अंधेरे को और गहरा करने लगे-
और ताजी खुदी कब्र में मिट्टी के गर्त में दबी नजर आ रही उंगलियां हरकत करने लगीं-

पूरा मुम्बई यह बात जानता था कि जब डोगा, अपराधियों की जुबान खुलवाने पर उतर आता है तो दया भी दया की भीख मांगती नजर आती है–
बोल! जुबान खोलेगा या हमेशा के लिए बन्द करवाएगा!
बताता हूं! वह भायखला के कोली पाड़ा...
बस, डोगा! बुरा सुनना पाप है! और इस पाप की सजा तो तुझे मिलनी ही चाहिए!
हिंसा और क्रूरता, रात के अंधेरे में अपनी तरंगें फैलाते जा रहे थे–
और ये तरंगें किसी को जीवन प्रदान कर रही थीं–
अगर ये लड़ाई यहीं रुक जाती! अगर डोगा दोनों गुंडों को जल्दी काबू में कर लेता! अगर डोगा के साथ ताबूत लेकर आए लोग भाग जाने के बजाय रुककर डोगा की मदद करते! अगर इनमें से एक भी संभावना पूरी हो जाती–
तो यह दुनिया जो अगर स्वर्ग जैसी नहीं है, तो कम से कम नरक जैसी न बन जाती–

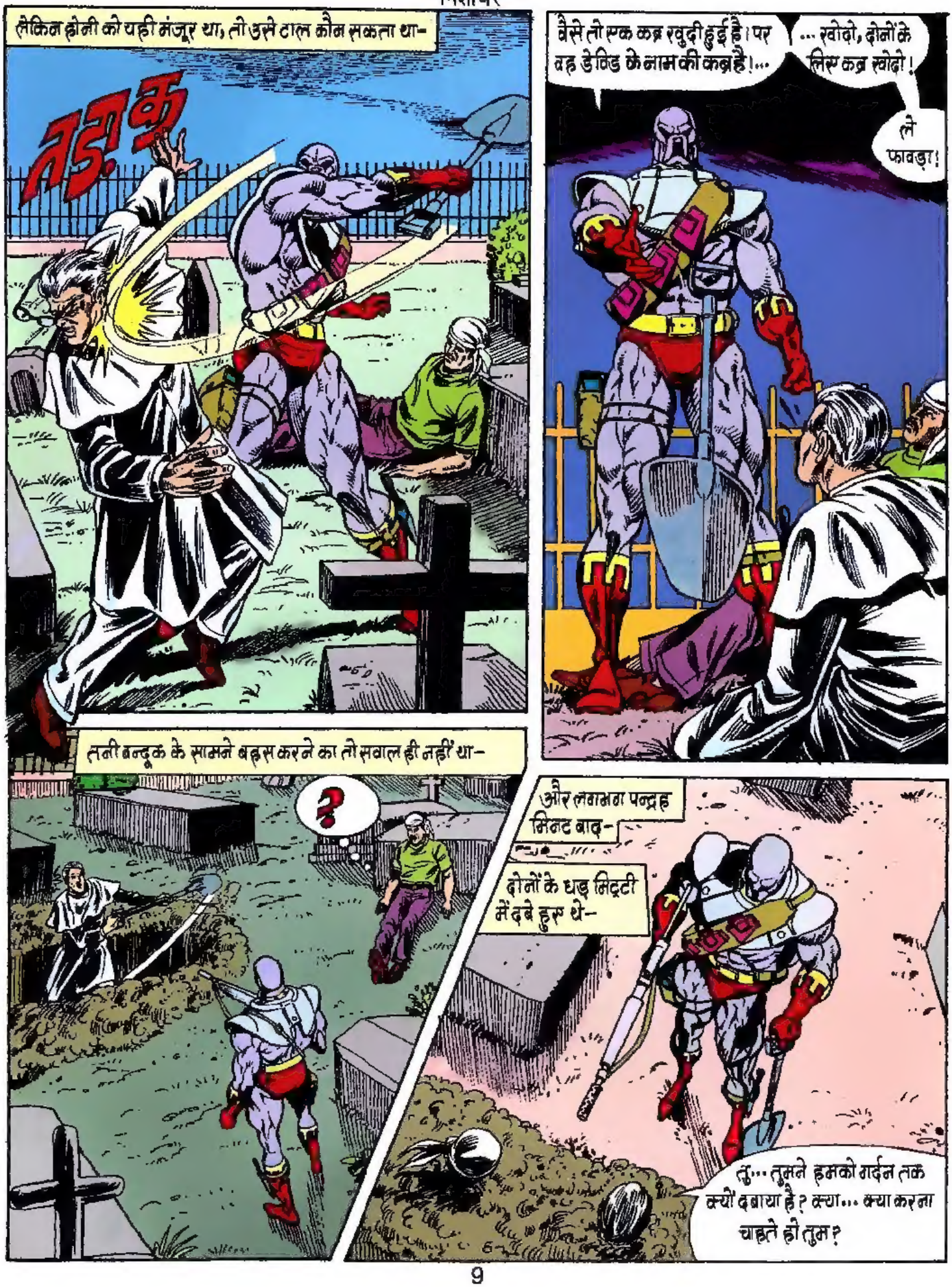
लेकिन होनी को यही मंजूर था, तो उसे टाल कौन सकता था-
तड़ाक
वैसे तो एक कब्र खुदी हुई है। पर वह डेविड के नाम की कब्र है!...
... खोदो, दोनों के लिए कब्र खोदो!
ले फावड़ा!
तनी बन्दूक के सामने बहस करने का तो सवाल ही नहीं था-
?
और लगभग पन्द्रह मिनट बाद-
दोनों के धड़ मिट्टी में दबे हुए थे-
तु... तुमने हमको गर्दन तक क्यों दबाया है? क्या... क्या करना चाहते हो तुम?

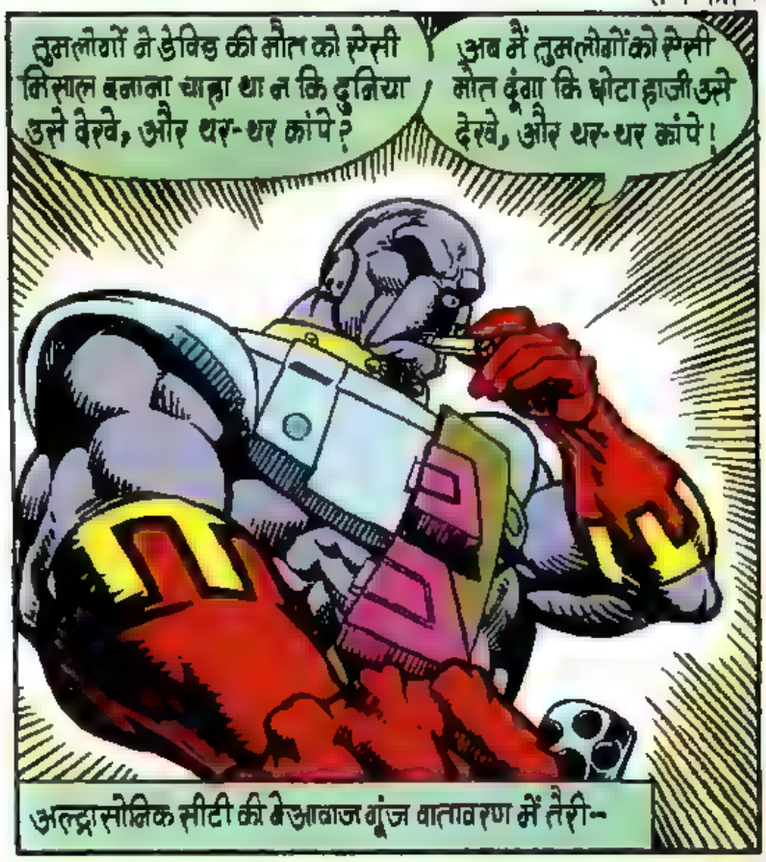
तुमलोगों ने डेविड की मौत को ऐसी मिसाल बनाना चाहा था न कि दुनिया उसे देखे, और थर-थर कांपे?
अब मैं तुमलोगों को ऐसी मौत दूंगा कि छोटा हाजी उसे देखे, और थर-थर कांपे!
अल्ट्रासोनिक सीटी की बेआवाज गूंज वातावरण में तैरी–

और क्रिश्चियन के पास घूम रहे आवारा कुत्ते लपक आए–
आओ दोस्तो! देखो, मैंने तुम्हारे लिए 'डिनर' पेश कर रखा है। जाओ...खा लो!
नहीं! हमें गोली मार दे! मार दे कमीने! मार!

डीगा जानता था कि दर्जनों हत्याओं के इन हत्यारों की सजा एक गोली की झनझनाहट भरी मौत नहीं, बल्कि बोटी-बोटी नुचकर मरने वाली वीभत्स मौत है–
भूखे कुत्ते दोनों लाशों पर टूट पड़े। दोनों की चीखें मुर्दों को भी दहलाने लगीं–
हिंसा की क्रूरता की भयानक तरंगों से वातावरण भरने लगा–

और हर चीख के साथ-साथ उस खुदी कब्र से बाहर झांक रहे हाथों के साथ-साथ एक शरीर भी बाहर आने लगा–
आऽऽऽ हा! इतनी शताब्दियों तक जमीन में दबे रहने से मेरा शरीर कमजोर हो गया था। पर इन मानवों ने उसे खोदकर बाहर तो निकाल दिया...

कुत्ते दोनों गुंडों का चेहरा झंझोड़कर रुक गए-
गुर्र्र
लेकिन इतनी देर में क्रूरता और हिंसा की इतनी तरंगें वातावरण में फैल चुकी थीं-
जो कब्र से धीरे- धीरे बाहर आ रही उस आकृति को पूरा बाहर निकलने के लिए काफी थीं-
आहा! कितना अच्छा लग रहा है!...
... सदियों तक जमीन में दबे-दबे रहने से बदन अकड़ गया था। कमजोर भी हो गया था। पर तूने मुझे शक्ति दे दी। हिंसा, क्रूरता और कोई भी पापाचार मुझे शक्ति देता है!
कौन हो तुम? सदियों तक जमीन में दबे रहने से क्या मतलब है तुम्हारा?

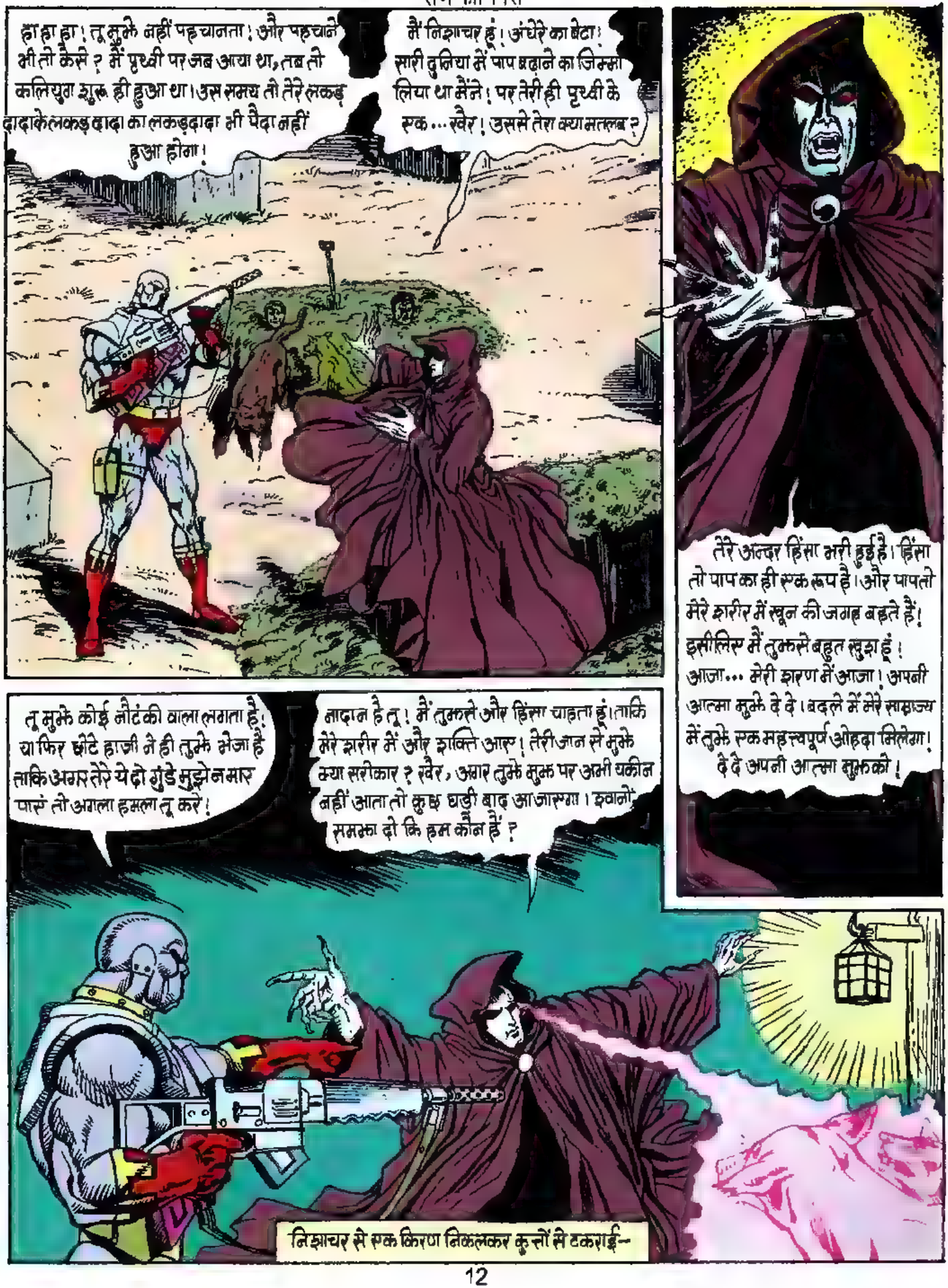
हा हा हा ! तू मुझे नहीं पहचानता ; और पहचाने भी तो कैसे ? मैं पृथ्वी पर जब आया था, तब तो कलियुग शुरू ही हुआ था। उस समय तो तेरे लकड़ दादाके लकड़दादा का लकड़दादा भी पैदा नहीं हुआ होगा !
मैं निशाचर हूं ! अंधेरे का बेटा ! सारी दुनिया में पाप बढ़ाने का जिम्मा लिया था मैंने ! पर तेरी ही पृथ्वी के एक ... खैर ! उससे तेरा क्या मतलब ?
तेरे अन्दर हिंसा भरी हुई है। हिंसा तो पाप का ही एक रूप है। और पापतो मेरे शरीर में खून की जगह बहते हैं ! इसीलिए मैं तुझसे बहुत खुश हूं ! आजा... मेरी शरण में आजा ! अपनी आत्मा मुझे दे दे। बदले में मेरे साम्राज्य में तुझे एक महत्त्वपूर्ण ओहदा मिलेगा ! दे दे अपनी आत्मा मुझको !
तू मुझे कोई नौटंकी वाला लगता है ! या फिर छोटे हाजी ने ही तुझे भेजा है ताकि अगर तेरे ये दो गुंडे मुझे न मार पाएं तो अगला हमला तू करे !
नादान है तू ! मैं तुझसे और हिंसा चाहता हूं। ताकि मेरे शरीर में और शक्ति आए ! तेरी जान से मुझे क्या सरोकार ? खैर, अगर तुझे मुझ पर अभी यकीन नहीं आता तो कुछ घड़ी बाद आजाएगा। हवालों समझा दो कि हम कौन हैं ?
निशाचर से एक किरण निकलकर कुत्तों से टकराई–

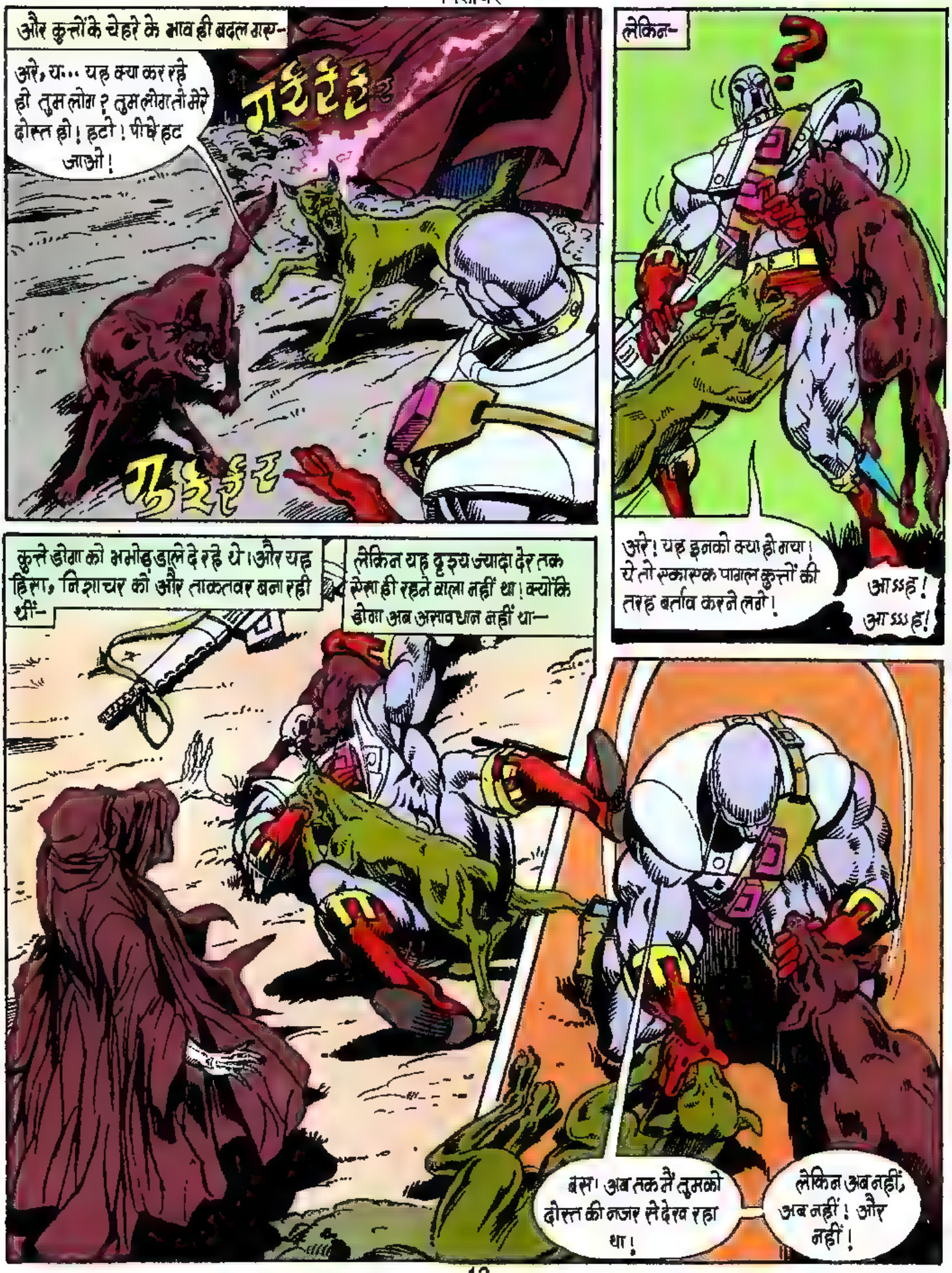

और कुत्तों के चेहरे के भाव ही बदल गए-
अरे, य... यह क्या कर रहे हो तुम लोग? तुम लोग तो मेरे दोस्त हो! हटो! पीछे हट जाओ!
गर्र्रर्र
गुर्र्र्र
लेकिन-
अरे! यह इनको क्या हो गया! ये तो एकाएक पागल कुत्तों की तरह बर्ताव करने लगे!
आऽऽह! आऽऽह!
कुत्ते डोगा को भभोड़ डाले दे रहे थे। और यह हिंसा, निशाचर को और ताकतवर बना रही थी-
लेकिन यह दृश्य ज्यादा देर तक ऐसा ही रहने वाला नहीं था! क्योंकि डोगा अब असावधान नहीं था-
बस! अब तक मैं तुमको दोस्त की नजर से देख रहा था!
लेकिन अब नहीं, अब नहीं! और नहीं!

अब तुम्हारा वही हाल होगा, जो डोगा पर हमला करने वाले हर प्राणी का होता है!
शाबाश! शाबाश! तुझसे मुझे ऐसी ही हिंसा की उम्मीद थी! तूने मुझे काफी शक्ति दे दी है। अब मैं तुझे घुटने टिकवाने को तैयार हूं। बता तू अपनी आत्मा अपनी मर्जी से मुझे देता है या मैं उस पर कब्जा कर लूं! दोनों ही तरह से तू मेरे बहुत काम आएगा!
बहुत सुन ली तेरी बकवास, घोटे हाजी के कुत्ते!
तू मेरी आत्मा पर क्या कब्जा करेगा, निशाचर, मैं ही तेरी आत्मा को बाहर निकाल दूंगा!
डोगा की उंगली ट्रिगर पर दबती चली गई, और गोलियां गन की मैगजीन से निकलकर निशाचर के शरीर में समा गई–
हा हा हा! एक और... हिंसक कृत्य! तू तो हिंसा खिला-खिलाकर मेरे पेट को फाड़ देगा!...
पर अब मुझे तो पता चल गया है कि तू अपनी आत्मा मुझे नहीं देगा!

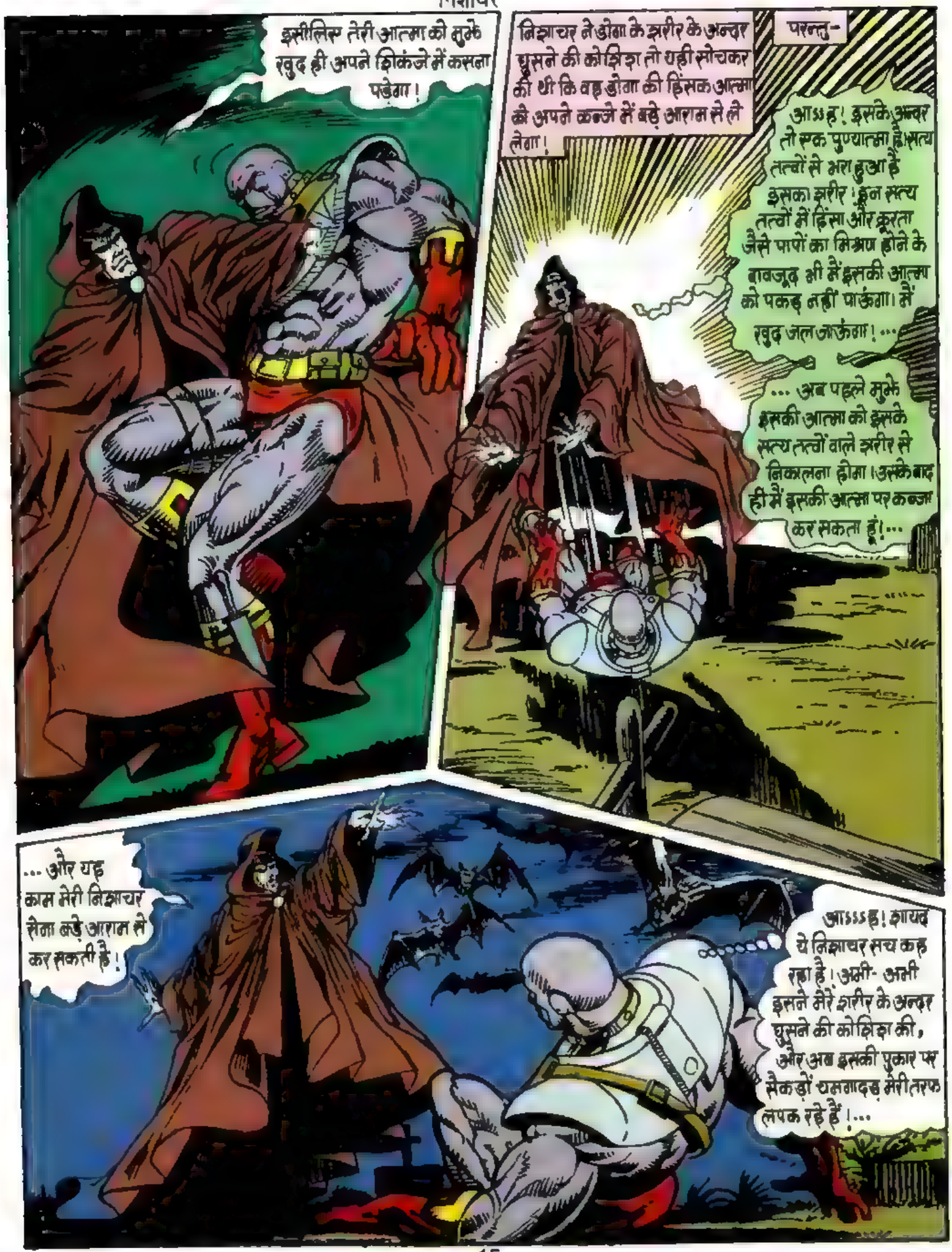

इसीलिए तेरी आत्मा को मुझे खुद ही अपने शिकंजे में कसना पड़ेगा !
निशाचर ने डोगा के शरीर के अन्दर घुसने की कोशिश तो यही सोचकर की थी कि वह डोगा की हिंसक आत्मा को अपने कब्जे में बड़े आराम से ले लेगा !
परन्तु-
आऽऽह ! इसके अन्दर तो एक पुण्यात्मा है सत्य तत्वों से भरा हुआ है इसका शरीर ! इन सत्य तत्वों में हिंसा और क्रूरता जैसे पापों का मिश्रण होने के बावजूद भी मैं इसकी आत्मा को पकड़ नहीं पाऊंगा। मैं खुद जल जाऊंगा ! ...
... अब पहले मुझे इसकी आत्मा को इसके सत्य तत्वों वाले शरीर से निकालना होगा। उसके बाद ही मैं इसकी आत्मा पर कब्जा कर सकता हूं ! ...
... और यह काम मेरी निशाचर सेना बड़े आराम से कर सकती है !
आऽऽऽह ! शायद ये निशाचर सच कह रहा है। अभी- अभी इसने मेरे शरीर के अन्दर घुसने की कोशिश की, और अब इसकी पुकार पर सैकड़ों चमगादड़ मेरी तरफ लपक रहे हैं ! ...

... और ये सैकड़ों खूनी चमगादड़ दस सैकंड में मेरी पोशाक और मेरी खाल उधेड़ सकते हैं। मैं चाकू से कुछ ही चमगादड़ों को घायल कर सकता हूं। लेकिन ये तो सैकड़ों की तादाद में हैं!
ये रोशनी से भागते हैं। पर यहां पर... वह लैम्प। यहां पर बिजली नहीं है। वह लैम्प जरूर मिट्टी के तेल से जल रहा है। पेट्रोमैक्स की तरह। यह मुझे बचा सकता है!
ताड़
डोगा की एक किक ने लैम्प को चूर-चूर कर दिया-
मिट्टी के तेल से लकड़ी का खंभा नहा गया-
और डोगा को चमगादड़ों से बचने का एक हथियार मिल गया—
वाह! तू सिर्फ हिंसक ही नहीं, समझदार भी है। पर अब न तो हिंसा तेरे काम आएगी, और न ही समझदारी! क्योंकि तेरी और चमगादड़ों की हिंसा ने मुझे इतनी और शक्ति दे दी है।...

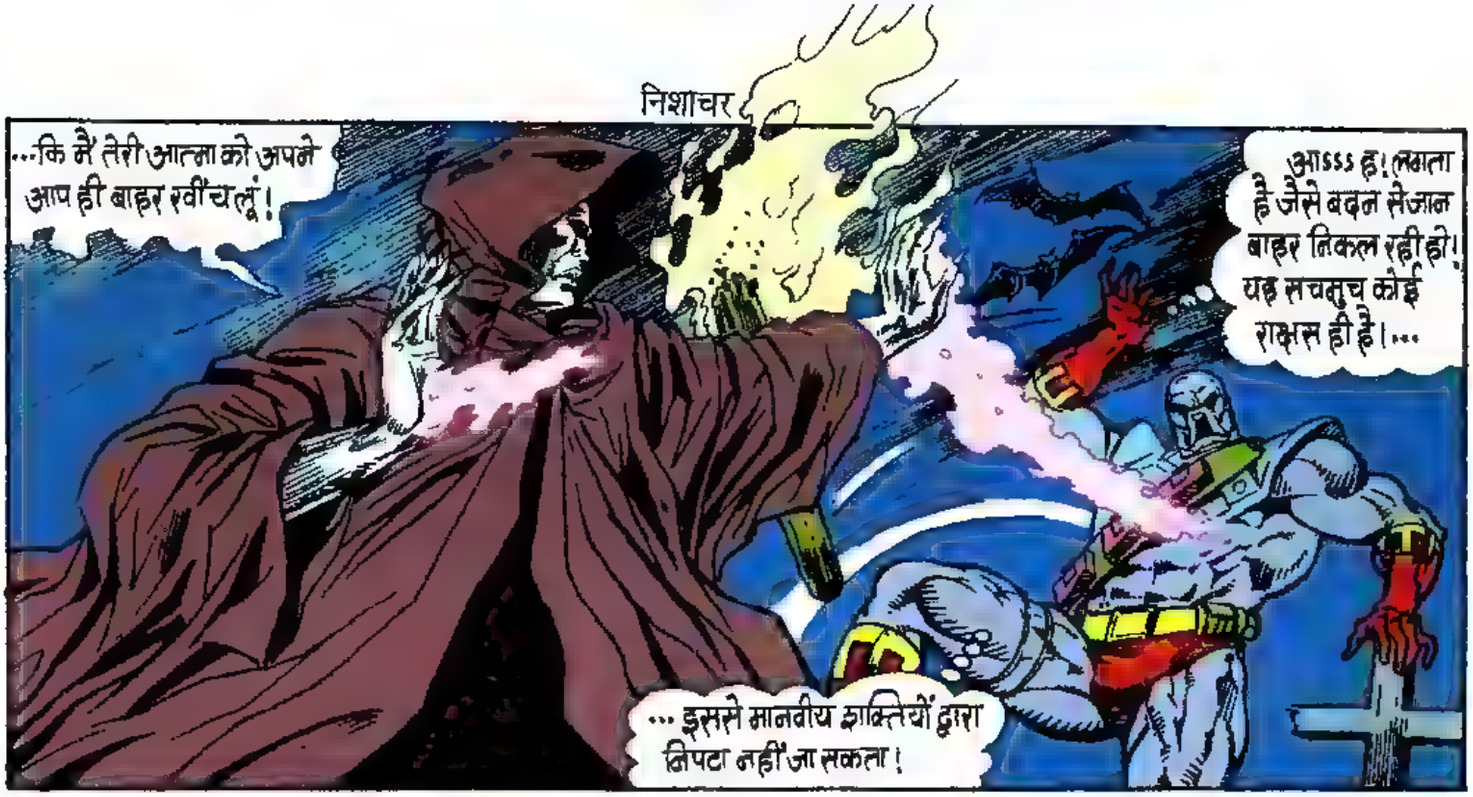
...कि मैं तेरी आत्मा को अपने आप ही बाहर खींच लूं!
आऽऽऽ ह! लगता है जैसे बदन से जान बाहर निकल रही हो! यह सचमुच कोई राक्षस ही है!...
... इससे मानवीय शक्तियों द्वारा निपटा नहीं जा सकता!

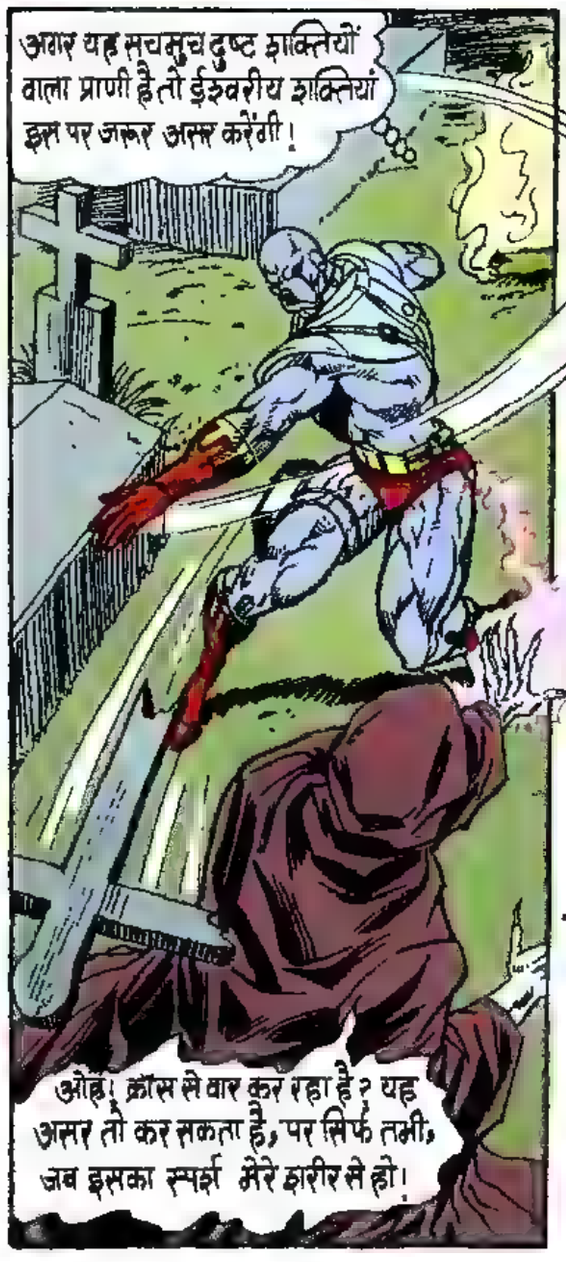
अगर यह सचमुच दुष्ट शक्तियों वाला प्राणी है तो ईश्वरीय शक्तियां इस पर जरूर असर करेंगी!
ओह! क्रॉस से वार कर रहा है? यह असर तो कर सकता है, पर सिर्फ तभी, जब इसका स्पर्श मेरे शरीर से हो!

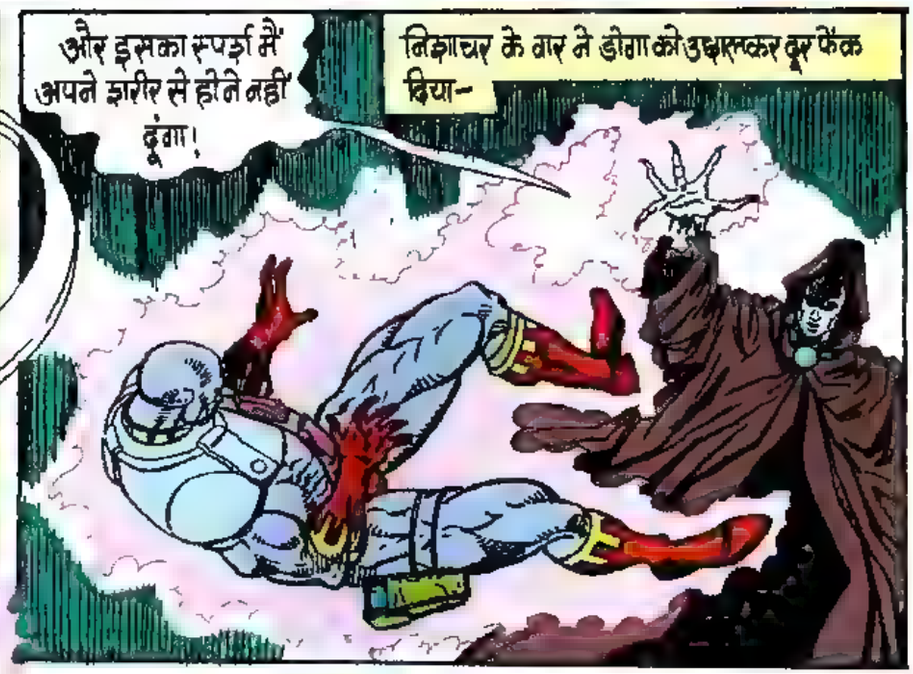
और इसका स्पर्श मैं अपने शरीर से होने नहीं दूंगा!
निशाचर के वार ने डोगा को उछालकर दूर फेंक दिया--

और यह वार डोगा के लिए वरदान साबित हो गया--

आऽऽऽ ह! अब जो हाथ में आया, उसी से मारेगा? किताब से मारेगा!
मार ले! यह तो मेरा शरीर छूते ही भस्म हो जाएगी.

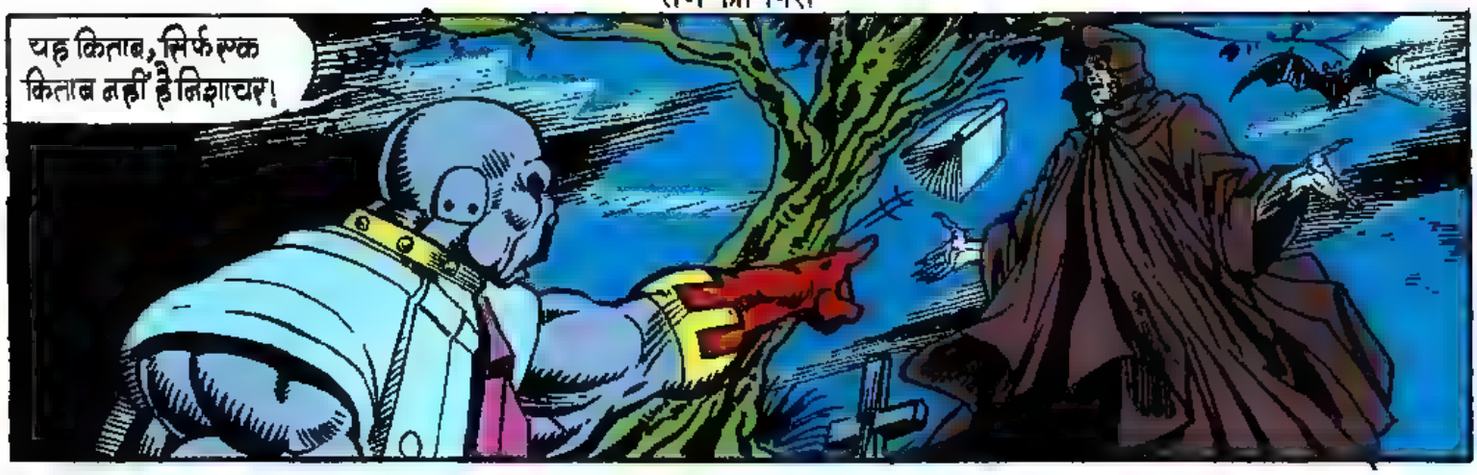
यह किताब, सिर्फ एक किताब नहीं है निशाचर!

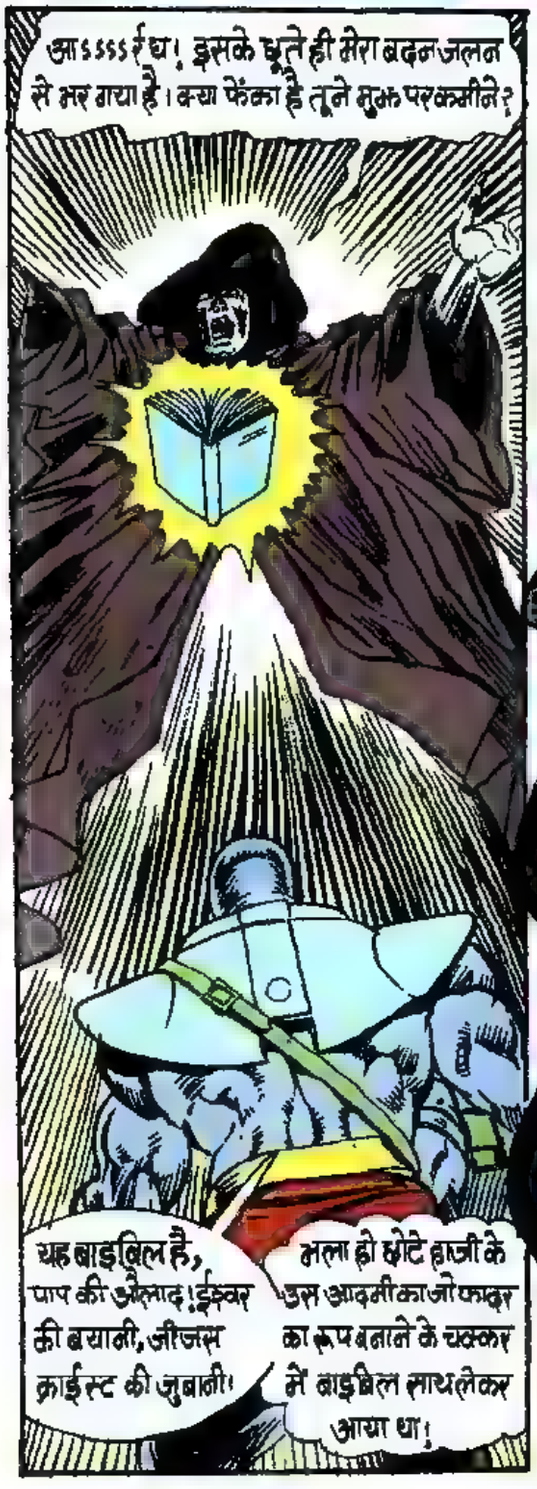
आऽऽऽऽर्घ! इसके छूते ही मेरा बदन जलन से भर गया है। क्या फेंका है तूने मुझ पर कमीने?
यह बाइबिल है, पाप की औलाद! ईश्वर की बयानी, जीजस क्राईस्ट की जुबानी!
भला हो छोटे हाजी के उस आदमी का जो फादर का रूप बनाने के चक्कर में बाइबिल साथ लेकर आया था!

आऽऽह! मैं सदियों की नींद से उठा हूं। अभी मेरे शरीर में इतनी शक्ति नहीं है कि मैं ईश्वरीय चिन्हों में भरी ऊर्जा का मुकाबला कर सकूं। इस बाइबिल को छूते ही इसने मेरी काफी शक्ति को नष्ट कर दिया है! अभी मुझे जाना होगा!

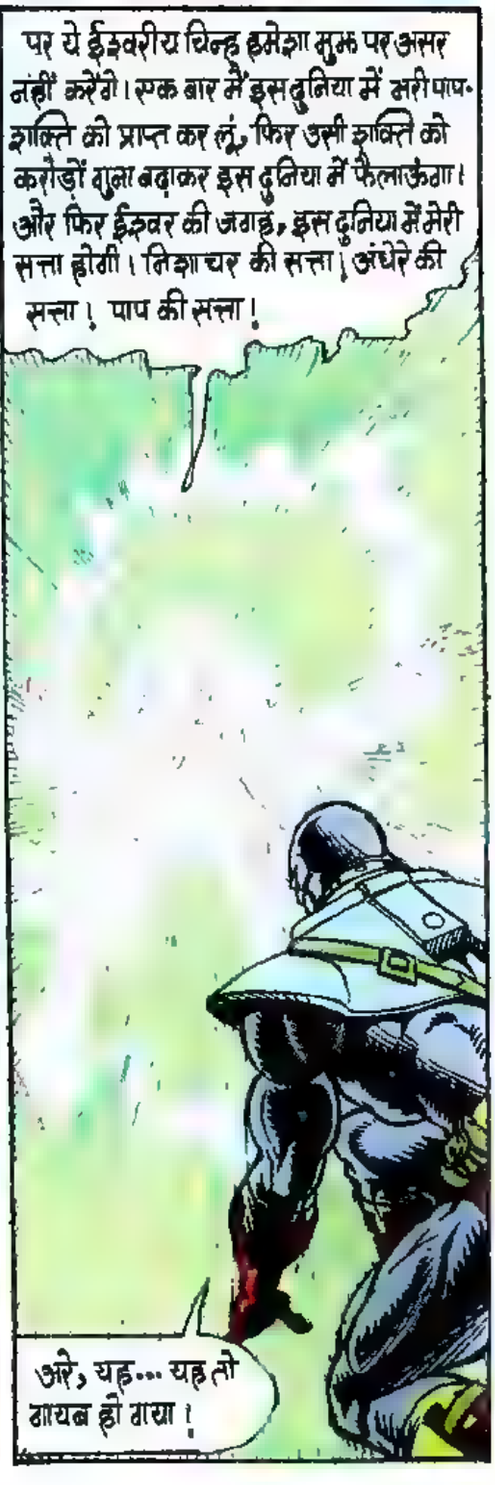
पर ये ईश्वरीय चिन्ह हमेशा मुझ पर असर नहीं करेंगे। एक बार मैं इस दुनिया में भरी पाप-शक्ति को प्राप्त कर लूं, फिर उसी शक्ति को करोड़ों गुना बढ़ाकर इस दुनिया में फैलाऊंगा। और फिर ईश्वर की जगह, इस दुनिया में मेरी सत्ता होगी। निशाचर की सत्ता! अंधेरे की सत्ता! पाप की सत्ता!
अरे, यह... यह तो गायब हो गया!

... मैं इन सब बातों में विश्वास करता तो नहीं, पर लगता है कि अब विश्वास करना पड़ेगा! जिस पर गोलियां असर न करें, चमगादड़ जिसकी बात मानें, और जो मेरी आंखों के सामने से गायब हो सके, वह जरूर कोई अमानवीय शक्तियों वाला प्राणी ही हो सकता है!...
... अब असली सवाल यह है कि निशाचर अब क्या करेगा? और अगर कुछ करेगा तो उसे रोका कैसे जाएगा?
डोगा को इस सवाल का जवाब बहुत जल्दी ढूंढना था, क्योंकि निशाचर अपना अगला कदम जल्दी ही उठाने जा रहा था –
इतनी सदियों तक निष्क्रिय रहने के कारण मैं इतना कमजोर हो गया हूं कि सिर्फ एक किताब मुझे भागने पर मजबूर कर दे! छी!...
... मुझे अपनी शक्तियां पूरी तरह से प्राप्त करने में समय लगेगा, क्योंकि मुझे शक्तियां तभी मिलेंगी, जब पाप बढ़ेगा!...
... और पाप बढ़ाने के लिए मुझे अपने दुश्मनों को आजाद करना होगा। और अगर मैं उनको आजाद करवाऊंगा तो वे अपने आप मेरे गुलाम बन जाएंगे। मेरी शक्ति अपने आप कई गुना बढ़ जाएगी!...
...परन्तु आपके कारण मैं खुद उनको आजाद नहीं करवा सकता। पर किसी न किसी को भेज तो सकता हूं!

चमगादड़ के शरीर में निशाचर की ऊर्जा भरने लगी-
और वह चमगादड़ एक खास आकार लेने लगा-
हा हा हा ! निशाचर ने तुझमें जान डालकर तुझे एक नया रूप दिया है। अब तू एक मामूली चमगादड़ से अति शक्तिशाली 'नमचर' बन गया है। अब जा! जाकर उस मोती को मेरे पास ले आ जिसे माया योगी ने यहां से सत्तर योजन दूर किसी तंत्र कैद में रखा है। मैं उसे छू नहीं सकता, पर तू उसे ला सकता है... अब जा, मेरी शक्तियां तुझे रास्ता दिखाती जाएंगी ! जा !

'तमचर' बना चमगादड़, तुरन्त ही एक दिशा में रवाना हो गया-
और यह दिशा-
राजनगर की तरफ जाती थी-
जल्दी आ। यह माया-योगी आश्रम जरूर है। पर यहां पर भी सिक्यो-रिटी काफी सख्त है।
ऐसा था तो बैंक में चोरी करनी चाहिए थी। या किसी ज्वैलर्स के यहां सेंध लगाते। यहां भी सिक्योरिटी है तो यहां आने का फायदा क्या हुआ।
अब उतनी सख्त सिक्योरिटी भी नहीं है। यहां पर जितनी प्राचीन दुर्लभ मूर्तियां रखी हैं उसके हिसाब से तो उतनी ही सिक्योरिटी है, जितनी हाउसिंग सोसायटियों में होती है।
ए! कौन हो तुम दोनों? दीवार पर क्या कर रहे हो?
अंधेरे में उस साधु को पता ही नहीं चला कि किस चीज ने उसके जबड़े को लुगदी में बदल दिया-

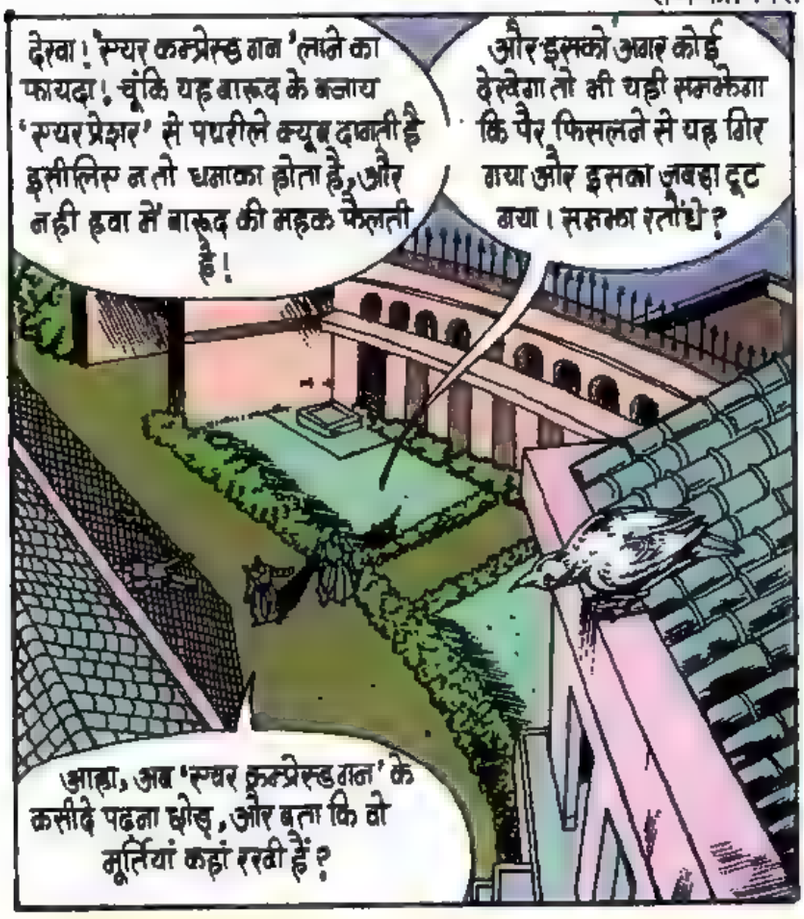

देखा! 'एयर कम्प्रेस्ड गन' लाने का फायदा! चूंकि यह बारूद के बजाय 'एयर प्रेशर' से पथरीले क्यूब दागती है इसीलिए न तो धमाका होता है, और न ही हवा में बारूद की महक फैलती है!
और इसको अगर कोई देखेगा तो भी यही समझेगा कि पैर फिसलने से यह गिर गया और इसका जबड़ा टूट गया। समझा रतौंधे?
आहा, अब 'एयर कम्प्रेस्ड गन' के कसीदे पढ़ना छोड़, और बता कि वो मूर्तियां कहां रखी हैं?
इधर हैं! रास्ता ढूंढना मेरा काम था, पर साधना स्थल का ताला खोलना तेरा काम है। टीमवर्क... क्या समझा?
समझा, बांके, समझा! ताला तो समझ कि उंगली लगाई और खुला!
रतौंधा बड़बोला नहीं बन रहा था। ताला सचमुच एक खटके में ही खुल गया था—
अन्दर वही खजाना था, जिसकी तलाश में बांके और रतौंधे मायायोगी आश्रम में आए थे—
वाह! हजारों साल पुरानी दुर्लभ मूर्तियां खुले में पड़ी हैं! जय भगवान! जय भगवान!
अरे, जय बाद में बोल लेना! पहले उठाकर झोले में तो भर ले!
लेकिन इससे पहले कि वे मूर्तियों की तरफ बढ़ते—
अबे बांके, उधर देख! वह काला मोती कैसा है, जो उस यंत्र के अन्दर रखा है? सुना तो है कि काला मोती बहुत दुर्लभ और कीमती होता है।

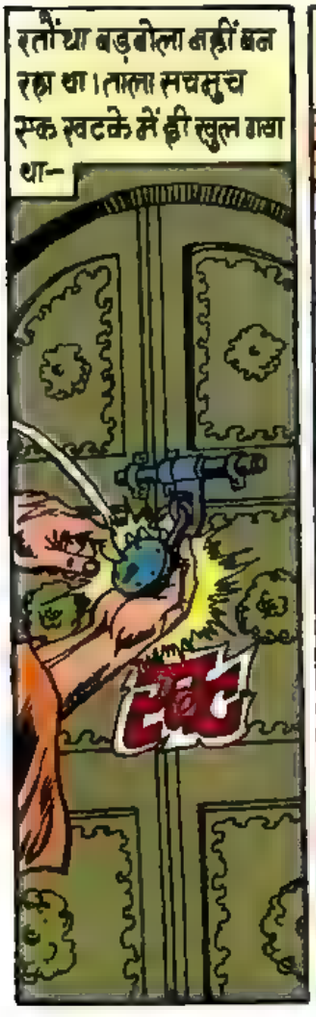

अरे, कुछ दाम तो होगा ही होगा न इसका! और एक मोती और उठाने में क्या जाता है! उठाले!
रतौंधे ने मोती उठाने को हाथ बढ़ाया–
और वह चीख उठा–
आऽऽऽह! बांके! मेरा हाथ किसी ने पकड़ लिया है! करेंट सा लग रहा है मुझको! बचा रे मुझको! बचा रे!
बांके तुमको नहीं बचा पाएगा। जो भी दुष्ट स्वभाव वाला व्यक्ति इसे छूएगा, उसका यही हाल होगा!
कौन?
कौन है तू? ... बचा मेरे दोस्त को! वरना छाती के पिंजर में छिपा तेरा दिल बाहर आकर धड़कने लगेगा!
मैं कौन हूं... पूछना तो मुझे चाहिए कि तुम कौन हो? पर पहले मैं जवाब देता हूं। मैं दयायोगी हूं। इस आश्रम के संस्थापक मायायोगी की सौवीं पीढ़ी का वंशज! और तेरा दोस्त उस शिकंजे से कभी छूट नहीं पाएगा! क्योंकि उसने उस चीज को छू लिया है, जिस पर किसी भी बुराई को पकड़ सकने का कवच चढ़ा हुआ है! तुम्हारा दोस्त अब तभी छूटेगा जब पुलिस आएगी!

पुलिस? पुलिस बांके और रतौंधे को पकड़ने नहीं, बल्कि तुम्हारी लाश उठाने आएगी, योगी!
'कम्प्रेस्ड स्टारगन' का वार निश्चित तौर से दयायोगी की छाती को फाड़कर दिल को बाहर निकाल लेता-
अगर वह पत्थर, छाती तक पहुंच पाता तो-
?
ध्रुव... ...आहsss
तेरे पास हमको भूखा मारने के अलावा और कोई काम नहीं है क्या? जहां देखो वहीं पहुंच जाता है... मेरे रास्ते से हटजा वरना तुझे अपनी जान देनी पड़ेगी!
दुष्ट आदमी पैसे की कमी के कारण नहीं, बल्कि अपने लालच के कारण भूखे मरते हैं! और रही जान की बात तो उसे लेने की कोशिश करके देख ले!

मैं जानता हूं कि तू गोलियों की बौछार से से भी बच लेता है, फिर ये पत्थर क्या चीज है! नहीं, मैं तुझ पर पत्थरों से वार नहीं करूंगा! मैं तुझ पर कम्प्रेस्ड एयर का वार करूंगा! वायु के तेज दबाव वाले जेट का!
अगर ध्रुव उस वायु को देख पाता, तो शायद बचने की कोशिश भी करता—
लेकिन हवा को कौन देख पाया है—
आऽऽऽह! हवा का धक्का तो काफी तेज है! मैं इसके वार को देख तो नहीं सकता, पर वार की दिशा का अन्दाजा तो लगा ही सकता हूं!
धड़ाम
लगातार निकल रहे वायु-जेट से ध्रुव तो बचने लगा—
लेकिन वायु जेट दूसरी चीजों को हवा में इधर-उधर उछालने लगा—
ध्रुव के चकराते सिर के कारण उसकी गति कुछ पलों के लिए थमी—
और इस बार वायु जेट का वार वह नहीं बचा पाया—

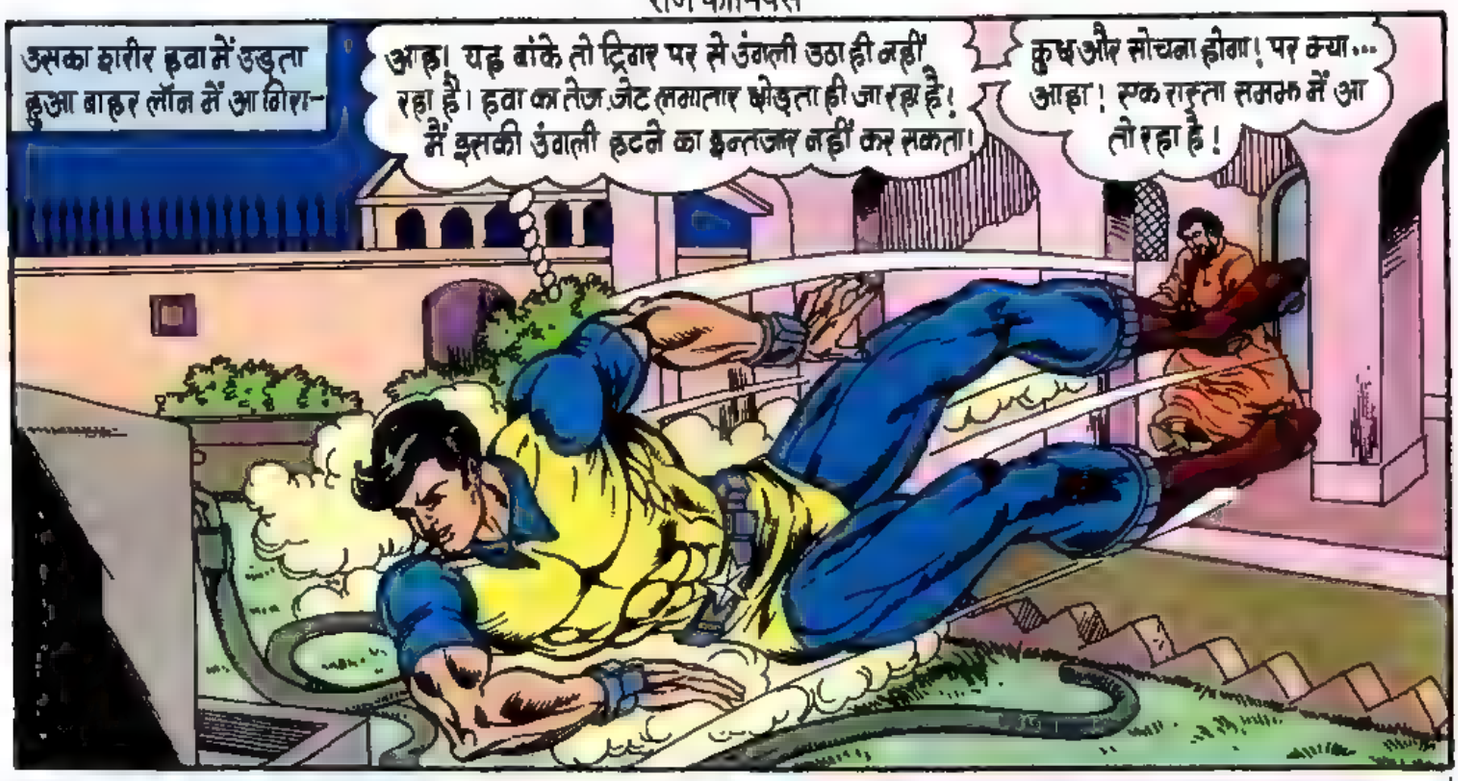
उसका शरीर हवा में उड़ता हुआ बाहर लॉन में आ गिरा–
आह! यह बांके तो ट्रिगर पर से उंगली उठा ही नहीं रहा है। हवा का तेज जेट लगातार छोड़ता ही जा रहा है! मैं इसकी उंगली हटने का इन्तजार नहीं कर सकता।
कुछ और सोचना होगा! पर क्या... आहा! एक रास्ता समझ में आ तो रहा है!

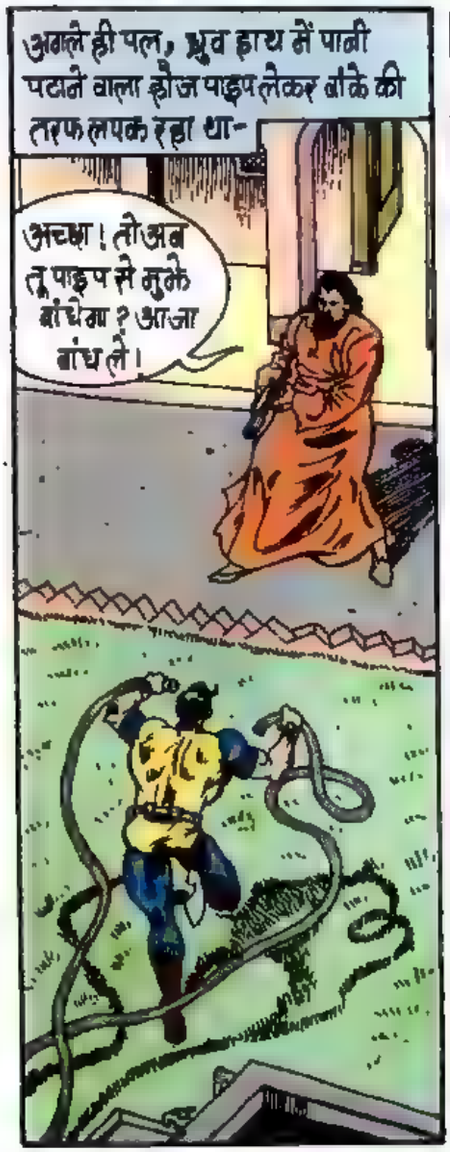
अगले ही पल, ध्रुव हाथ में पानी पटाने वाला होज पाइप लेकर बांके की तरफ लपक रहा था–
अच्छा! तो अब तू पाइप से मुझे बांधेगा? आजा बांध ले।

मैं तुझे पहले ही उड़ा... अरे?
ध्रुव, वायु-जेट की दिशा पहले से ही भांपकर झुक चुका था, और पाइप का एक छोर, ठान की नली में घुस चुका था–

नतीजा लम्बा तुरन्त ही सामने आ गया–
पाइप के दूसरे छोर से निकले वायु जेट ने बांके को हवा में ही उड़ा दिया–

और इससे पहले कि वह संभल पाता, ध्रुव ने उसके होश उड़ा दिए—
और फिर वह साधना स्थल पर जा पहुंचा-
ये रही आपकी मूर्तियां स्वामी जी! पर इस दूसरे गुंडे का हाथ कैसे फंस गया है?
मुझे तो कहीं कोई शिकंजा नज़र नहीं आ रहा!
शिकंजा है ध्रुव! अच्छाई का बुराई पर कसा शिकंजा!
यह फंसा कैसे यह तो बाद में बताऊंगा! पहले इसको छुड़ा तो लो। तुम सिर्फ इसके कंधे पर हाथ रख दो, यह छूट जाएगा!
आश्चर्यचकित ध्रुव द्वारा कंधे पर हाथ रखते ही रतौंधा छूट तो गया—
तड़
पर छूटते ही कोने में फंसे चूहे की तरह हमला कर बैठा-
धन्यवाद! धन्यवाद! मुझे तुमको घूंसा मारने का बड़ा मन कर रहा था!... अगर तुम मुझ पर हमला नहीं करते तो यह आस मन में ही रह जाती! थैंक्यू भाई थैंक्यू!
ढिशूम
बाकी की तरह रतौंधा भी अपने होश कायम नहीं रख पाया—

इन दोनों का प्लान तो असफल हो गया, स्वामी जी! भला हो उस चिड़िया का जिसने आपके आश्रम के एक साधु पर हमला होते देखकर, मुझ तक इस घटना की सूचना पहुंचा दी थी!
आपकी उलझन तो दूर हो गई, अब मेरी उलझन भी सुलझा दीजिए! इस गुंडे का हाथ कैसे फंस गया था?
और... कंधे पर मेरे हाथ रखते ही वह छूट कैसे गया?
क्योंकि तुम्हारा स्पर्श होते ही इस गुंडे के शरीर में भी तुम्हारा सत्य प्रवाहित होने लगा था, ध्रुव! और इस सत्य को पहचान कर इसके हाथ पर कसा शिकंजा खुल गया!
यह गुंडा इस काले मोती पर लगी 'सत्य कवच' के शिकंजे में फंस गया था ध्रुव! इस मोती पर 'सत्य कवच' मेरे पूर्वज मायायोगी ने चढ़ाया था! और इस मोती के कारण ही इस आश्रम का निर्माण किया था! जो समय बीतने के साथ-साथ इतना विशाल आश्रम बन गया है!

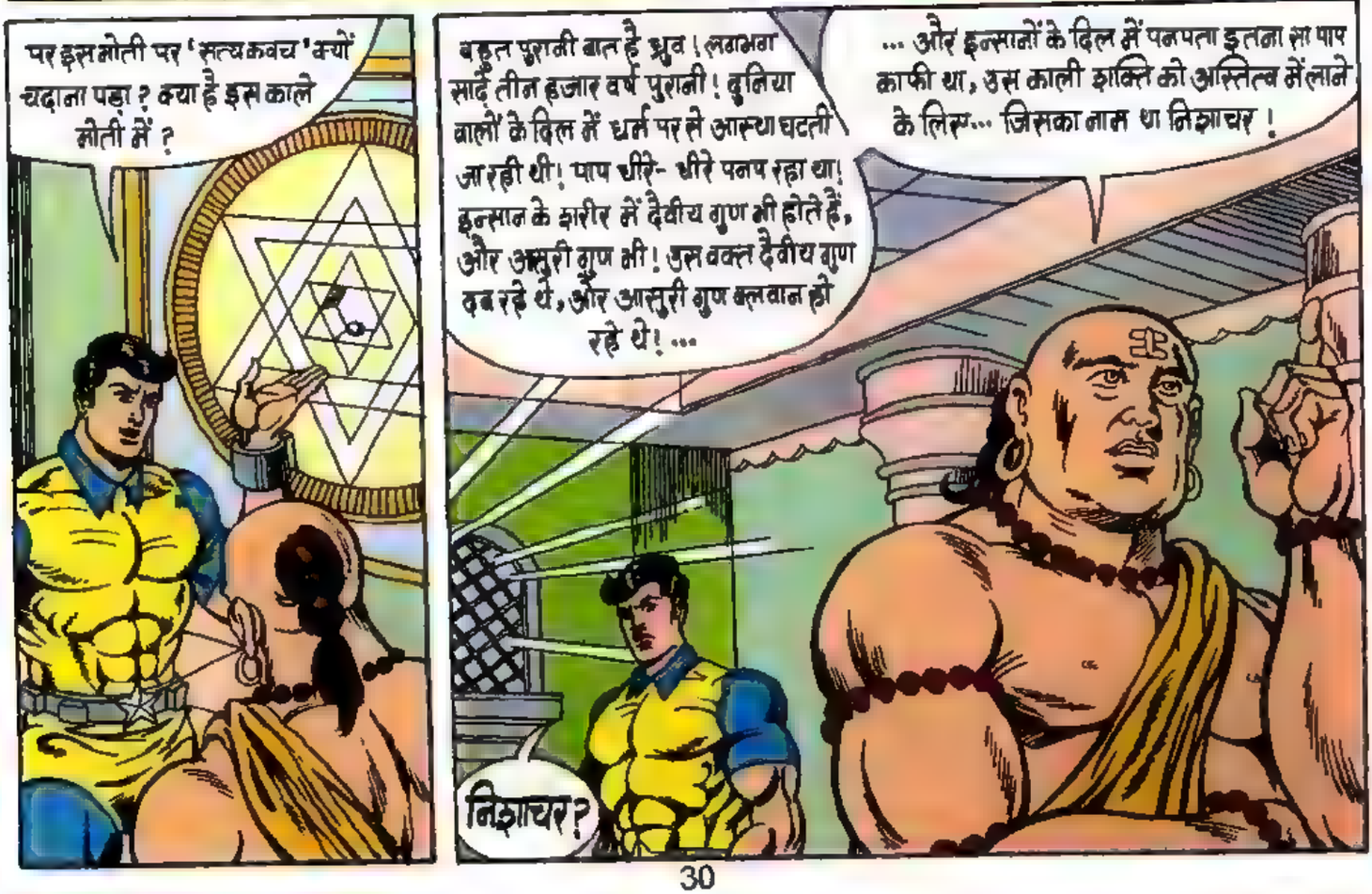
पर इस मोती पर 'सत्य कवच' क्यों चढ़ाना पड़ा? क्या है इस काले मोती में?
बहुत पुरानी बात है ध्रुव! लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष पुरानी! दुनिया वालों के दिल में धर्म पर से आस्था घटती जा रही थी! पाप धीरे-धीरे पनप रहा था! इन्सान के शरीर में दैवीय गुण भी होते हैं, और आसुरी गुण भी! उस वक्त दैवीय गुण दब रहे थे, और आसुरी गुण बलवान हो रहे थे!...
... और इन्सानों के दिल में पनपता इतना सा पाप काफी था, उस काली शक्ति को अस्तित्व में लाने के लिए... जिसका नाम था निशाचर!
निशाचर?

हाँ! निशाचर! जिसमें पापों को सोखने की, और फिर उनको कई गुना बढ़ाकर संसार में फिर से फैलाने की शक्ति थी! पूरी दुनिया में पाप बढ़ने लगा! पूरे संसार में लड़ाई और हमलों की वारदातें बढ़नी शुरू हो गई! उस वक्त इस संसार में भगवान का नहीं, बल्कि शैतान निशाचर का साम्राज्य फैला हुआ था। सिर्फ कुछ ही पुण्यात्माएं इस पाप के फैलाव से बची हुई थीं!

महान सिद्ध मायायोगी भी उनमें से एक थे! उन्होंने निशाचर के साम्राज्य को खत्म करने का बीड़ा उठाया!

उन्होंने संसार भर के उन पुण्यात्माओं से संपर्क किया! सभी पुण्यात्माओं की सम्मिलित शक्ति से निशाचर की बुराइयों पर वार होने लगे। निशाचर की शक्ति वैसे ही साफ होने लगी, जैसे साबुन गन्दगी को साफ कर देता है! निशाचर के पाप बढ़ने से पहले ही नष्ट होने लगे! तब निशाचर ने नई चाल चली!

उसने अनंत पापों के जनकों को याद किया!...

...उन दो महाराक्षसों को जो स्वयं पाप को उत्पन्न करते थे! शैतान नारकी और पातकी!

नारकी और पातकी वे पूरे संसार में पापों की बाढ़ लाकर कई पुण्यात्माओं तक को शैतान निशाचर का धर्म मानने पर विवश कर दिया। तब मायायोगी ने उन दोनों शैतानों को अत्यंकर मुश्किलों के बाद एक सीप और उसमें बन्द काले मोती में बन्द कर दिया!

मोती को उन्होंने यहां पर एक यंत्र में रख दिया, और सीप को यहां से दूर एक अन्य स्थान पर गाड़ दिया! वहां, जहां पर अब सुन्दरबई है। जब तक वह सीप और काला मोती आपस में नहीं मिलते तब तक नारकी और पातकी कभी आजाद नहीं हो सकते!...

...और निशाचर का क्या हुआ? कैसे निपटे मायायोगी उनसे?

यह एक बड़ी समस्या थी ध्रुव! नारकी और पातकी पर चले तंत्र-मंत्र निशाचर पर कोई असर नहीं कर रहे थे!

उन्होंने देवों से मदद मांगी ! परन्तु पृथ्वी पर फैली दुष्टता की चादर किसी भी मदद को पार आने नहीं दे रही थी। पवन भी विषैली हो चुकी थी। जल भी बंधक था, और अग्नि भी सिर्फ विनाश फैला रही थी। यज्ञ साकाग्नी तक को अग्नि देव स्वीकार नहीं कर रहे थे। बस एक ही चीज बची थी जो मयायोगी की सहायता कर सकती थी। और वह थी...
दयायोगी की जुबान बीच में ही थम गई-
क्योंकि जो जीव साधना स्थल में आ घुसा था, उसे देखकर किसी की भी जुबान जड़ हो जाती-
कड़ड़ड़ड़ड़
हे भगवान ! यह क्या है ?
इसका भगवान से दूर-दूर का भी संबंध नहीं है ध्रुव ! इसके शरीर से घोर दुष्टता की तरंगें आ रही हैं ! और इतनी दुष्टता सिर्फ निशाचर में ही हो सकती है !
यह निशाचर ही है ध्रुव !...

... और यह इस मोती को उठाने के लिए बढ़ रहा है। पर... पर यह कैसे हो सकता है? निशाचर तो इस मोती के आस-पास भी नहीं फटक सकता है!...
... यानी... यानी यह निशाचर नहीं है! निशाचर द्वारा अपनी शक्तियां देकर भेजा गया कोई प्राणी है। इसको रोकना होगा!

दयायोगी ने साधना स्थल पर से हथेली पर कुछ चावल के दाने रखे, और उस पर फूंक मारकर—
फूऽऽऽ

तमचर पर फेंका! और तमचर सिर्फ हल्का सा तड़पा—

लेकिन तमचर के वार ने दयायोगी की बालों से रहित खोपड़ी खोल दी—
आऽऽह! ध्रुव, इसको मोती मत ले जाने देना, मत ले जाने देना! वरना... गजब हो... जाएगा!
ध्रुव पहले ही तमचर की तरफ लपक चुका था—

लेकिन तब तक स्वामी दयाचोमी के लिए देर हो चुकी थी! वे बेहोश होकर जमीन पर गिर चुके थे-
तड़.
लेकिन ध्रुव को यह अन्दाजा नहीं था कि वह किससे टकरा रहा है-
उसका सामना निशाचर की पाप शक्ति से भरे तमचर से था-
आऽऽह!
ध्रुव का दिमाग अंधेरे में डूबने लगा-
और तमचर ने लपककर काले मोती को खींच लिया-
सत्य कवच का एक भयंकर झटका तमचर को लगा तो जरूर, परन्तु उसके शरीर में पाप शक्ति के साथ-साथ थोड़ी सत्य शक्ति भी थी, जिसने उसको बचा लिया था-
मोती हाथ में आते ही तमचर, छत में बने उसी छेद की तरफ लपक पड़ा, जिसे बनाता हुआ वह अन्दर आया था-
लेकिन ध्रुव भी अब तक होश संभाल चुका था-

और उस छेद से पार होते-होते, तमचर के साथ, एक सवारी भी शामिल हो गई थी-
और
इससे पहले कि तमचर स्थिति को समझ पाता-
तड़ाक
ध्रुव उसके नुकीले पंजों से मोती को खींच चुका था-
तमचर चमगादड़ बौखला तो जरूर गया, पर उसने संभलने में ज्यादा देर नहीं लगाई-
ओह! यह मुझे नीचे गिराकर मारना चाहता है!
ताकि मेरे मरने के बाद यह काले मोती को आराम से हासिल कर सके!
इस बार वार सहने की बारी ध्रुव की थी-
उसका हाथ छूट गया। परन्तु ध्रुव ने ऐसी स्थिति का सामना कई बार किया था-
ध्रुव ने स्टार लाइन को ध्वज स्तंभ में फंसाया, और वह नीचे झूल गया-
अब मुझे सबसे पहले किसी कमरे में घुसना होगा। छोटे कमरे में जहां से निकलकर मैं मोती को सुरक्षित स्थान पर रख दूं! और छोटा कमरा होगा तो यह राक्षस अन्दर घुसकर भी अपने परों का इस्तेमाल नहीं कर पाएगा!
आऽऽऽह

वार खाकर हवा में उड़ता हुआ ध्रुव का शरीर वापस छत पर आ गिरा–
ओह! इसने मुझे कमरे के अन्दर तो क्या, जमीन तक को छूने नहीं दिया! इसका वार भी बड़ा जोरदार पड़ता है!...
... पता नहीं मैं ऐसे प्राणी से काले मोती को कितनी देर तक बचा... ओऽऽऽ
इसके उड़ने की शक्ति ही मुझे इस पर भरपूर वार करने नहीं दे रही है! और यह मुझ पर वार करके, मुझसे दूर चला जाता है!...
...या तो इसकी शक्ति का काट ढूंढना होगा, या... या...
... या मुझे भी उड़ना होगा!...
...और उड़ना ज्यादा आसान है!
ध्रुव की कलाई से स्टार लाइन निकलकर, छत के चारों कोनों पर लगे, ध्वज स्तंभों पर कसकर एक आयत बनाने लगी–

और इस बार, जब तमचर संभलकर ध्रुव की तरफ लपका, ध्रुव उसके लिए तैयार हो चुका था–
इस बार तमचर भाग नहीं सकता था। क्योंकि ध्रुव भी इस बार उसके साथ ही उड़ रहा था–
चाहे थोड़ी-थोड़ी देर तक ही सही–
अब तमचर मुसीबत में था–
और निशाचर तक इस मुसीबत के संकेत पहुंच रहे थे–
ओह! कौन है ये इन्सान, जो तमचर का भी मुकाबला कर रहा है! भयंकर सत्य शक्ति महसूस हो रही है मुझे इस इन्सान में! हर वार के स्पर्श के साथ तमचर में भरी मेरी पाप शक्ति धीरे-धीरे नष्ट हो रही है। ऐसे तो तमचर थोड़ी ही देर में मेरी पाप शक्ति से रहित होकर फिर से एक मामूली चमगादड़ बन जाएगा!
मुझे कुछ करना होगा! हां... अपनी चाल को बदलना होगा! मुझे! उस सत्यनिष्ठ इन्सान को आश्चर्य-चकित करना होगा। चौंका देना होगा.

ध्रुव सचमुच चौंकने वाला था। क्योंकि तमचर को शिकंजे में लेने के बाद वह समझ रहा था कि उसने मैदान मार लिया है—

बस, अब तू मेरे शिकंजे में आ गया है। इन्सान हो या शैतान, सांस के बगैर कोई नहीं जी सकता! और मैं तुझे तभी छोड़ूंगा, जब तेरा दम घुट जाएगा!

ध्रुव यह नहीं जानता था कि निशाचर जैसे कुछ प्राणी बगैर सांस के भी जी सकते हैं। पर फिलहाल तो उसके शिकंजे में सांस लेने वाला प्राणी तमचर फंसा था, और उसका दम घुट रहा था—

दम घुटता ही जाता, अगर ध्रुव अपना शिकंजा तमचर पर कसा न रख पाता—

अरे! यह... यह क्या हो रहा है? इसका शरीर तो सिकुड़ता जा रहा है!

तमचर सिकुड़ नहीं रहा था, बल्कि निशाचर द्वारा अपनी शक्तियां वापस खींचने के कारण, वह अपने असली रूप में आ रहा था—

और आश्चर्यचकित ध्रुव को फिलहाल इस बात की फिक्र करनी थी, कि वह जमीन या छतों से न टकराए—

और उसके बंटे हुए ध्यान का फायदा निशाचर को मिल जाना था—

अरे! यह प्राणी तो चमगादड़ बन गया!

और... काला मोती! वह चमगादड़ उसे मुंह में दबाकर ले जा रहा है।

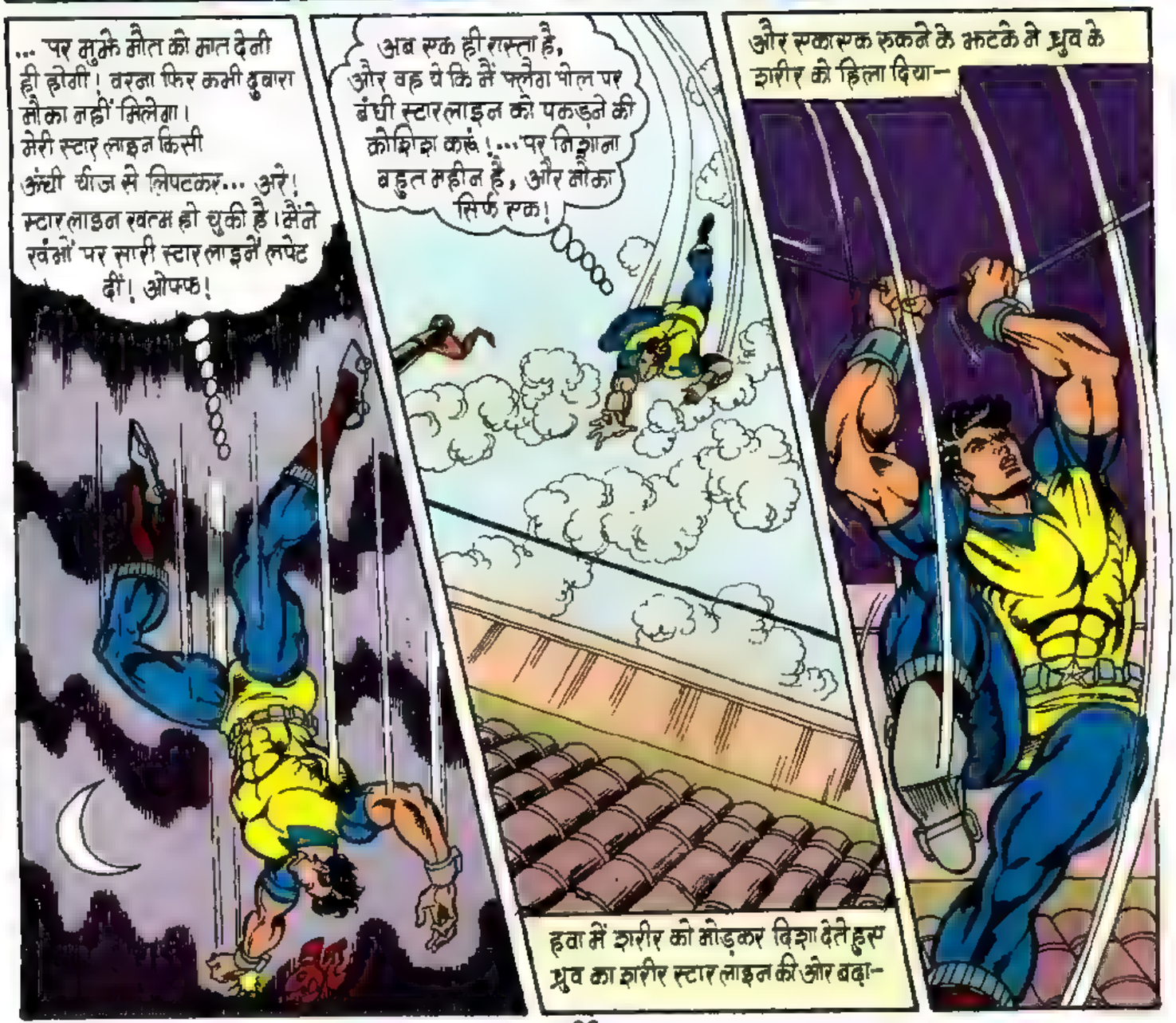

गिरते- गिरते हुए भी ध्रुव ने चमगादड़ को रोकने की जी-तोड़ कोशिश की-
पर कामयाब नहीं हो सका-
यह चमगादड़ तो जैसे विमान की स्पीड से उड़ रहा है! मेरे स्टार ब्लेड इस तक नहीं पहुंच पा रहे हैं!
खैर, इस काम में तो मैं असफल हो ही गया हूं...
... पर मुझे मौत को मात देनी ही होगी! वरना फिर कभी दुबारा मौका नहीं मिलेगा। मेरी स्टार लाइन किसी ऊंची चीज से लिपटकर... अरे! स्टार लाइन खत्म हो चुकी है। मैंने खंभों पर सारी स्टार लाइनें लपेट दीं! ओफ्फ!
अब एक ही रास्ता है, और वह ये कि मैं फ्लेग पोल पर बंधी स्टार लाइन को पकड़ने की कोशिश करूं!... पर निशाना बहुत महीन है, और मौका सिर्फ एक!
हवा में शरीर को मोड़कर दिशा देते हुए ध्रुव का शरीर स्टार लाइन की ओर बढ़ा-
और एकाएक रुकने के झटके ने ध्रुव के शरीर को हिला दिया-

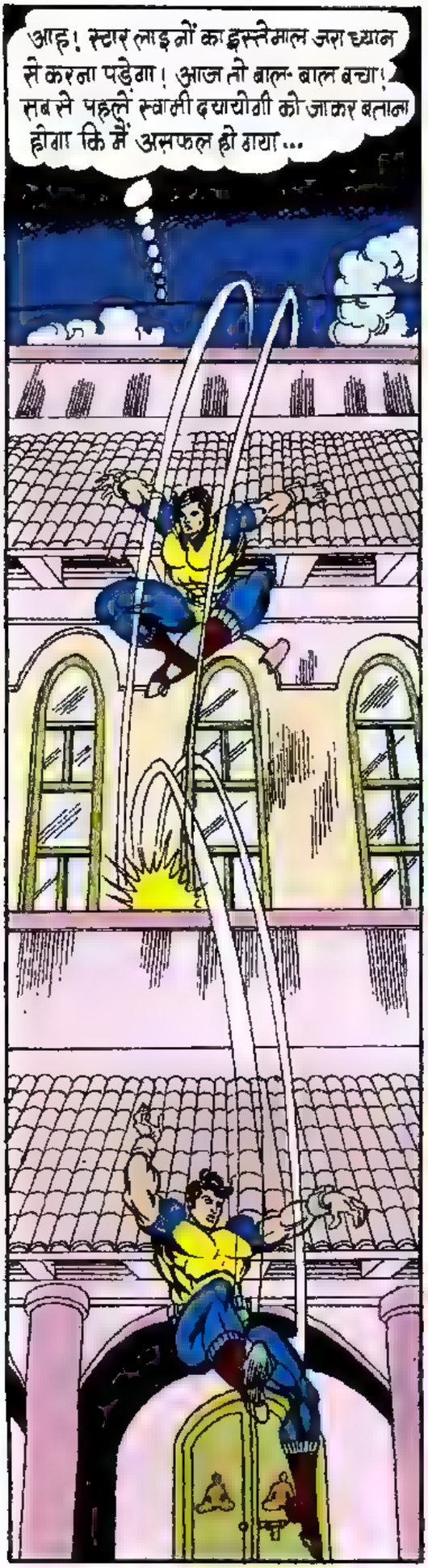

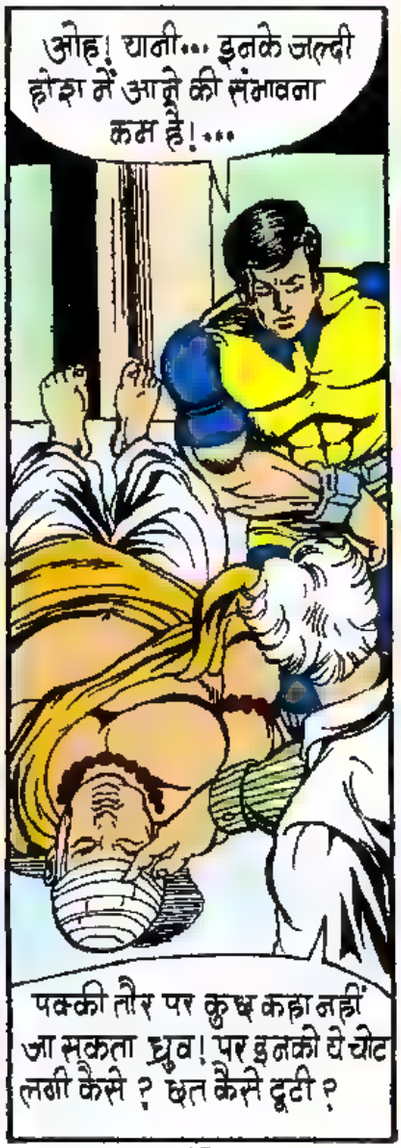

आह! स्टार लाइनों का इस्तेमाल जरा ध्यान से करना पड़ेगा! आज तो बाल-बाल बचा! सब से पहले स्वामी दयायोगी को जाकर बताना होगा कि मैं असफल हो गया...
...वह प्राणी काला मोती ले जाने में सफल...
...अरे! स्वामी जी को क्या हुआ?
और... आप कौन हैं?
मैं आश्रम का डॉक्टर हूं ध्रुव! इनके सिर पर गहरी चोट लगी है! फिलहाल ये बेहोश हैं! पर मुझे डर है कि दिमाग में लगी चोट के कारण ये कोमा में भी जा सकते हैं!
ओह! यानी... इनके जल्दी होश में आने की संभावना कम है!...
पक्की तौर पर कुछ कहा नहीं जा सकता ध्रुव! पर इनको ये चोट लगी कैसे? छत कैसे टूटी?
ध्रुव ने डॉक्टर को संक्षेप में पूरा घटनाक्रम सुना दिया--
ओह! वैसे दोनों चोरों को तो हमने बन्द करके पुलिस को बुला लिया है! पर तुम्हारी चमगादड़ वाली कहानी समझ में नहीं आई।
समझ में तो मुझे भी नहीं आई डॉक्टर! पर सच्चाई यही है, और इसको स्वामीजी के अलावा और कोई नहीं समझ सकता!

यह निशाचर आखिर कौन है ? और अगर है तो इतनी शताब्दियों के बाद फिर कैसे जी उठा ? और अगर वह काले मोती की मदद से कुछ शैतानों को जीवित करना चाहता है तो उसको कैसे रोका जा सकता है ? इस वक्त कहां पर है निशाचर ?

ध्रुव को सवालों का जवाब मिलने में अभी थोड़ा और वक्त लगाना था–

क्योंकि निशाचर ने अभी तो सिर्फ शुरुआत ही की थी–

हा हा हा ! काला मोती ! कितना आसान था इसे पाना ! पहले तो इस तक पहुंचना भी असंभव था ! पर एक तो इतनी शताब्दियों के बाद इस पर लगा सत्य कवच क्षीण हो गया था, और दूसरे इस कलियुग में मायायोगी जैसे सिद्ध तो होंगे ही नहीं, जो मेरे इस शैतान को रोक सकते !

और जिसमें इतनी दुष्टता हो, उसको ढूंढना बहुत आसान है !

खैर ! यह मुश्किल काम तो आसानी से हो गया ! अब आसान काम को किया जाए ! सीपी को हासिल करने का काम ! उसको भी मैं स्वयं नहीं निकाल सकता ! और अब मेरे पास खुद इतनी कम दुष्टता बची है कि मैं दुष्टता का इस्तेमाल करके किसी और प्राणी को इस काम के लिए पैदा नहीं कर सकता। किसी ऐसे को ढूंढना होगा, जिसमें पहले से ही भारी दुष्टता मौजूद हो। वह हिंसक डीगा किसका नाम ले रहा था ? हां, किसी छोटे हाजी का ! जिसके आदमी इतने दुष्ट हों कि किसी को दफन तक न करने दें, वह खुद कितना दुष्ट होगा ! उसे ही ढूंढना चाहिए !

छोटा हाजी इस वक्त मुसीबत में था-
बॉस, अभी फोन आया था। पंगा हो गया है। डेविड को दफनाने वालों कोबराने गए हमारे दोनों आदमियों से डोगा ने आपका नाम और आपके छिपने की जगह उगलवा ली है! अब वह किसी भी वक्त यहां पर पहुंचता होगा!
पुलिस सायरन की आवाज आ रही है!
लगता है कमीने ने इंफार्मेशन पुलिस को पास कर दी है!...
...पर बॉस, डोगा तो हमसे खुद ही निपटना चाहता है। फिर उसने पुलिस को बीच में क्यों डाला?
उसको डर होगा कि उसके आने तक हमको खबर मिल जाएगी, और हम यहां से सरक जाएंगे। इसीलिए उसने पुलिस को इंफार्म कर दिया! थोड़ी देर में वह भी यहां पर जरूर पहुंचेगा!
छोटे हाजी! पुलिस ने तुमको चारों तरफ से घेर लिया है! भागने की कोशिश बेकार है! अब हमारे पास तुम्हारे खिलाफ केस भी है और सबूत भी! हाथ ऊपर उठाकर बाहर आ जाओ!
हम दस तक गिनेंगे! फिर गोली चला देंगे!

अब हम क्या करें, बॉस! हम चारों तरफ से घिर चुके हैं। हम भाग नहीं सकते।
अगर हम भाग नहीं सकते तो ये पुलिसिए भी भाग नहीं सकते! 'रॉकेट प्रोपेल्ड ग्रेनेड' मारो इन पर!
अगले ही कुछ पलों बाद पुलिस का घेरा टूटने लगा—
लेकिन पुलिस भी पूरी तैयारी के साथ आई थी—
इनको चेतावनी दे दी गई थी। पर ये हमको वही पुरानी सेल्फ लोडिंग रायफल वाली पुलिस फोर्स समझ रहे हैं। इनके हमले का जवाब दो!
और कमरे की दीवार में एक बड़ा छेद हो गया—
ओह! रॉकेट लॉन्चर भी लाए हैं! हमने ही इन पर हमला करके इनको अपनी जगह का रास्ता दिखा दिया है!
रॉकेट लॉन्चर निशाने पर तन गया—
दगा—
अब हम क्या करें बॉस?

करना क्या है ? मुकाबला करना बुद्धिमानी नहीं है! भागने की कोशिश करते हैं! पुलिस का घेरा एक तरफ से तोड़ते हैं, और वहीं से भाग लेंगे! ठीक ?
मारे जाओगे! सब के सब!
कौन?

कौन... कौन हो तुम? यहां तक कैसे आ गए?
बेकार के सवाल छोड़ो! मैं तुम सब को यहां से निकाल सकता हूं। सुरक्षित! पर बदले में तुम लोगों को अपनी आत्माएं मुझे देनी होंगी!
आत्माएं? यानी... तुम हमें मार डालना चाहते हो?

नहीं! इसका सिर्फ इतना सा मतलब है कि अब से मैं यानी निशाचर तुम्हारा भगवान होगा! तुम सब मेरी पूजा करोगे, और मुझे शक्ति दोगे!
पता नहीं क्या बोल रहे हो? पर अगर तुम हमको पुलिस घेरे से बाहर निकाल लो तो हम तुमको ऐसे ही भगवान मान लेंगे!
निकाल तो मैं तुम लोगों को ऐसे ही दूंगा! पर ऐसे तुम मेरी शक्तियां नहीं देख पाओगे!

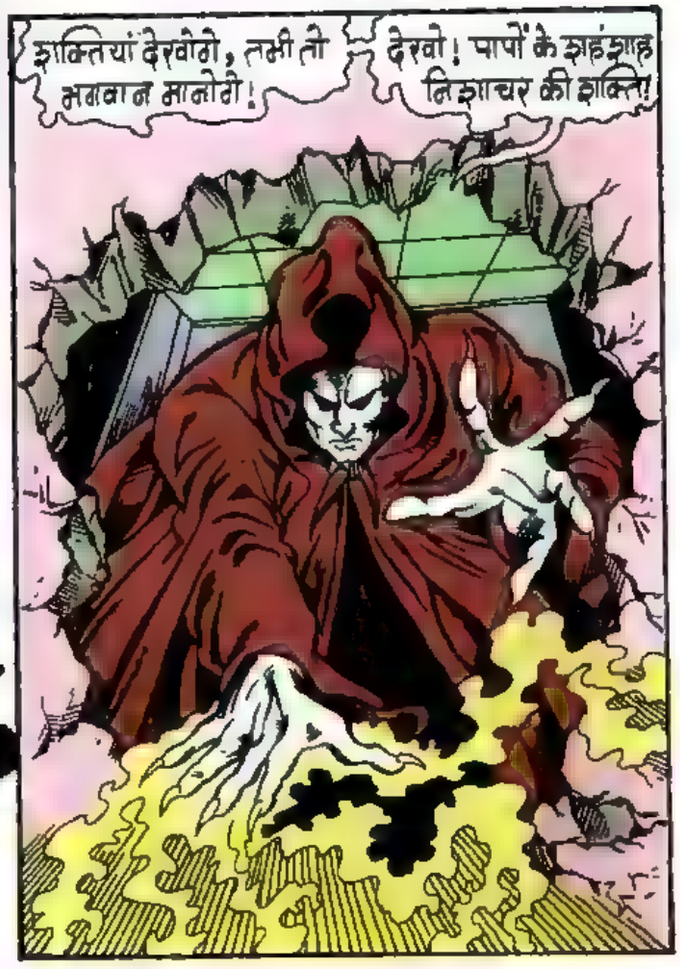
शक्तियां देखोगे, तभी तो भगवान मानोगे!
देखो! पापों के शहंशाह निशाचर की शक्ति!

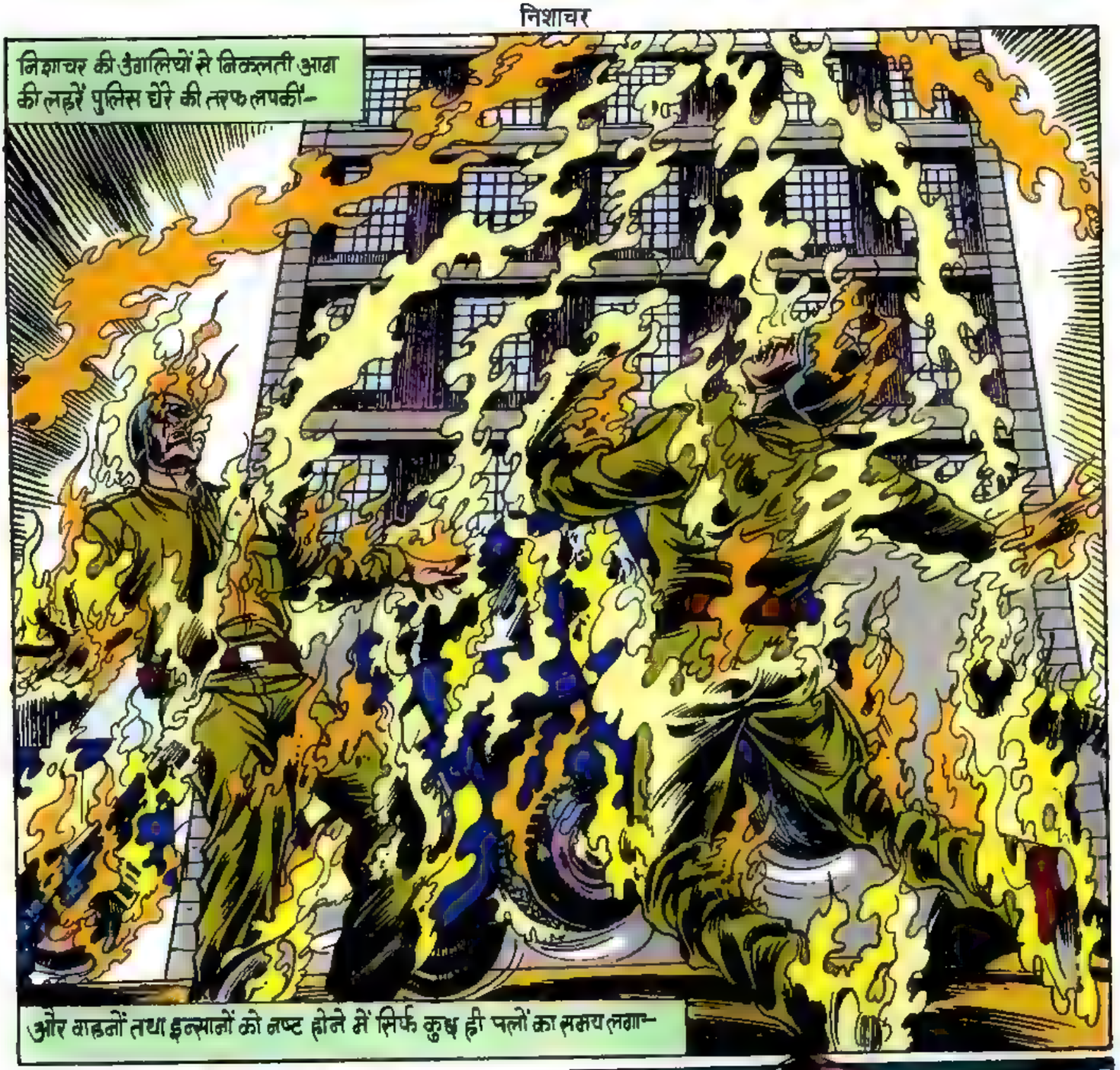
निशाचर की उँगलियों से निकलती आग की लहरें पुलिस घेरे की तरफ लपकीं–
और वाहनों तथा इन्सानों को नष्ट होने में सिर्फ कुछ ही पलों का समय लगा–

कमाल है! आप तो सचमुच हमारे भगवान हैं!

बताइए! इसको क्या करना है? हम हर काम के लिए तैयार हैं!
अभी नहीं! अभी सुबह हो रही है! अभी मेरा काम नहीं हो पाएगा!...

...खैर! काम तो आज सूरज ढलते भी हो जाएगा! फिलहाल तो मैं तुम लोगों को यहां से निकाल ले चलता हूं। क्योंकि थोड़ी ही देर में तुम लोगों को फिर से घेर लिया जाएगा!
आओ! मेरे लबादे में आ जाओ!

जब तक डोगा वहां पहुंचता, तब तक पुलिस वालों की लाशें भी हड्डियों के ढांचे में बदल चुकी थी-
ओह! यह क्या? छोटे हाजी के पास ऐसा कौन सा हथियार है?
जिससे उसने पुलिस वालों का यह हाल कर दिया?
जाओ दोस्तो, पूरी इमारत के गोदामों का चप्पा-चप्पा छान डालो! ढूंढो, उस हलकट को!

सम्मोहित से छोटे हाजी के आदमी लबादे के अंधेरे में प्रविष्ट होने लगे-
और उसी अंधेरे में लुप्त होने लगे-

थोड़ी ही देर बाद वहां न तो छोटे हाजी और उसके आदमियों का कुछ पता था और न ही निशाचर का कोई निशान था-

पांच मिनट बीतने के पहले ही पूरी इमारत का चप्पा-चप्पा छाना जा चुका था-
कहीं नहीं मिला? ओह! यानी डोगा को उसकी बोटियां नुचवाने का आनन्द नहीं मिलेगा! खैर, यह दावत मुल्तवी पर उधार रही दोस्तों! आज नहीं, फिर सही!
अब यहां से फटाफट निकल लो! वरना इल्जाम डोगा पर ही आएगा!
चलो!

इस रात ने कई मांगों का सिन्दूर नोंचकर सुबह के सूरज पर पोत दिया था-

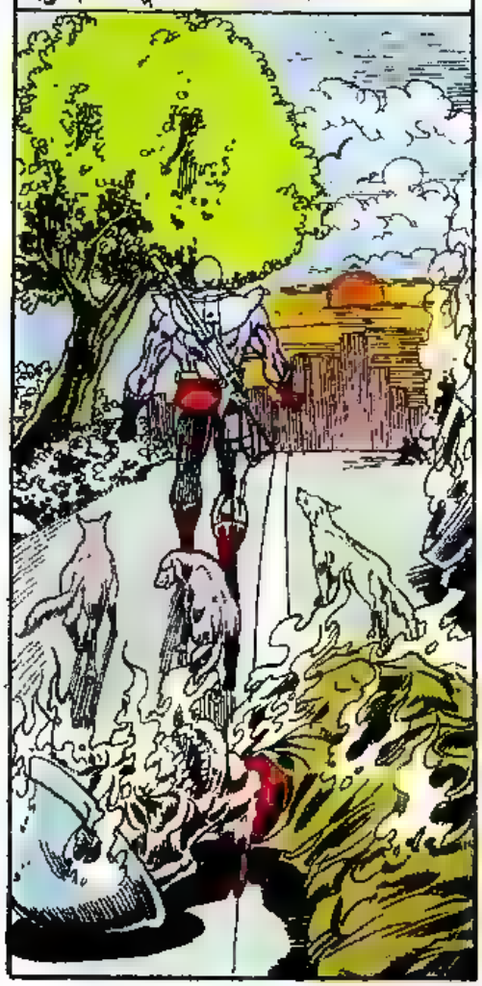

लेकिन यह लाल सूरज मुंबई के माथे पर दहकती बिन्दी की तरह चिपककर कई जलते सुहाने छोड़ जाने वाला था-

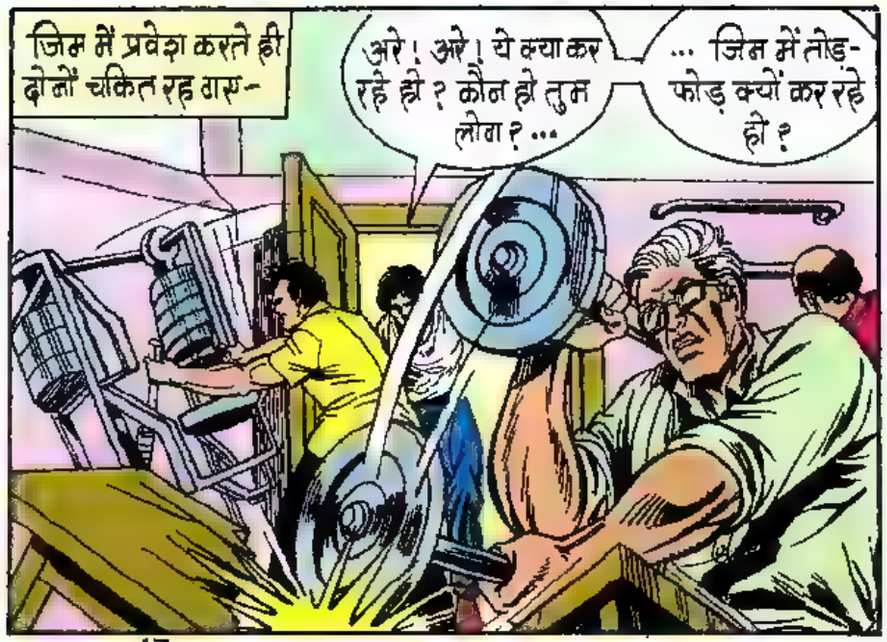

रुक जाओ!
अपनी चेतावनी का असर न होते देखकर सूरज अपने-आप पर काबू नहीं रख पाया-
लेकिन अदरक चाचा का दिमाग हमेशा की ही तरह ठंडा था-
रुक जाओ, सूरज, क्या तुम अपने पड़ोसियों को ही बताना चाहते हो कि तुम डोगा हो!
पड़ोसी?
अरे हां! इन लोगों को ऐसी हरकत करते देखकर तो मैं इनको पहचान ही नहीं पाया। यह तो शर्मा जी हैं! विनीत है, और सूबेदार सिंह। इनको एकाएक जिम में तोड़-फोड़ करने की क्या सूझी?
ये तो यही बता सकते हैं?
बताना क्या है? हमारा तोड़-फोड़ करने का मन हुआ तो हम तोड़-फोड़ करने लगे! पहले अपना घर तोड़ा, बीवी-बच्चों को मारा, फिर बाहर निकल पड़े!...
... अब हम तुमको तोड़ेंगे, टक!
तब तो मुझे खेद पूर्वक आपका प्रस्ताव वापस करना पड़ेगा!...
... आप लोगों के जबड़ों पर!

ये... सब क्या था? क्या इनको अपने पड़ोस में एक जिम का होना पसन्द नहीं है?

कल तक तो पसन्द था! आज सुबह न जाने क्या हो...

... अरे! बाहर कुछ एनाउंसमेंट हो रहा है!

मुंबई शहर में चारों तरफ लूट मचा रहे हर व्यक्ति के लिए 'शूट एट साइट' ऑर्डर इशू कर दिए गए हैं। सब लोग घर के अन्दर रहें। वरना बेझिझक गोली मार दी जाएगी!

LION GYM

ओऽऽऽ एकाएक यह क्या हो गया है!

आओ! टी॰ वी॰ पर देखते हैं। न्यूज में जरूर कुछ आ रहा होगा! आओ!

टी॰ वी॰ पर जो कुछ भी आ रहा था, वह रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफी था–

आज सुबह से ही पूरे मुंबई शहर में अराजकता की एक लहर फैल गई है। दस पुलिस थानों पर हमला किया गया है।

पचपन डिपार्टमेंटल स्टोर लूटे गए हैं, एवं पचास लोग जान से हाथ धो बैठे हैं। ये सारी हत्याएं बिना कारण की गई हैं। हत्यारे भी पेशेवर अपराधी न होकर आम नागरिक हैं! कुछ स्थलों से पुलिस द्वारा भी आपराधिक कार्यों की खबर आई है...

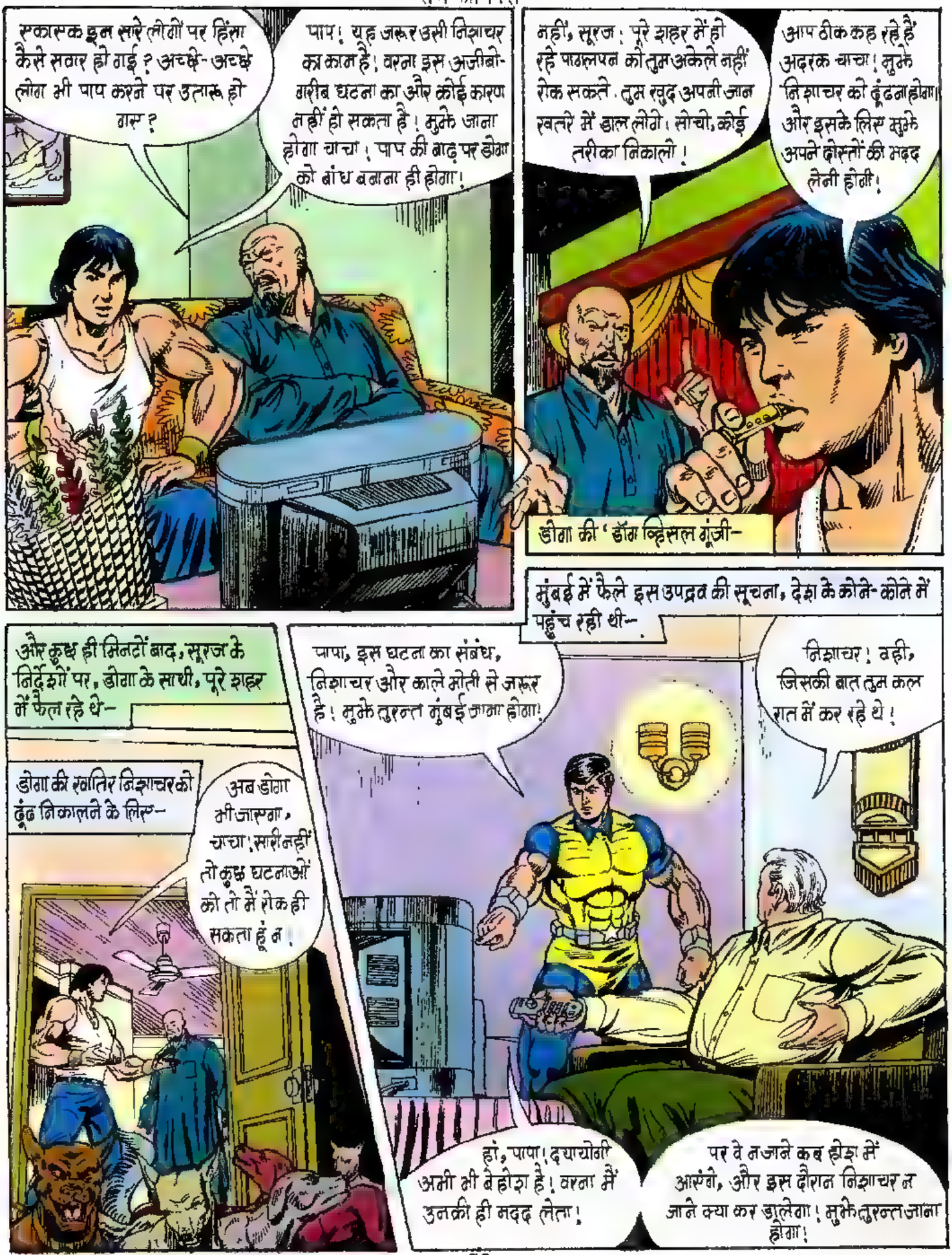

एकाएक इन सारे लोगों पर हिंसा कैसे सवार हो गई? अच्छे-अच्छे लोग भी पाप करने पर उतारू हो गए?
पाप! यह जरूर उसी निशाचर का काम है! वरना इस अजीबो-गरीब घटना का और कोई कारण नहीं हो सकता है! मुझे जाना होगा चाचा! पाप की बाढ़ पर डोगा को बांध बनाना ही होगा!
नहीं, सूरज! पूरे शहर में हो रहे पागलपन को तुम अकेले नहीं रोक सकते. तुम खुद अपनी जान खतरे में डाल लोगे। सोचो, कोई तरीका निकालो!
आप ठीक कह रहे हैं अदरक चाचा! मुझे निशाचर को ढूंढना होगा। और इसके लिए मुझे अपने दोस्तों की मदद लेनी होगी!
डोगा की 'डॉग व्हिसल' गूंजी—
और कुछ ही मिनटों बाद, सूरज के निर्देशों पर, डोगा के साथी, पूरे शहर में फैल रहे थे—
डोगा की खातिर निशाचर को ढूंढ निकालने के लिए—
अब डोगा भी जाएगा, चाचा! सारी नहीं तो कुछ घटनाओं को तो मैं रोक ही सकता हूं न!
मुंबई में फैले इस उपद्रव की सूचना, देश के कोने-कोने में पहुंच रही थी—
पापा, इस घटना का संबंध, निशाचर और काले मोती से जरूर है! मुझे तुरन्त मुंबई जाना होगा!
निशाचर! वही, जिसकी बात तुम कल रात में कर रहे थे!
हां, पापा! दयायोगी अभी भी बेहोश हैं! वरना मैं उनकी ही मदद लेता!
पर वे न जाने कब होश में आएंगे, और इस दौरान निशाचर न जाने क्या कर डालेगा! मुझे तुरन्त जाना होगा!

पर अगर यह काम निशाचर का न हुआ तो ?
फिर भी इस सूत्र को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता, पापा ! खान-बीन करने तो जाना ही पड़ेगा।
ठीक है ध्रुव ! जाओ !
भगवान तुम्हारी रक्षा करें !

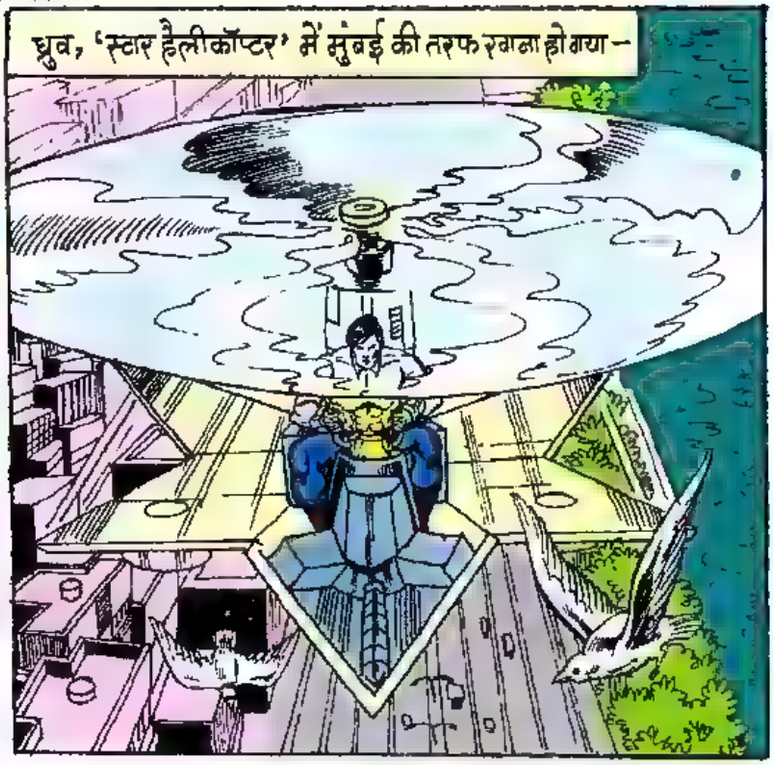
ध्रुव, 'स्टार हैलीकॉप्टर' में मुंबई की तरफ रवाना हो गया –

मुंबई में – पागलपन का नाच बदस्तूर जारी था ! लेकिन जैसे-जैसे शाम ढलती जा रही थी, वैसे-वैसे यह पागलपन खत्म हो रहा था । क्योंकि निशाचर के लिए यह वक्त पाप सोखने का था, फैलाने का नहीं –
बस ! सूरज डूब रहा है ! अब मेरा काम शुरू होता है ! तुम्हारी तैयारी तो पूरी है न ?
EXPLOSIVES
हां, मालिक ! ड्रिलिंग मशीन और विस्फोटक चाहिए थे, वे आ चुके हैं !

ठीक है ! काम शुरू कर दो !
ड्रिलिंग मशीन, उस विशाल चट्टान में छेद बनाने लगी –
घर्र घर्र घर्र

और फिर उन गहरे छेदों में विस्फोटक भरे जाने लगे –

और फिर उस चट्टान को तोड़ने की तैयारी पूरी हो गई। पलीते सुलगा दिए गए–
एक भीषण धमाके के साथ, चट्टान हजारों टुकड़ों में विभक्त हो गई–
और अगले ही पल– एक सन्देश हवा में तैरने लगा–
भौं वाऊऽऽगुर्र
जो एक मुंह से दूसरे मुंह–
आऊंऽऽऽ
होता हुआ–
गर्रर्र वाऊऊ
जा पहुंचा उस तक, जिसके लिए यह सन्देश भेजा गया था–
ओह! मैंने कुत्तों को निशाचर का थोड़ा सा हुलिया बताया था... और इन्होंने शायद निशाचर को देख लिया है!
भौंभौं वाऊईकूंईई
वैसे भी कुत्तों में बुराई को दूर से ही पहचान लेने की जबरदस्त क्षमता होती है!
और वह स्थान, जहां पर निशाचर को देखा गया है, यहां से काफी पास है!

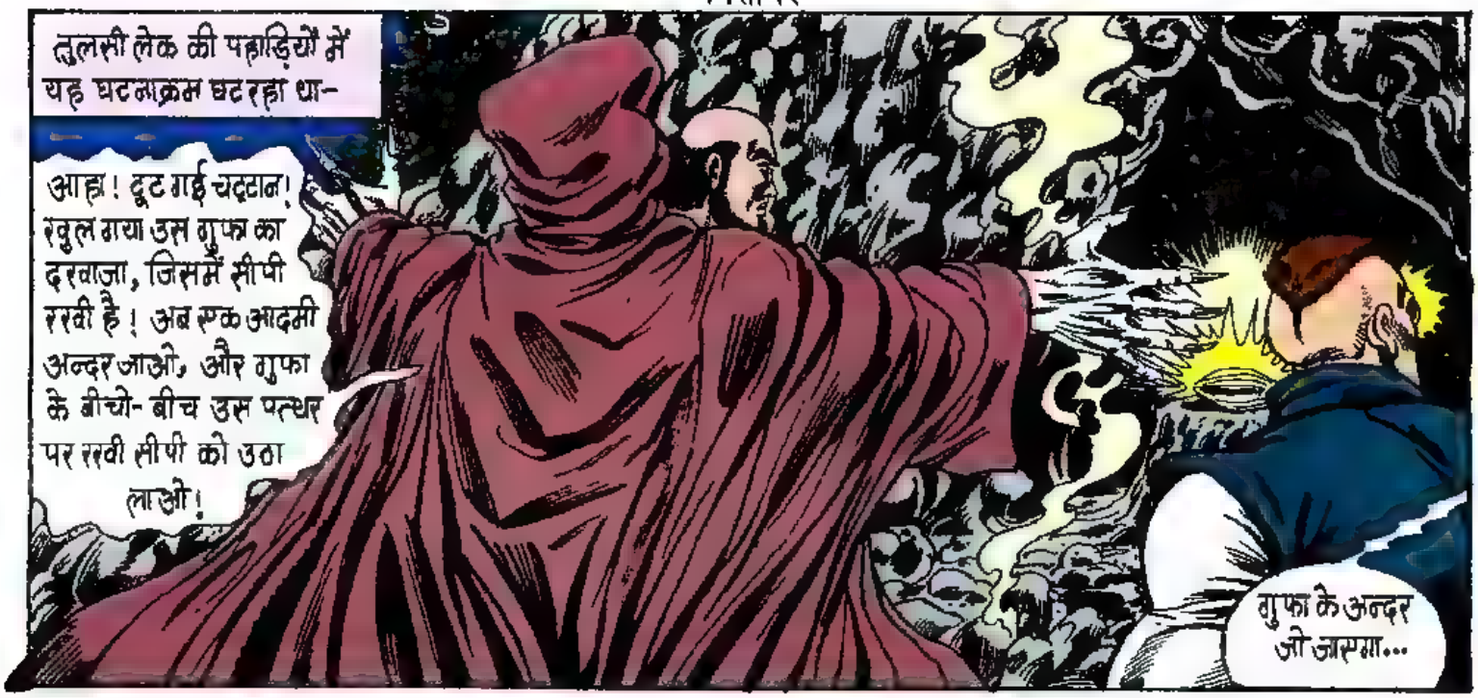
तुलसी लेक की पहाड़ियों में यह घटनाक्रम घट रहा था–
आह्! टूट गई चट्टान! खुल गया उस गुफा का दरवाज़ा, जिसमें सीपी रखी है! अब एक आदमी अन्दर जाओ, और गुफा के बीचो-बीच उस पत्थर पर रखी सीपी को उठा लाओ!
गुफा के अन्दर जो जाएगा...

... वह ज़िन्दा बाहर नहीं आएगा!
निशाचर जो चाहता है वह उसे कभी नहीं मिलेगा!
डो--डोला!
तू फिर आ गया! लेकिन तू कुछ कर नहीं पाएगा! क्योंकि तू इनको सिर्फ हिंसा से रोक सकता है! और हिंसा हमें और शक्तिशाली बनाती है...

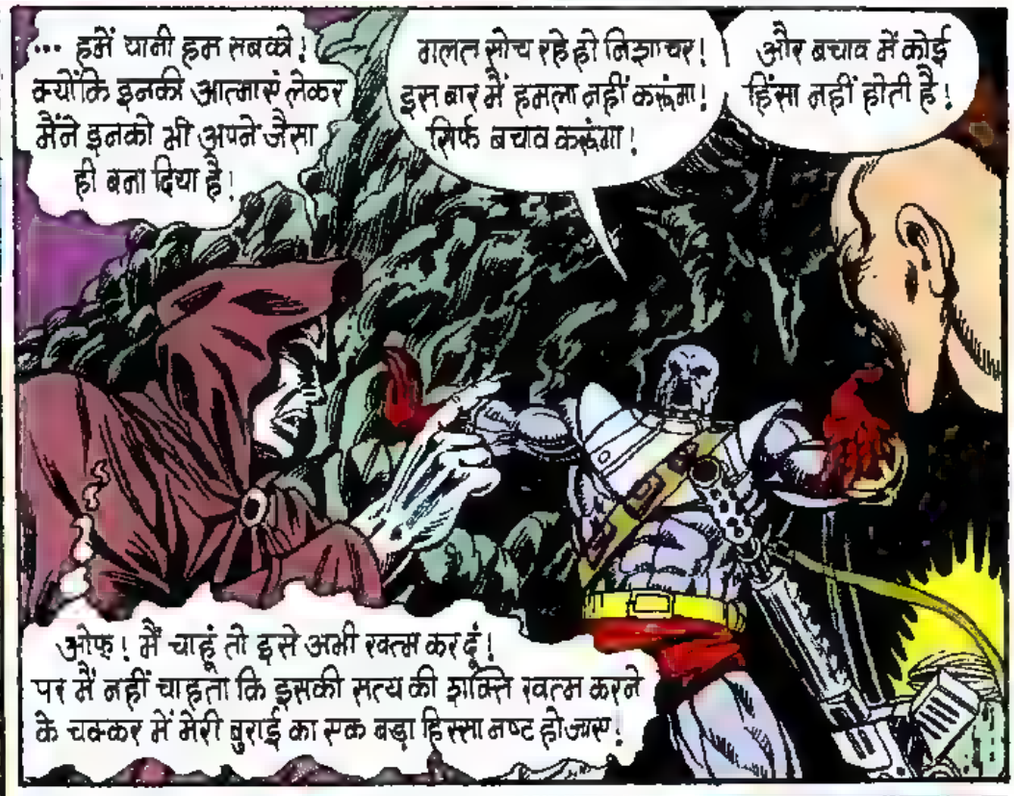
... हमें यानी हम सबको! क्योंकि इनकी आत्माएं लेकर मैंने इनको भी अपने जैसा ही बना दिया है!
ग़लत सोच रहे हो निशाचर! इस बार मैं हमला नहीं करूंगा! सिर्फ बचाव करूंगा!
और बचाव में कोई हिंसा नहीं होती है!
ओफ़! मैं चाहूं तो इसे अभी खत्म कर दूं! पर मैं नहीं चाहता कि इसकी सत्य की शक्ति खत्म करने के चक्कर में मेरी बुराई का एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो जाए!

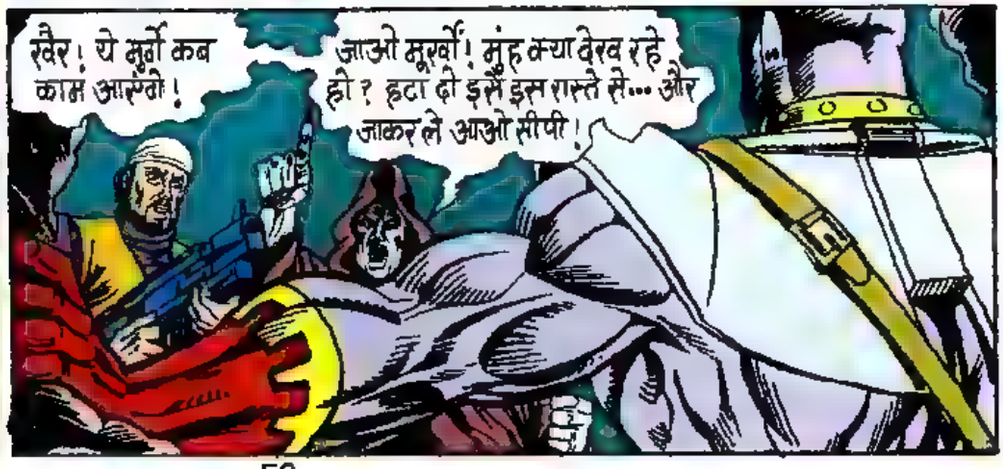
खैर! ये मूर्ख कब काम आएंगे!
जाओ मूरखों! मुंह क्या देख रहे हो? हटा दो इसे इस रास्ते से... और जाकर ले आओ सीपी!

डोगा से निपटना बहुत जरूरी था। क्योंकि डोगा का शरीर, गुफा के द्वार पर अंगद के पैर की तरह जम गया था—
गोलियों की बौछार तड़तड़ाकर डोगा की तरफ लपकीं—
डोगा, बौछार के रास्ते से हटा—
और निशाचर चीख उठा—
गोलियां मत चलाओ मूर्ख! कोई गोली सीपी पर भी लग सकती है। और अगर सीपी टूट गई, तो मैं तुम सबकी रीढ़ की हड्डियां तोड़ दूंगा गोली मत चलाओ!
अब सिर्फ शारीरिक शक्ति का सहारा ही लिया जा सकता था—
और डोगा से इस क्षेत्र में पार पाना असंभव नहीं तो, मुश्किल अवश्य था—
पहला गुंडा, डोगा की तरफ लपका—
उसका घूंसा लहराया—
और डोगा थोड़ा सा दाईं तरफ सरक गया। सिर्फ इतना कि घूंसा उसके चेहरे पर न लगकर, उसके बख्तर पर लगे—
ई या या या ऊ ऊ
गुंडा, दर्द से कराह उठा, उसका सिर अपने-आप हवा में झटकने लगा—
और डोगा ने एक बार फिर अपना बख्तर झटकते सिर के रास्ते में रख दिया—

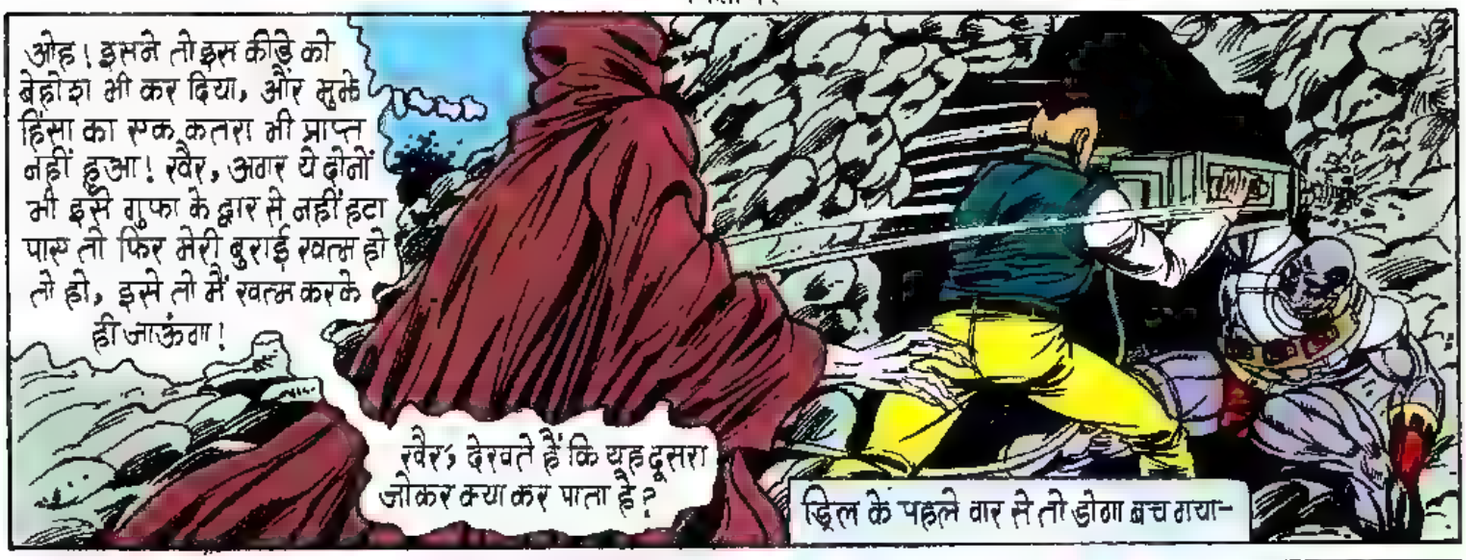
ओह! इसने तो इस कीड़े को बेहोश भी कर दिया, और मुझे हिंसा का एक कतरा भी प्राप्त नहीं हुआ! खैर, अगर ये दोनों भी इसे गुफा के द्वार से नहीं हटा पाए तो फिर मेरी बुराई खत्म हो तो हो, इसे तो मैं खत्म करके ही जाऊंगा!
खैर, देखते हैं कि यह दूसरा जोकर क्या कर पाता है?
ड्रिल के पहले वार से तो डोगा बच गया-

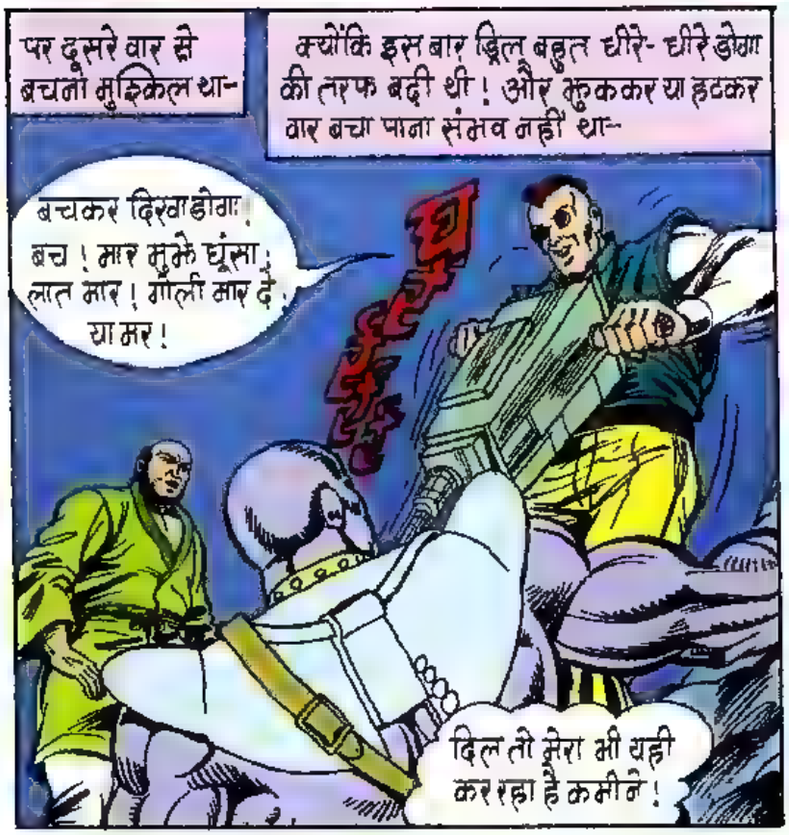
पर दूसरे वार से बचना मुश्किल था-
क्योंकि इस बार ड्रिल बहुत धीरे- धीरे डोगा की तरफ बढ़ी थी! और झुककर या हटकर वार बचा पाना संभव नहीं था-
बचकर दिखा डोगा! बच! मार मुझे घूंसा, लात मार! गोली मार दे, या मर!
दिल तो मेरा भी यही कर रहा है कमीने!

लेकिन ऐसा कोई भी कार्य हिंसा की श्रेणी में आएगा, और इससे तुम्हारी ताकत ही बढ़ेगी...
... मुझे कोई दूसरा रास्ता जल्दी ही निकालना पड़ेगा। क्योंकि फिलहाल मेरे बख्तर पर इसकी ड्रिल कुछ ही सेकंडों में उसे चीरकर मेरे फेफड़ों का मलीदा बना देंगी!
मैं ऐसा क्या कर सकता हूं जो हिंसक भी न हो, और इसे कम से कम बेहोश भी कर दे!...
... हां! एक काम किया जा सकता है!

अगले ही पल डोगा के हाथ में उसका चाकू चमक उठा-
और निशाचर खुश हो गया-
आहा! मार, इसे चाकू मार! इस काम से मुझे जो हिंसा मिलेगी, उसे मैं डोगा की ही खत्म करने में खर्च करूंगा!

पर डोगा का इरादा कुछ और ही था! चाकू बिजली के तारों को काटता हुआ, अन्दर जा घुसा-

तारें कट गईं और करंट पूरे ड्रिलर को शॉर्ट सर्किट करती हुई मशीन की धातुई बॉडी में फैल गई–

और असंतुलित हुई मशीन को संभालने के चक्कर में उस गुंडे का हाथ, बॉडी से छूट गया–

नतीजा वही हुआ, जो होना था–

बिजली के झटके से कांपता हुआ गुंडा, जमीन पर आ गिरा–

ओह! दो गुंडे धराशायी हो गए हैं। अब सिर्फ छोटा हाजी ही बचा है, और इसको डोगा से टकराने का खतरा मैं नहीं उठा सकता!

क्योंकि अगर ये भी पिट गया तो गुफा में घुसकर सीपी कौन उठाकर लाएगा! मैं तो गुफा में घुस नहीं सकता...

... मुझे ही कुछ करना होगा! डोगा को गुफा के मुंह से हटाना होगा...

... मुझे डोगा से ही सीख लेनी होगी! अगर सीधे वार नहीं कर सकते तो तिरछे वार करो! ऐसे!

अगले ही पल ऊपर से गिरती चट्टानों ने डोगा को नीचे दबा लिया–

अब मुंह क्या देख रहा है? इसको चट्टानें हटाकर निकलने में ज्यादा समय नहीं लगेगा! अन्दर जा, और सीपी लेकर आ! जा!

छोटे हाजी के गुफा के अन्दर जाकर ...

... सीपी उठाने...

... और बाहर आने तक डोगा आजाद हो चुका था–

नहीं छोटे हाजी! मैं तुमको भागने नहीं दूंगा!

अब ये आगे या मरे ! मेरा काम तो हो गया। ही ही ही। हा हा हा!
नहीं, निशाचर! मैं तुझे भी नहीं जाने दूंगा! तू क्या कर रहा है, और क्यों कर रहा है, यह जाने बगैर मैं तेरा पीछा नहीं छोड़ूंगा। कभी नहीं छोड़ूंगा!
धड़ाक
मुझे तेरी बात पर पूरा भरोसा है डीगा!
और इसके लिए मुझे हिंसा भी करनी पड़ी तो करूंगा!
इसलिए मैं ऐसा इन्तजाम करके जा रहा हूं कि तू मेरे पीछे न आ सके। अब मेरा काम हो गया है तो मुझे इस बात की फिक्र नहीं रही कि मेरी बुराई क्षीण होगी या नहीं!
ले! निपट ले अपने दुश्मन छोटे हाजी से! मैं तो चला! इस दुनिया से भगवान को हटाने की तैयारी करने!
ओह! छोटा हाजी तो नर्क से आया शैतान लग रहा है। इसको बगैर हिंसा के कैसे खत्म करूंगा! ऐसी कोशिश में या तो मैं खुद खत्म हो जाऊंगा...

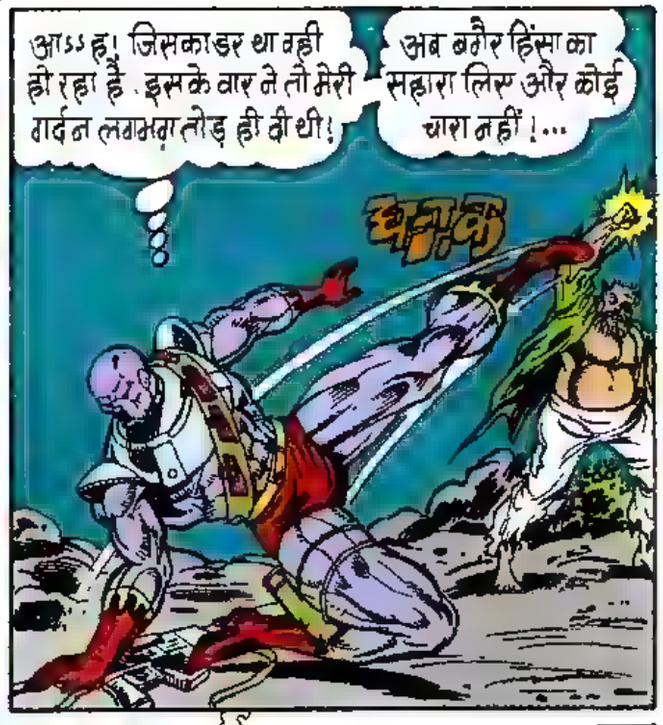

... या ये मुझे खत्म कर देगा।
अरे! इतनी ताकत से लगाए गए वार का भी इस पर कोई असर नहीं हुआ!
आऽऽह! जिसका डर था वही हो रहा है. इसके वार ने तो मेरी गर्दन लगभग तोड़ ही दी थी!
अब बगैर हिंसा का सहारा लिए और कोई चारा नहीं!...
... और उम्मीद करता हूं कि ये हिंसा मेरे काम आएगी, इसके काम नहीं!
गोलियां छोटे हाजी के नाटकीय रूप को चीरती चली गईं–
और साथ ही साथ डोगा की आशाओं के भी चीथड़े उड़ गए–
पूरी मैगजीन पचा गया कम्बख्त! और... अब यह तेजी से मेरी तरफ बढ़ रहा है। मैगजीन बदलने तक का मौका...
... नहीं देगा मुझे! आक!
डोगा का दम तेजी से घुटने लगा–

इतनी देर तक लगातार लड़ना डोगा भी थोड़ा थक गया था। अपनी गर्दन छुड़ाने लायक शक्ति वह बटोर नहीं पा रहा था—

उसे मदद चाहिए थी—

और मदद उसके सामने खड़ी थी—

मुंबई का चक्कर काट-काटकर मैं ने क्या, मेरा हेलीकॉप्टर तक परेशान हो गया था। मैं निशाचर जैसी कोई चीज ढूंढ रहा था, और यह बन्दा किसी नर्क के प्राणी जैसे हुलिए पर सेंट-परसेंट खरा उतरता है!...

... लेकिन यह कुत्ते जैसे हुलिए वाला कौन है?

SSS.

डोगा भी सोच में पड़ गया था—

आसमान का सीना चीरकर यह मेरी मदद को कौन आ गया? इसकी शक्ल भी देखी-देखी लग रही है. पर कहां? शायद अखबार में?

तभी डोगा की सोच को एक झटका लगा—

बचो दोस्त, ये ठण्डी आग तुमको जलाकर खाक कर देगी। मैं नहीं जानता था कि निशाचर ने इसके शरीर में यह शक्ति भी भर दी है.

निशाचर, यानी यह भी निशाचर द्वारा बनाया गया कोई प्राणी है!...

... और अगर इसके अन्दर भी निशाचर की ही शक्तियों का अंश है, तो यह भी रात का प्राणी है। यानी इसे दिन की तेज रोशनी से सख्त परहेज होना चाहिए। खैर, अभी पता कर लेते हैं!
ध्रुव ने 'बेल्ट पाऊच' से एक 'सिगनल फ्लेयर' निकाला—
और पूरे इलाके पर जैसे एक नया सूरज चमकने लगा—
यह रोशनी नहीं सह पा रहा है दोस्त! पर फायदा क्या है? मैंने इस पर अपनी गन की पूरी मैगजीन खाली कर दी! पर ये उसको जलजीरे की तरह पचा गया! इस पर हमला करेंगे तो किस चीज से?
सोचते हैं! इसकी एक कमजोरी तो पता चल गई है! बाकी भी पता चल ही जाएंगी! पहले मुझे यह तो बताओ कि यहां पर क्या हो रहा था?
जवाब में डोगा, ध्रुव को सारी कहानी सुनाता चला गया। सिर्फ सूरज वाला किस्सा छोड़कर—
और फिर जब मैं निशाचर की खोज में यहां पर आया तो छोटा हाजी यानी ये भी यहीं मौजूद था!
ओह! यानी तुम डोगा हो! मैंने सुना है तुम्हारे बारे में! हालांकि मैं तुम्हारे तरीकों को पसन्द नहीं करता, पर तुम्हारे काम को बहुत पसन्द करता हूं!
मैं भी तुम्हारी ही तरह एक छोटा मोटा क्राइम फाइटर हूं। राजनगर में रहता हूं। और सुपर कमांडो ध्रुव के नाम से जाना जाता हूं!
ओऽऽऽ! तभी तुम्हारी शक्ल जानी-पहचानी लग रही थी! लेकिन तुम और 'छोटे-मोटे' क्राइम फाइटर, हा हा हा!
मुझ पर बाद में हंस लेना डोगा! पहले पूरी घटना तो सुना दो!

डोगा फिर से ध्रुव को घटनाक्रम बताने लगा-
फिर जैसे ही छोटा हाजी सीपी लेकर बाहर आया, मैं उस पर लपका। सीपी निशाचर के हाथ में जा गिरी। और फिर वह छोटे हाजी को यह रूप देकर यहां से भाग गया!
ओह! तब तो हमको निशाचर की तलाश पहले करनी चाहिए डोगा! लेकिन अगर इसे छोड़ गए, तो ये तबाही मचा डालेगा!...
... इसको रोकने का कोई तरीका...
...आऽऽह!
ओऽऽह! सिग्नल फ्लेयर बुझ गया है, ध्रुव! अब इसे कैसे रोकें?
कुछ समझ में नहीं आ रहा है, डोगा! जो गोलियों तक से नहीं मरा, उसको कैसे रोका जा सकता है?
यानी ये इन्सानों के तरीके से नहीं, शैतानों के तरीके से मरेगा ध्रुव! इस दिशा में कुछ सोचो! तुम्हारे दिमाग की तो मैंने बड़ी तारीफ सुनी है!
दिमाग की मशीन के सारे पुर्जे तो इस शैतान ने ढीले कर दिए हैं। सोचूं तो कैसे... ओऽऽऽ
डोगा! एक तरीका है! है!
इसकी गुफा के अन्दर धकेलने की कोशिश करो!

कहानी 65 पेज से जारी

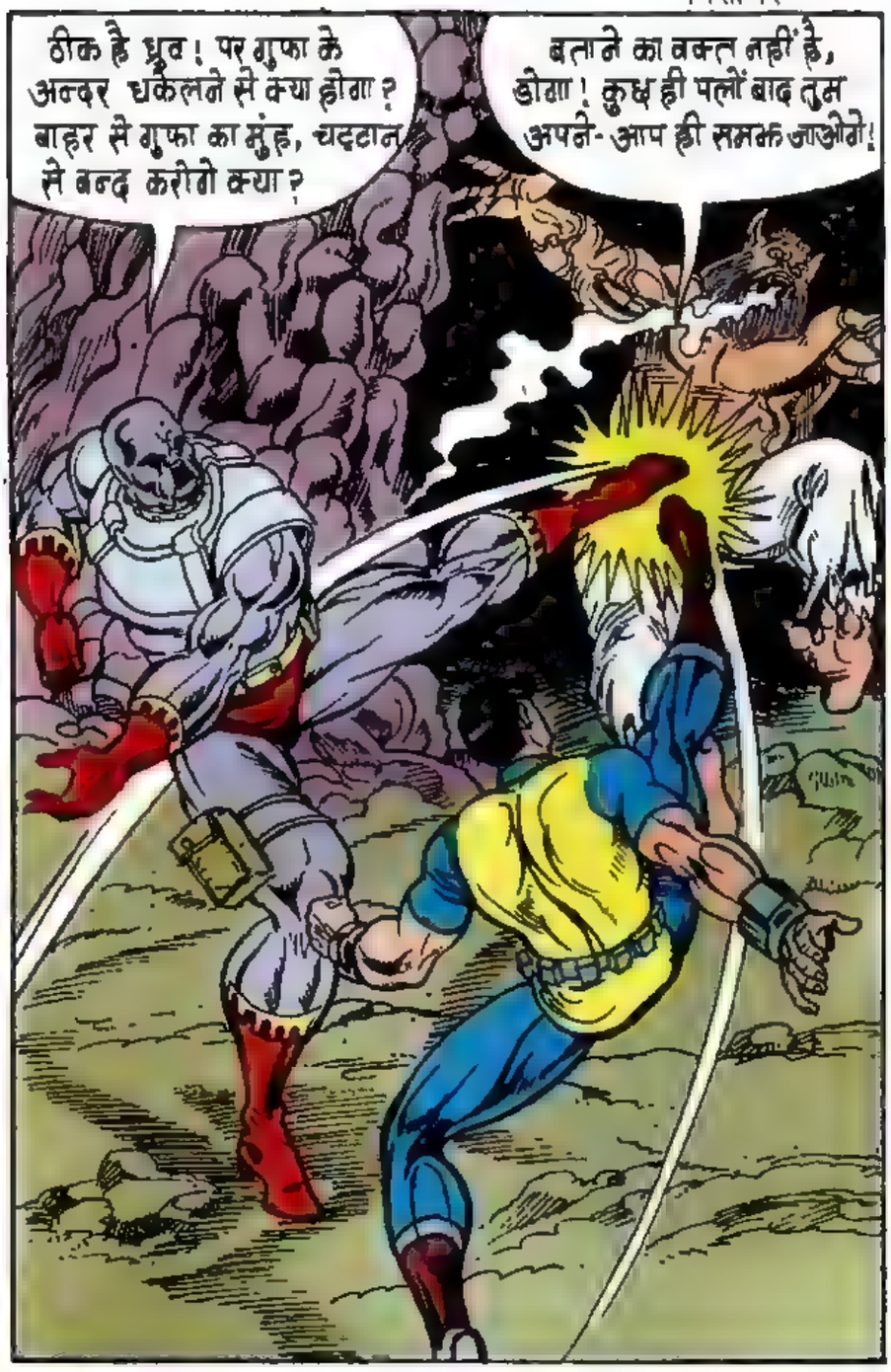
ठीक है ध्रुव! पर गुफा के अन्दर धकेलने से क्या होगा? बाहर से गुफा का मुंह, चट्टान से बन्द करोगे क्या?
बताने का वक्त नहीं है, डोगा! कुछ ही पलों बाद तुम अपने-आप ही समझ जाओगे!

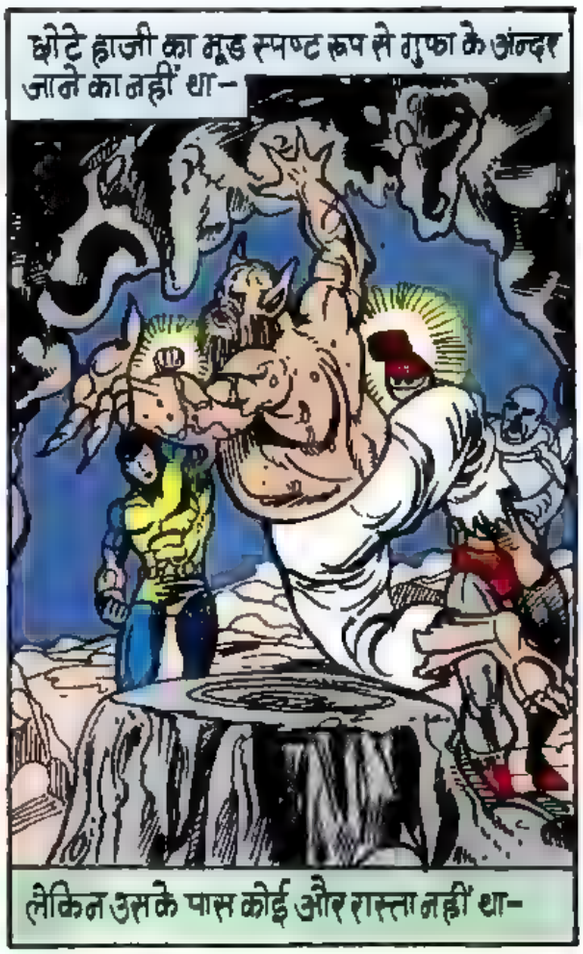
छोटे हाजी का मूड स्पष्ट रूप से गुफा के अन्दर जाने का नहीं था-
लेकिन उसके पास कोई और रास्ता नहीं था-

उसका शरीर हवा में उछलता हुआ, उसी चट्टान पर जा गिरा, जिस पर सीपी रखी हुई थी-
अरे! यह तो गिरते ही अधमरा हो गया, ध्रुव! ऐसा क्या है इस पत्थर में?

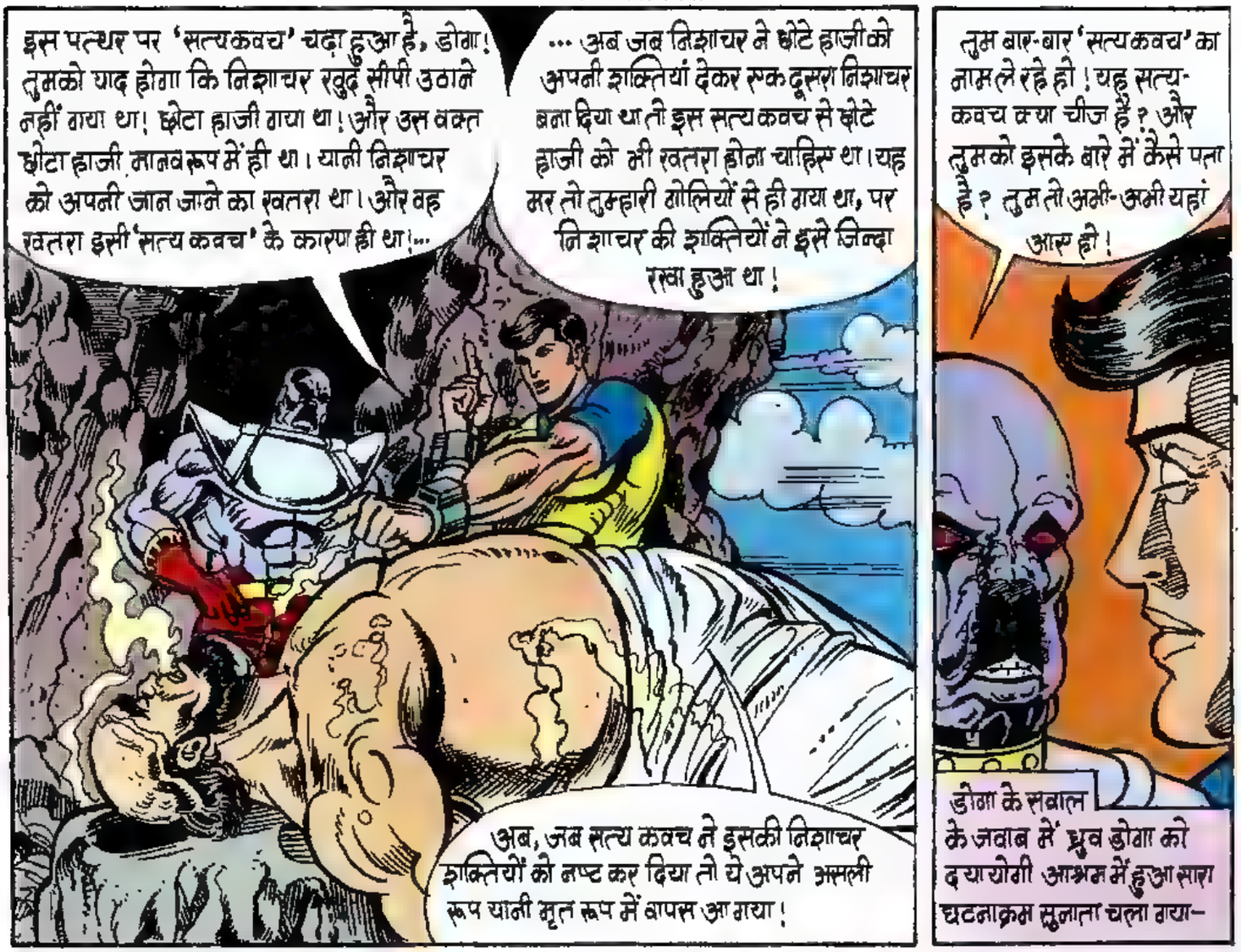
इस पत्थर पर 'सत्य कवच' चढ़ा हुआ है, डोगा! तुमको याद होगा कि निशाचर खुद सीपी उठाने नहीं गया था! छोटा हाजी गया था! और उस वक्त छोटा हाजी मानव रूप में ही था। यानी निशाचर को अपनी जान जाने का खतरा था। और वह खतरा इसी 'सत्य कवच' के कारण ही था!...
... अब जब निशाचर ने छोटे हाजी को अपनी शक्तियां देकर एक दूसरा निशाचर बना दिया था तो इस सत्य कवच से छोटे हाजी को भी खतरा होना चाहिए था। यह मर तो तुम्हारी गोलियों से ही गया था, पर निशाचर की शक्तियों ने इसे जिन्दा रखा हुआ था!
अब, जब सत्य कवच ने इसकी निशाचर शक्तियों को नष्ट कर दिया तो ये अपने असली रूप यानी मृत रूप में वापस आ गया!
तुम बार-बार 'सत्य कवच' का नाम ले रहे हो! यह सत्य-कवच क्या चीज है? और तुमको इसके बारे में कैसे पता है? तुम तो अभी-अभी यहां आए हो!
डोगा के सवाल के जवाब में ध्रुव डोगा को दयायोगी आश्रम में हुआ सारा घटनाक्रम सुनाता चला गया–

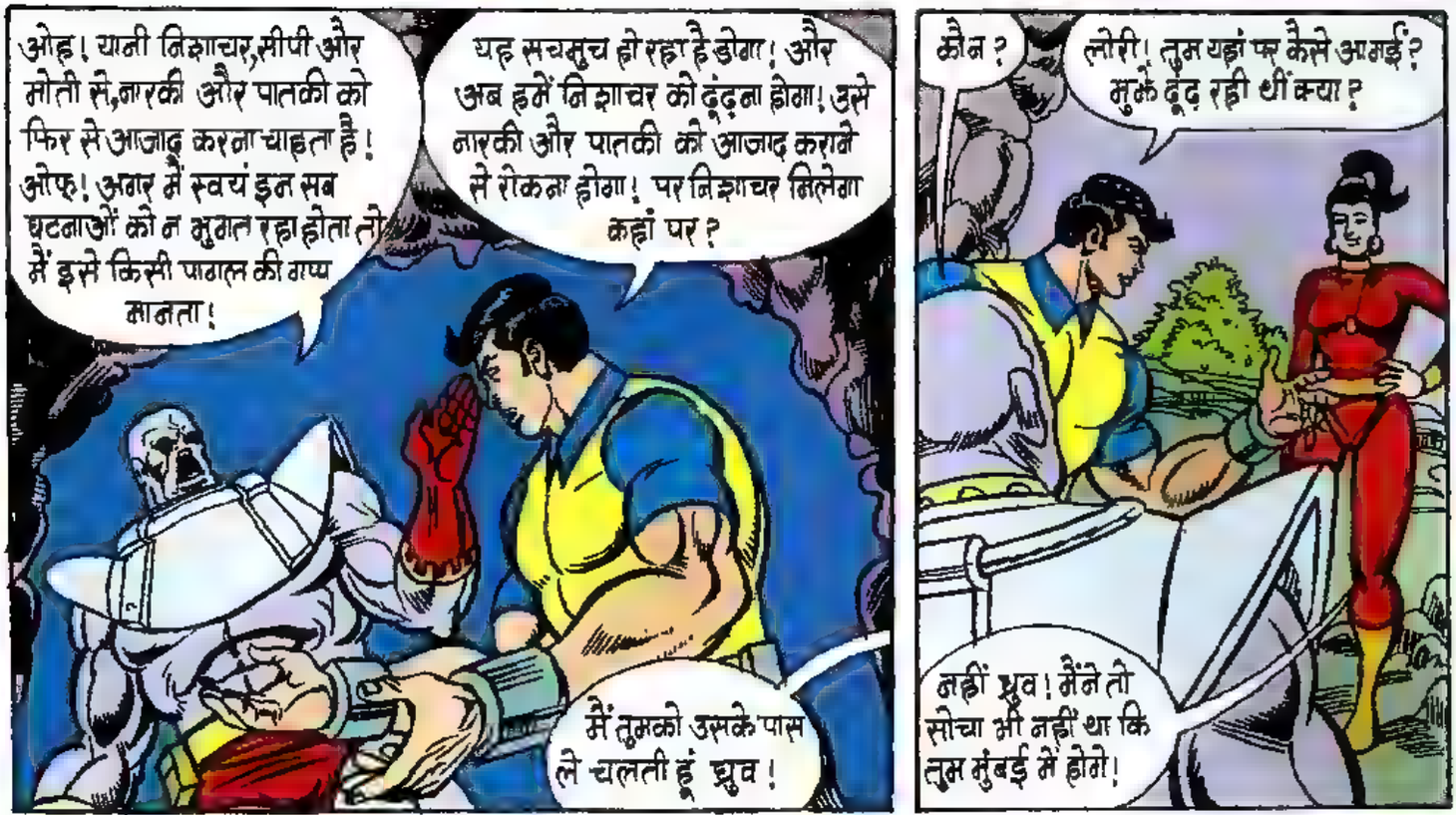
ओह! यानी निशाचर, सीपी और मोती से, नारकी और पातकी को फिर से आजाद करना चाहता है! ओफ्! अगर मैं स्वयं इन सब घटनाओं को न भुगत रहा होता तो मैं इसे किसी पागल की गप्प मानता!
यह सचमुच हो रहा है डोगा! और अब हमें निशाचर को ढूंढ़ना होगा! उसे नारकी और पातकी को आजाद कराने से रोकना होगा! पर निशाचर मिलेगा कहां पर?
मैं तुमको उसके पास ले चलती हूं ध्रुव!
कौन?
लोरी! तुम यहां पर कैसे आ गई? मुझे ढूंढ़ रही थीं क्या?
नहीं ध्रुव! मैंने तो सोचा भी नहीं था कि तुम मुंबई में होगे!

मुझे राजस्थान में बैठे-बैठे भीषण बुराई की तरंगों का आभास हो गया था! और ये तरंगें मुंबई से आ रही थीं। मैं कल ही यहां के लिए रवाना हो गई थी। यहां पर आकर मुझे पूरे मुंबई से तरंगें प्राप्त होने लगीं!

पर सबसे शक्तिशाली तरंगें यहां से आ रही थीं! उनका ही पीछा करते-करते मैं यहां तक आ पहुंची!

राजस्थान में बैठे-बैठे मुंबई की 'बुराई तरंगें' महसूस कर ली? कमाल है यार! मुझे तो यह किसी कॉमिक की कहानी लग रही है!

यह लड़की कौन है?

यह लोरी है डोगा! तंत्र-मंत्र की विशेषज्ञा!! और ये तंत्र-मंत्र की साधना वैज्ञानिक तरीके से करती है!

नींबू और मुर्गे काटकर नहीं! मैं इसकी मदद से वैम्पायरों का आतंक समाप्त कर चुका हूं! इसकी क्षमता शक करने योग्य कतई नहीं है! ★

इसका पता तो अभी लगा जाएगा! अगर ये हजारों किलोमीटर दूर से तरंगों को महसूस कर सकती है तो कम से कम यहां से निशाचर की तरंगों को तो महसूस कर ही सकती है!

लोरी निशाचर का पता लगाकर हमको उस तक ले चलो!

मैं निशाचर का पता लगाने ही यहां पर आई हूं! और मैं इस वक्त भी उससे आती भीषण तरंगों को महसूस कर रही हूं! मैं तुमको उसके पास ले चलती हूं! पर इस वक्त वह यहां से काफी दूर है! हम वहां पर जाएंगे कैसे?

मेरे पास हेलीकॉप्टर है लोरी! जो इस वक्त भी ऊपर चक्कर काट रहा है। मैं रिमोट से अभी उसे नीचे बुलाता हूं!

बुलाओ! पर ये... आ... सज्जन कौन हैं? तुमने हमारी मुलाकात नहीं करवाई?

कुछ ही पलों बाद, स्टार हेलीकॉप्टर तीन सवारियां लेकर तेजी से एक तरफ बढ़ रहा था—

ये डोगा है लोरी! हमारी ही तरह का एक अपराध विनाशक! पर इसका तरीका जरा अलग है!

और वह तरीका भविष्य में कभी हमारे टकराव का कारण भी बन सकता है!

★ इस विषय में जानने के लिए पढ़ें : वैम्पायर

तीन तिलंगे जिस तरफ बढ़ रहे थे, वह दिशा, धरती पर बन रहे एक नए नर्क की तरफ जाती थी-
देखो, देखो ! असुर लोक में बैठे मेरे पूज्य शैतानो ! तुमने निशाचर को सदियों पहले जिस काम के लिए धरती पर भेजा था, उसे आज निशाचर अन्तिम कार पूरा करने जा रहा है। और आज उसे रोकने योग्य क्षमता रखने वाला एक भी पुण्यात्मा इस पृथ्वी पर नहीं है।...
... सदियों पहले मेरे द्वारा फैलाए गए पाप ने धीरे- धीरे इस पृथ्वी पर बसने वाले मानवों को अन्दर से इतना खोखला कर दिया है कि वे मेरे सामने खड़े तक नहीं हो सकते। अब वे अगर कुछ कर सकते हैं तो सिर्फ एक काम ! मेरी गुलामी !
उठो नारकी ! उठो पातकी ! उठो असुर लोक के अत्यन्त शक्तिशाली पापी प्रेतो ! उठो, और पूरी दुनिया को अपने पापों के दलदल में धंसा दो इतना गहरा कि वे इस दलदल से कभी न निकल सकें ! उठो ! ... मेरा हुक्म मानो ! उठो... उठो !

कहो, निशाचर! हमको फंसाकर इतनी सदियों तक तुम कहां घूम रहे थे? जानते हो इस मोती में नारकी का, और इस सीपी में पातकी का एक-एक पल युगों की तरह बीता है! और तुम बाहर मजे कर रहे थे? इतने युगों बाद तुमको याद आई हमारी?
याद नहीं आई नारकी! यह इस संसार में पाप फैलाने का श्रेय अकेले ही लेना चाहता था! इसलिए इसने हमको आजाद नहीं करवाया! अब यह पाप फैलाने में असफल रहा है तो हमको आजाद करवाकर हमारी मदद लेना चाहता है!
चुप हो जाओ मूर्खो! चुप हो जाओ! बिना कुछ जाने-बूझे मुझ पर आरोप क्यों लगा रहे हो? अरे, जिस मायायोगी ने तुमको कैद किया था, उसी ने मुझको भी बन्धक बना लिया था!
वह तो भला हो कुछ हिंसक मानवों का जिनकी हिंसा ने मुझको फिर से जीवन प्रदान किया। पर अब घबराने की कोई बात नहीं है। अब इस संसार में मायायोगी जैसी पुण्यात्माएं हैं ही नहीं!
अब हमको अपना काम पूरा करने से कोई रोक नहीं सकता!

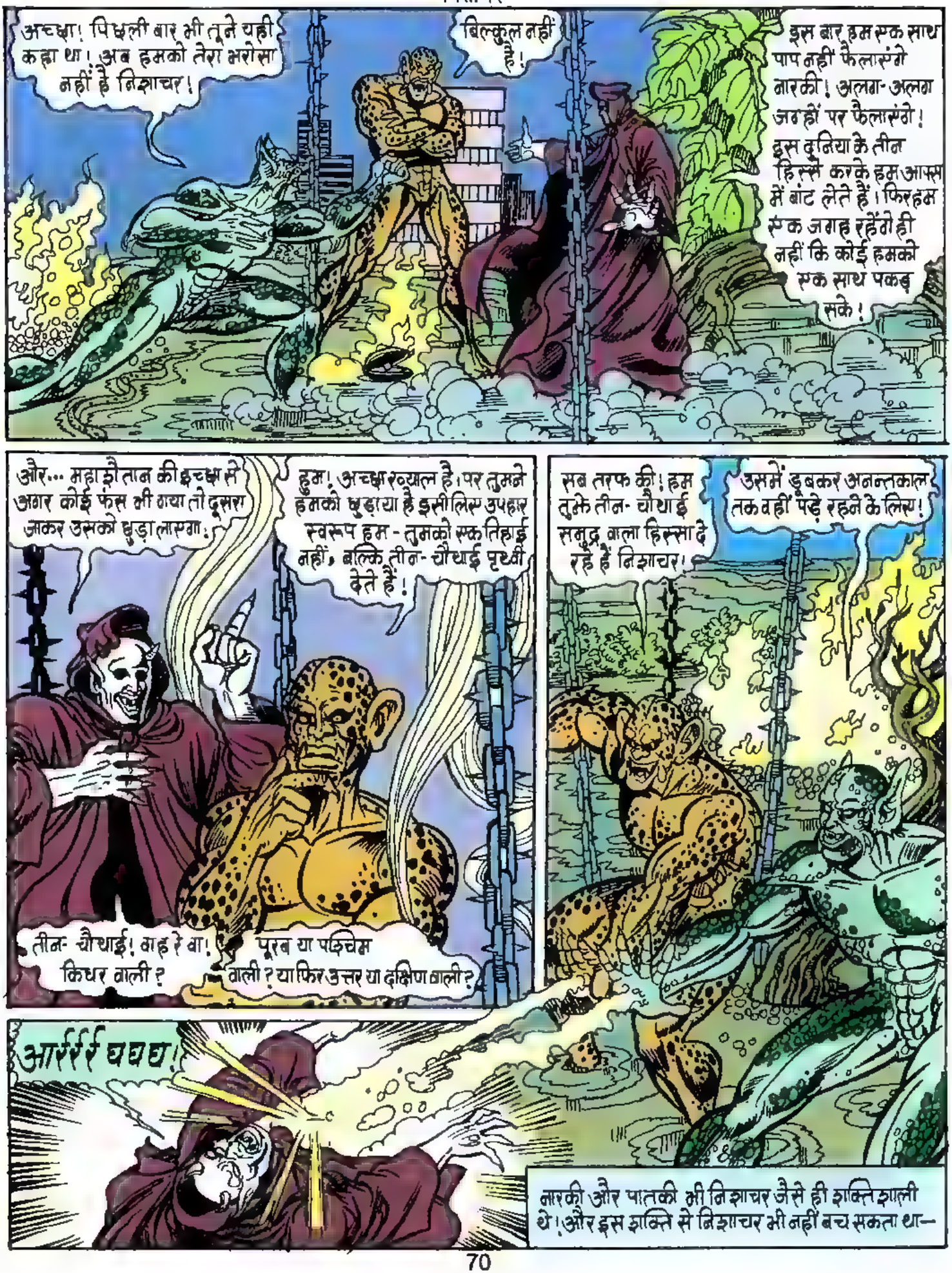
अच्छा! पिछली बार भी तूने यही कहा था। अब हमको तेरा भरोसा नहीं है निशाचर!
बिल्कुल नहीं है!
इस बार हम एक साथ पाप नहीं फैलायेंगे नारकी! अलग-अलग जगहों पर फैलायेंगे! इस दुनिया के तीन हिस्से करके हम आपस में बांट लेते हैं। फिर हम एक जगह रहेंगे ही नहीं कि कोई हमको एक साथ पकड़ सके!
और... महा शैतान की इच्छा से अगर कोई फंस भी गया तो दूसरा जाकर उसको छुड़ा लायेगा!
हुम! अच्छा ख्याल है। पर तुमने हमको छुड़ाया है इसीलिए उपहार स्वरूप हम - तुमको एक तिहाई नहीं, बल्कि तीन- चौथाई पृथ्वी देते हैं!
तीन- चौथाई! वाह रे वा! किधर वाली?
पूरब या पश्चिम वाली? या फिर उत्तर या दक्षिण वाली?
सब तरफ की! हम तुझे तीन- चौथाई समुद्र वाला हिस्सा दे रहे हैं निशाचर!
उसमें डूबकर अनन्तकाल तक वहीं पड़े रहने के लिए!
आर्रर्रर्र घघघ!
नारकी और पातकी भी निशाचर जैसे ही शक्तिशाली थे! और इस शक्ति से निशाचर भी नहीं बच सकता था—

हमसे हिस्सा बांटने चला था! मिल गई इसको हिस्सा बांटने की सजा!
और हमको धोखा देने की सजा भी! हमको फंसाकर खुद सारा श्रेय लेना चाहता था!
अब इस सीपी और काले मोती को भी नष्ट कर दो; न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी!
न रहेंगे सीपी-मोती, और न होंगे हम कैद!
नहीं! इनको नष्ट होने नहीं दिया जाएगा!
यह... यह तो मानसिक वार था! किसने किया यह मानसिक वार? इस पृथ्वी पर ऐसा कौन सा प्राणी उत्पन्न हो गया जो नारकी और पातकी से टकराने की सोच भी सके!
?
वह प्राणी मानव है शैतानो! जिसने हर बार तुमको पाप फैलाने से रोका है, और इस बार भी रोकेगा!
ओह! कुछ मानवों में अभी भी सत्य की खुजली बाकी है। यह बीमारी पृथ्वी से खत्म नहीं हुई है!

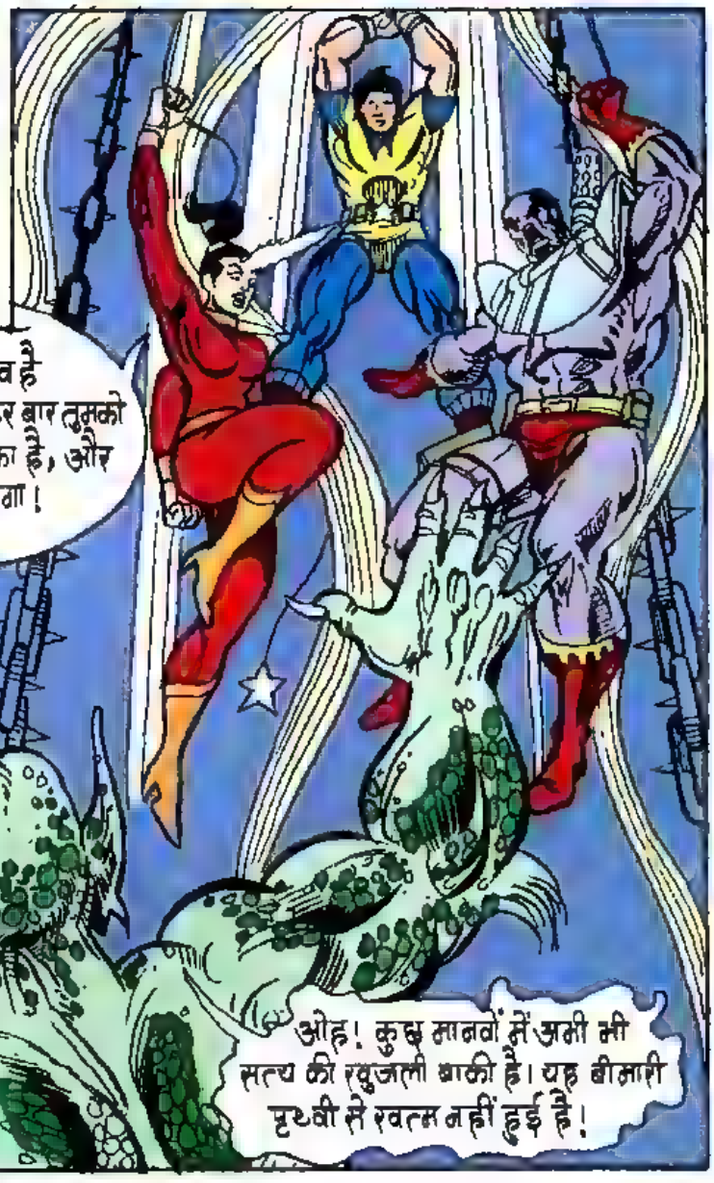

पृथ्वी से यह बीमारी कभी खत्म नहीं होगी शैतानो ! खत्म होगे तो सिर्फ तुम दोनों नारकी और पातकी ! यही नाम हैं न तुम्हारे ?
तुम जिस गन्दगी से पैदा हुए कीड़े हो, उसी गन्दगी में वापस जाओगे। और उस संसार में तुम्हें भेजेगी, लोरी। सीपी और काले मोती के जरिए!
संभलकर लोरी ! जो निशाचर तक को बेहोश कर दे, वे मामूली शक्ति वाले नहीं हो सकते!
मामूली शक्ति तो हमारी भी नहीं है ध्रुव ! मेरी साधना शक्ति के साथ तुम दोनों की सत्य शक्ति भी है। मेरे बन्धन तो शायद ये काट भी देते ! ...
... पर तुम लोगों की सत्य शक्ति के कारण ही ये बेबस हैं। तुम्हारी सत्य शक्ति इनकी पाप शक्ति को काटकर इनकी शक्तियों को क्षीण कर रही है! और इसी कारण ये अपने बन्धन तोड़ नहीं पा रहे हैं!
आर्रर्रर्घ। हमें मुक्त कर दे लड़की ! मुक्त कर दे, वरना तेरे शरीर में इतने प्रेत छोड़ दूंगा कि तू एक चलता-फिरता कब्रिस्तान बन जाएगी!
नारकी ! निशाचर !
नारकी, तुरन्त ही पातकी का इशारा समझ गया—

तंत्र- बंधनों में बंधे दोनों शैतान निशाचर के बेहोश शरीर पर जा गिरे-
और निशाचर के शरीर से उनको वह अतिरिक्त पाप ऊर्जा मिलने लगी-
जो ध्रुव और डोगा की 'सत्य शक्ति' को काटकर उन शैतानों को तंत्र बंधनों से आजाद कराने के लिए काफी थी-
और आजाद हो चुके शैतानों का -
एक ही वार काफी था, सीपी और मोती उठाती लोरी को दूर-उठा फेंकने के लिए-

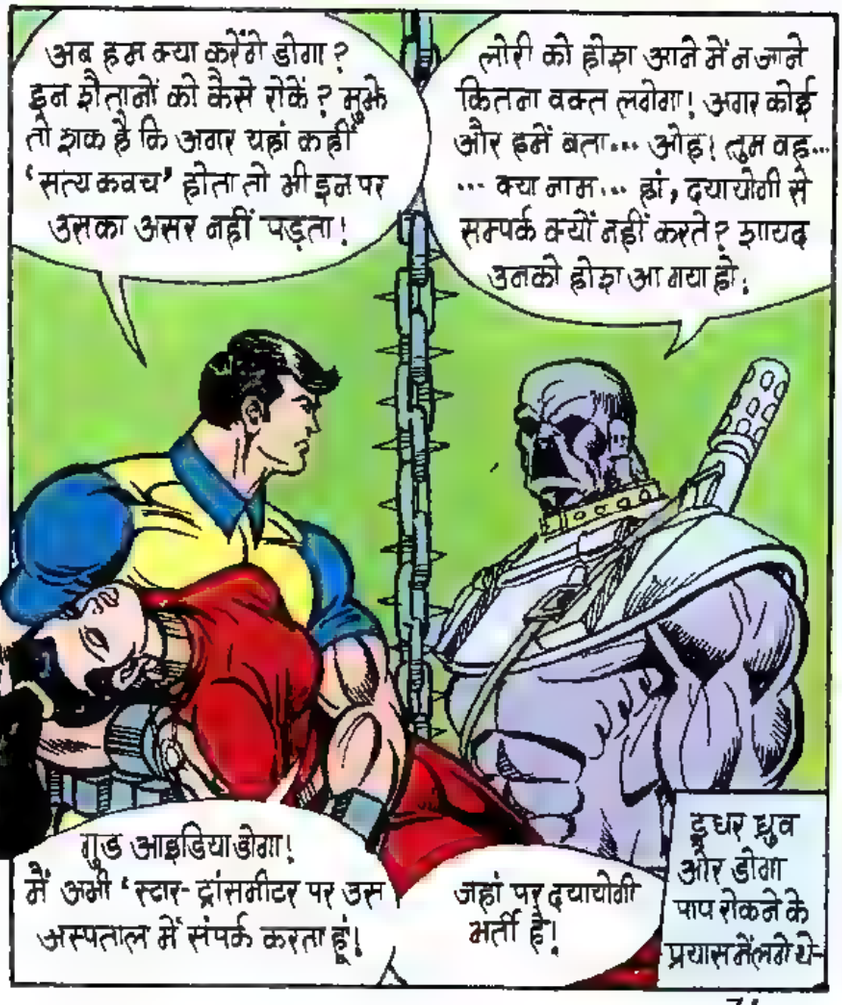

पहले वार ने लोरी के होश छीने, और दूसरे वार ने सीपी और मोती को अणुओं के टुकड़ों में बिखेर दिया–
और साथ ही साथ दो अट्टहास गूंज उठे–
हा हा हा! अब हमको कोई कैद नहीं कर सकता! कुछ भी कैद नहीं कर सकता!
हा हा हा ही ही ही! हां, और अब हम पाप फैलाएंगे। सारी दुनिया में पाप फैलाएंगे!
और तब हमको असुरलोक में एक ऊंचा पद मिलेगा! बहुत ऊंचा!
अब हम क्या करेंगे डोगा? इन शैतानों को कैसे रोकें? मुझे तो शक है कि अगर यहां कहीं 'सत्य कवच' होता तो भी इन पर उसका असर नहीं पड़ता!
लोरी को होश आने में न जाने कितना वक्त लगेगा! अगर कोई और हमें बता... ओह! तुम वह... ...क्या नाम... हां, दयायोगी से सम्पर्क क्यों नहीं करते? शायद उनको होश आ गया हो!
गुड आइडिया डोगा! मैं अभी 'स्टार-ट्रांसमीटर पर उस अस्पताल में संपर्क करता हूं!
जहां पर दयायोगी भर्ती है!
इधर ध्रुव और डोगा पाप रोकने के प्रयास में लगे थे–
और उधर पूरी दुनिया में पाप और हिंसा का पागलपन छाया हुआ था–
लूट लो!
मार डालो!
गर्दन काट दो कमीने की!

इन मामूली पागलपनों के साथ-साथ कुछ ऐसे पागलपन भी बढ़ रहे थे, जो बड़े पैमाने पर नर संहार करने में सक्षम थे–
अमेरिका के व्हाइट हाउस में–
एफ16 को परमाणु हथियारों से लैस करके इराक के ऊपर उड़ने को कहो! आज मैं दुनिया के नक्शे से उस देश का नाम मिटा दूंगा, जनरल!
मेरा भी यही मन कर रहा है सर!
पूरी दुनिया, पाप की चादर में घिर चुकी थी–
रूस के मुख्यालय क्रेमलिन में–
मुझे लग रहा है कि अमेरिका के खत्म होने का वक्त आ गया है! सारी मिसाइलें निशानों पर साध दो! अगर उन लोगों ने एक भी गलत हरकत की तो सारी मिसाइलें एक साथ छोड़ दूंगा!
गलत हरकत का इन्तजार क्यों करें? अभी छोड़ दें सर?
पहले निशाने पर तैनात तो करो, फिर सोचते हैं, जनरल! सोचते हैं!
सारी दुनिया धू-धू करके जल रही थी–
और बुरी खबरें बढ़ती ही जा रही थीं–
बैडलक डोगा! दयायोगी का इलाज करने वाले डॉक्टर ही अस्पताल छोड़कर भाग गए हैं। वे अभी तक होश में नहीं आए हैं!
ओफ्! अब क्या करें? ये दोनों शैतान तो तभी खत्म हो सकते हैं, जब ये ही एक-दूसरे को मार डालें!
डोगा की इच्छा शायद पूरी होने वाली थी–
ऐ, ऐ, पातकी! एक पल रुको! तुम कहीं मेरे क्षेत्र में तो पाप नहीं फैला रहे हो?
तेरा क्षेत्र? तेरा क्षेत्र कौन सा है? कहीं रेखा खिंची है क्या?

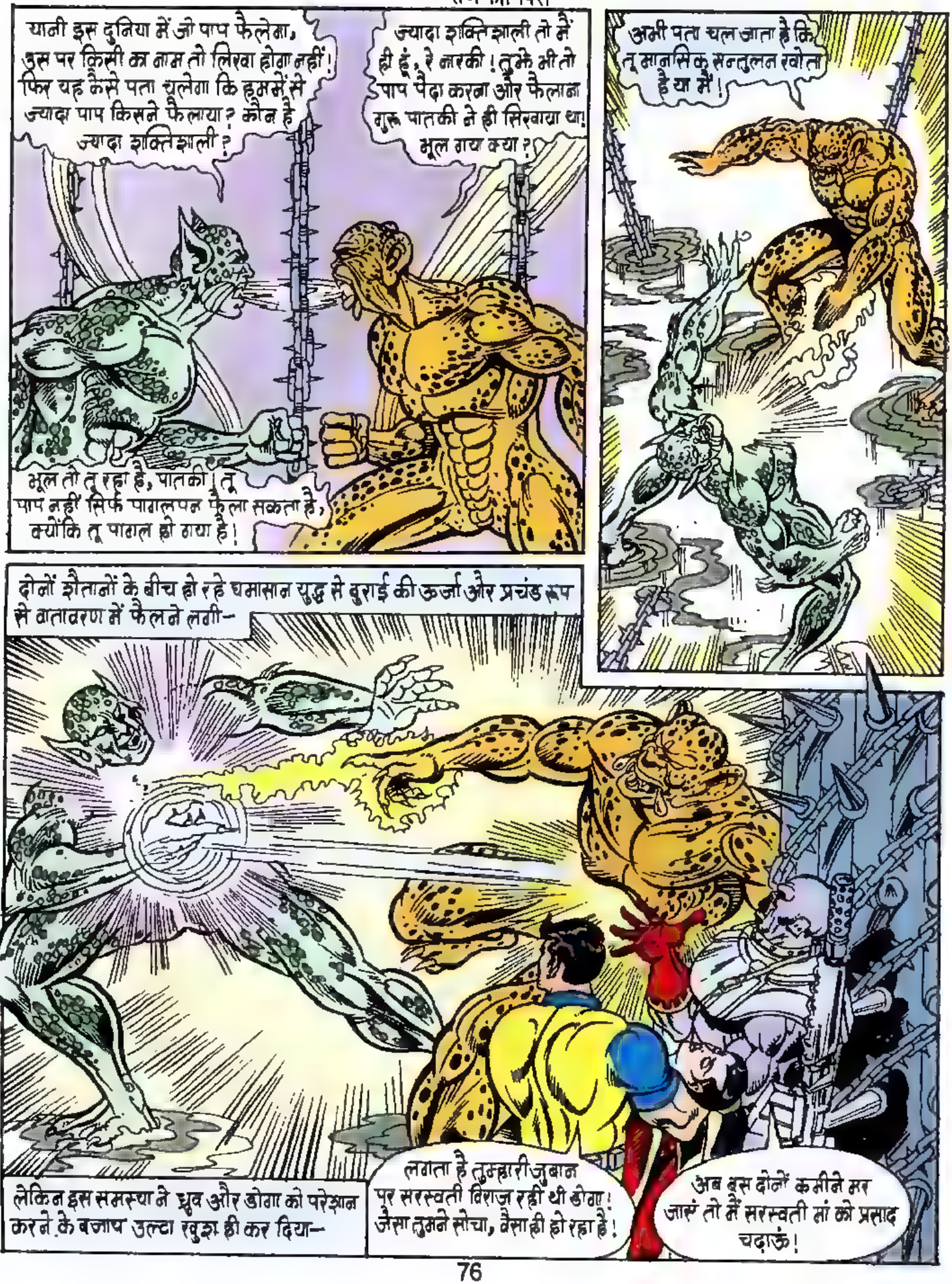
यानी इस दुनिया में जो पाप फैलेगा, उस पर किसी का नाम तो लिखा होगा नहीं! फिर यह कैसे पता चलेगा कि हममें से ज्यादा पाप किसने फैलाया? कौन है ज्यादा शक्तिशाली?
ज्यादा शक्तिशाली तो मैं ही हूं, रे नरकी! तुझे भी तो पाप पैदा करना और फैलाना गुरू पातकी ने ही सिखाया था! भूल गया क्या?
भूल तो तू रहा है, पातकी! तू पाप नहीं सिर्फ पाताल पन फैला सकता है, क्योंकि तू पाताल हो गया है!
अभी पता चल जाता है कि तू मानसिक संन्तुलन खोता है या मैं!
दोनों शैतानों के बीच हो रहे घमासान युद्ध से बुराई की ऊर्जा और प्रचंड रूप से वातावरण में फैलने लगी–
लेकिन इस समस्या ने ध्रुव और डोगा को परेशान करने के बजाय उल्टा खुश ही कर दिया–
लगता है तुम्हारी जुबान पर सरस्वती विराज रही थी डोगा! जैसा तुमने सोचा, वैसा ही हो रहा है!
अब बस दोनों कमीने मर जाएं तो मैं सरस्वती मां को प्रसाद चढ़ाऊं!

लेकिन प्रसाद चढ़ाने का समय अभी काफी दूर लगा रहा था—
से से से sss पातकी, रुक! ऐसे तो तू मुझे मार डालेगा, और मैं तुझे! फिर पाप कौन फैलायेगा? निशाचर?
तू कह तो ठीक रहा है। लेकिन फिर ये कैसे तय होगा कि हममें से ज्यादा शक्ति शाली कौन है?...
... और जो ज्यादा शक्तिशाली साबित होगा, वह धरती का मन पसन्द हिस्सा चुनेगा पाप फैलाने के लिए!
ठीक है! एक काम करते हैं! हम नहीं लड़ते हैं! दो प्यादे चुन लेते हैं। वे आपस में लड़ेंगे, और जिसका प्यादा जीतेगा, वह ज्यादा शक्तिशाली माना जायगा! मंजूर है?
मंजूर है! पर हमारे प्यादे होंगे कौन?
इन दोनों तगड़े मुस्टंडे मानवों से अच्छा प्यादा कहां मिलेगा?
तो कर लो इनके दिमागों पर कब्जा!
प्रयत्न तो कर रहा हूं! परन्तु इनके अन्दर भीषण सत्य शक्ति है। मेरी सारी शक्ति व्यर्थ जा रही है। मन तो कर रहा है कि इनकी जान ले लूं!
नहीं! इनकी जान लेने की कोई जरूरत नहीं है, ये प्रतिरोध कर रहे हैं...
... और अगर इन लोगों ने प्रतिरोध जारी रखा तो मैं इस कन्या के प्राण हर लूंगा! बन्द कर दो हमारा प्रतिरोध, और बन जाओ हमारे गुलाम!

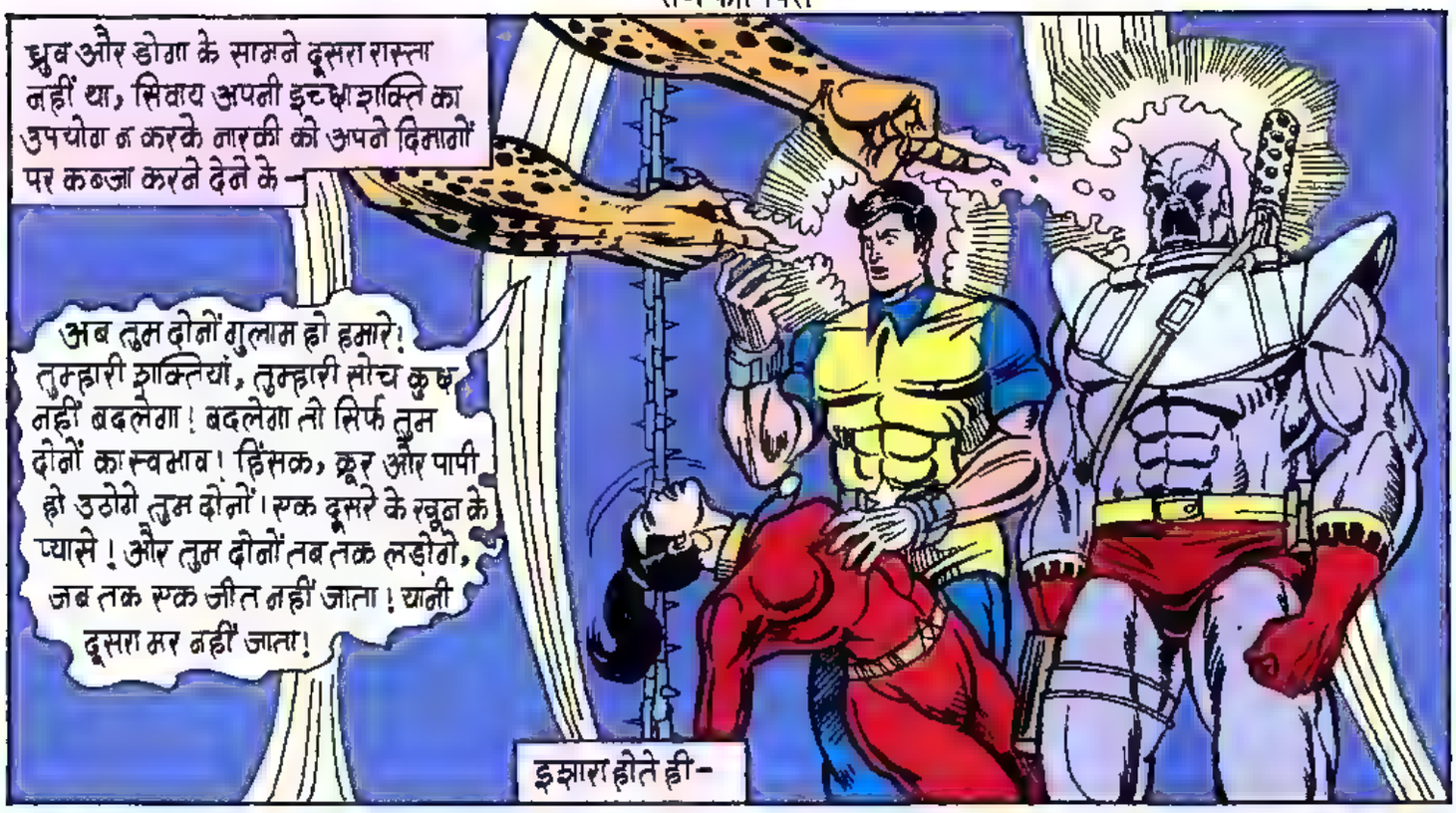
ध्रुव और डोगा के सामने दूसरा रास्ता नहीं था, सिवाय अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग न करके नारकी को अपने दिमागों पर कब्जा करने देने के –
अब तुम दोनों गुलाम हो हमारे! तुम्हारी शक्तियां, तुम्हारी सोच कुछ नहीं बदलेगा! बदलेगा तो सिर्फ तुम दोनों का स्वभाव! हिंसक, क्रूर और पापी हो उठोगे तुम दोनों। एक दूसरे के खून के प्यासे! और तुम दोनों तब तक लड़ोगे, जब तक एक जीत नहीं जाता! यानी दूसरा मर नहीं जाता!
इशारा होते ही –

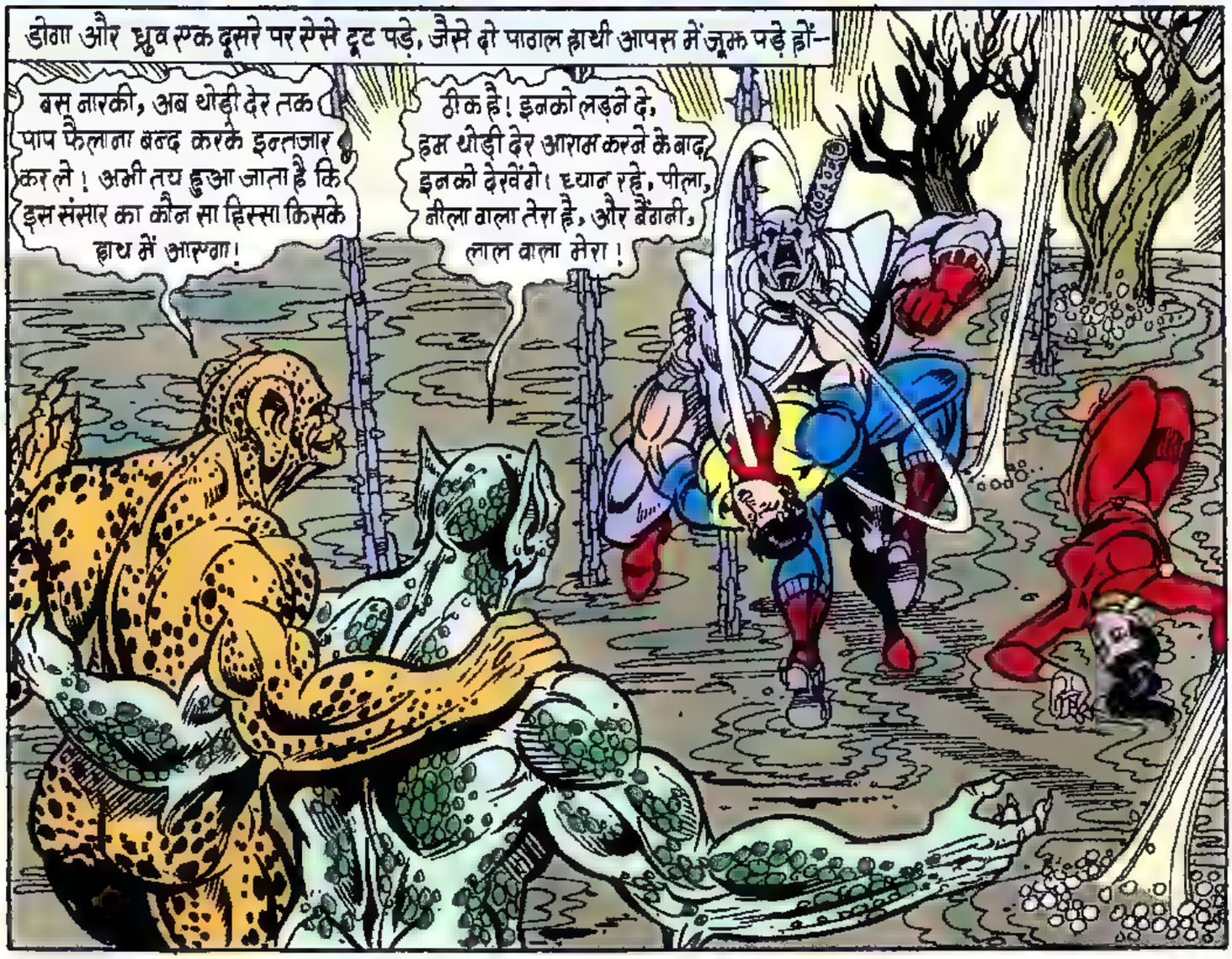
डोगा और ध्रुव एक दूसरे पर ऐसे टूट पड़े, जैसे दो पाताल हाथी आपस में जूझ पड़े हों –
बस नारकी, अब थोड़ी देर तक पाप फैलाना बन्द करके इन्तजार कर ले! अभी तय हुआ जाता है कि इस संसार का कौन सा हिस्सा किसके हाथ में आएगा!
ठीक है! इनको लड़ने दे, हम थोड़ी देर आराम करने के बाद, इनको देखेंगे। ध्यान रहे, पीला, नीला वाला तेरा है, और बैंगनी, लाल वाला मेरा!

ध्रुव और डोगा के अन्दर, शैतानों की शक्ति ने उस पैशाचिकता को जगा दिया था, जिसे उन दोनों की सत्य शक्ति ने अब तक सुलाकर रखा हुआ था—
तड़ाक
दोनों ही एक दूसरे पर प्राणघातक हमले कर रहे थे। परन्तु ध्रुव का किसी भी इन्सान की जान न लेने का प्रण, अभी भी ध्रुव के हाथों को घातक बनने से रोके हुए था—
लेकिन डोगा ने न पहले कभी इस बात की परवाह की थी, और न ही उसे आज कोई परवाह थी—

तेरे साथ मैं कोई चांस नहीं लेना चाहता ध्रुव! तेरे बारे में मैंने काफी सुना है! ... अगर मैं एक बार भी चूका, तो तू मुझे इस दुनिया से चुका देगा!...
... इसलिए एक बार में गोली तेरे दिल के अन्दर, और अगले पल तेरा दम बाहर!
बिना किसी हिचक के गोलियां, ध्रुव के शरीर में अपना परमानेन्ट घर बनाने के लिए आगे लपकीं—
आऽऽऽह! तेरा निशाना भी काबिले तारीफ है डोगा, और तेरी फुर्ती भी! ...
... लेकिन मेरा शरीर अभी खाली नहीं है इनको किराए पर रखने के लिए!
आऽऽऽह! तेरा बदन जब तक सलामत रहेगा, तब तक मैं ऐसे किराएदार भेजता रहूंगा!...
... कुछ दर्जन को तो मैं अभी बुला भेजता हूं!
'डॉग व्हिसल' की अश्रव्य तरंगें हवा में तैरी...

और कुछ ही पलों बाद डोगा की कुत्ता फौज, ध्रुव की तरफ लपक रही थी-
अच्छा! तो ये हैं तेरे किराएदार! तेरी बात मानकर मुझ पर हमला कर रहे हैं! लेकिन ये तेरे जानकार हैं तो मेरे भी दोस्त हैं!
देखता हूं कि ये मुझ पर हमला करते हैं, या तुम पर!
गर्रर्रर्र गुर गुर!
लेकिन कुत्तों पर ध्रुव की पुचकार का कुछ खास असर नहीं हुआ-
ओह! तो ये मुंबई के कुत्ते, राजनगर की भाषा नहीं समझते! खैर, कुत्ते नहीं समझते तो कोई और समझेगा!
ध्रुव के मुंह से एक और पुकार निकली-
क्रिंया क्रिंया! ची ची ची ई ई ई
और अगले ही पल मुंबई के आकाश पर मंडराने वाले सैकड़ों प्रकार के पक्षी कुत्तों पर टूट पड़े-

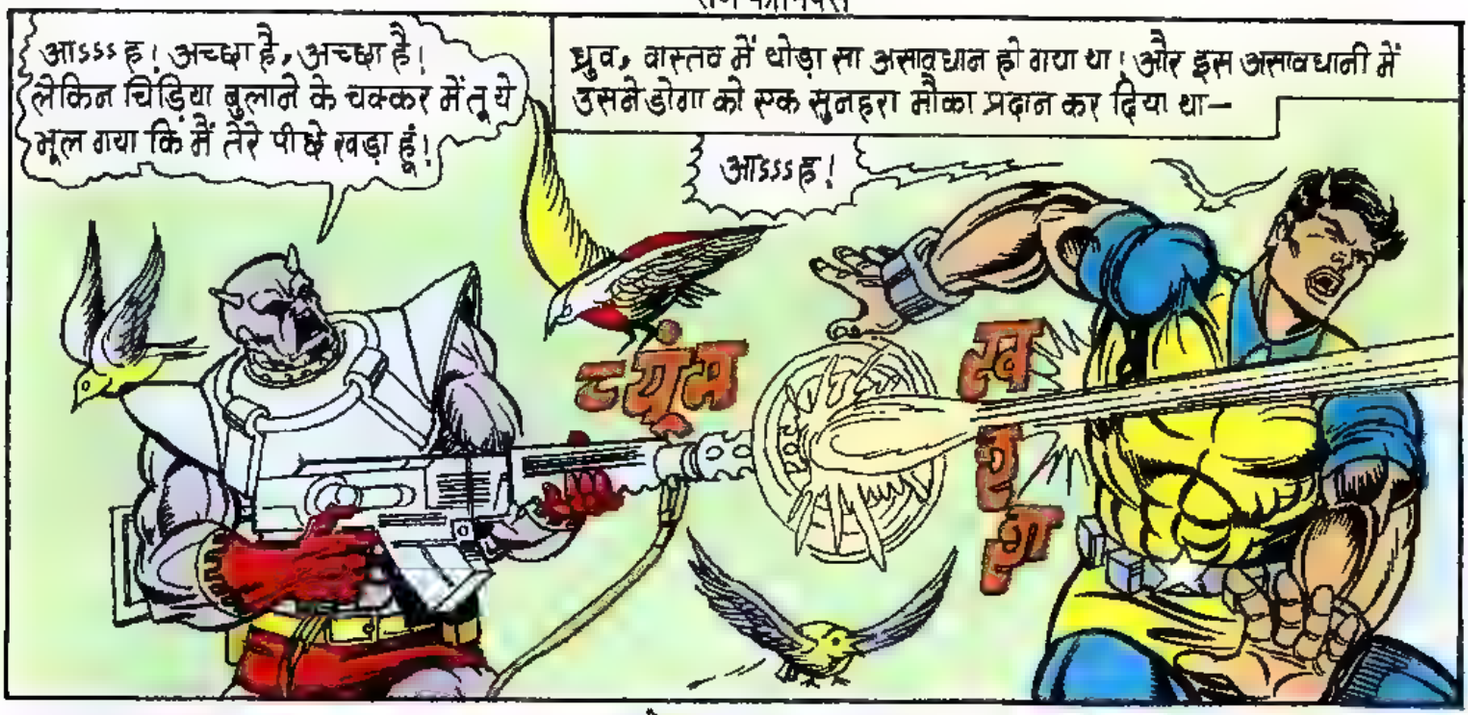

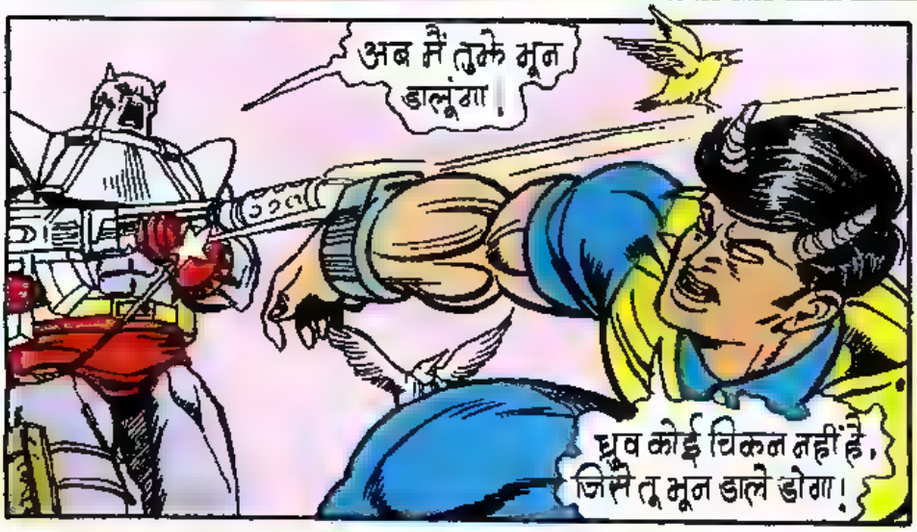

आऽऽऽह! अच्छा है, अच्छा है! लेकिन चिड़िया बुलाने के चक्कर में तू ये भूल गया कि मैं तेरे पीछे खड़ा हूं!
ध्रुव, वास्तव में थोड़ा सा असावधान हो गया था। और इस असावधानी ने उसने डोगा को एक सुनहरा मौका प्रदान कर दिया था—
आऽऽऽह!
ट्यूंम
अब मैं तुझे भून डालूंगा!
ध्रुव कोई चिकन नहीं है, जिसे तू भून डाले डोगा!
स्टार ब्लेड, तड़ातड़ डोगा के हाथ में धंसने लगे—
लेकिन डोगा आगे बढ़ता ही चला आया—
तू मेरा सारा खून भी बहा देगा, तब भी डोगा के कदम नहीं रुकेंगे!...
...दूर से निशाना लगाने पर तू उछल-कूद कर बचे जा रहा है। इसीलिए अब अगली गोली...
...तेरी कनपटी पर चलेगी। एक धमाके से तेरा भेजा बाहर आ गिरेगा, और उसे मेरे कुत्ते चाटेंगे!
मेरा भेजा दूसरे नहीं चाटते डोगा...

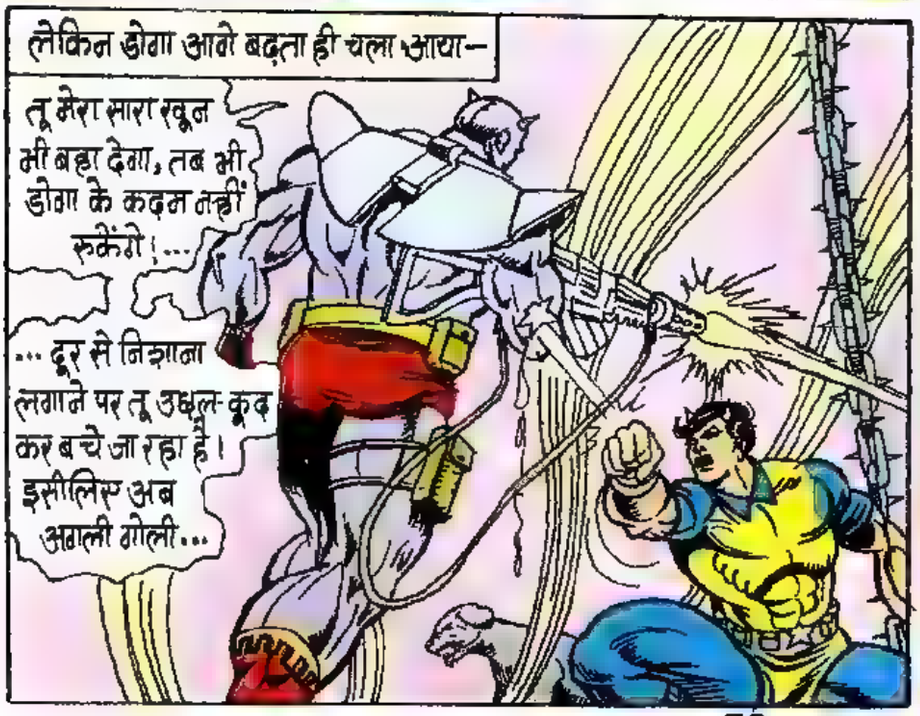

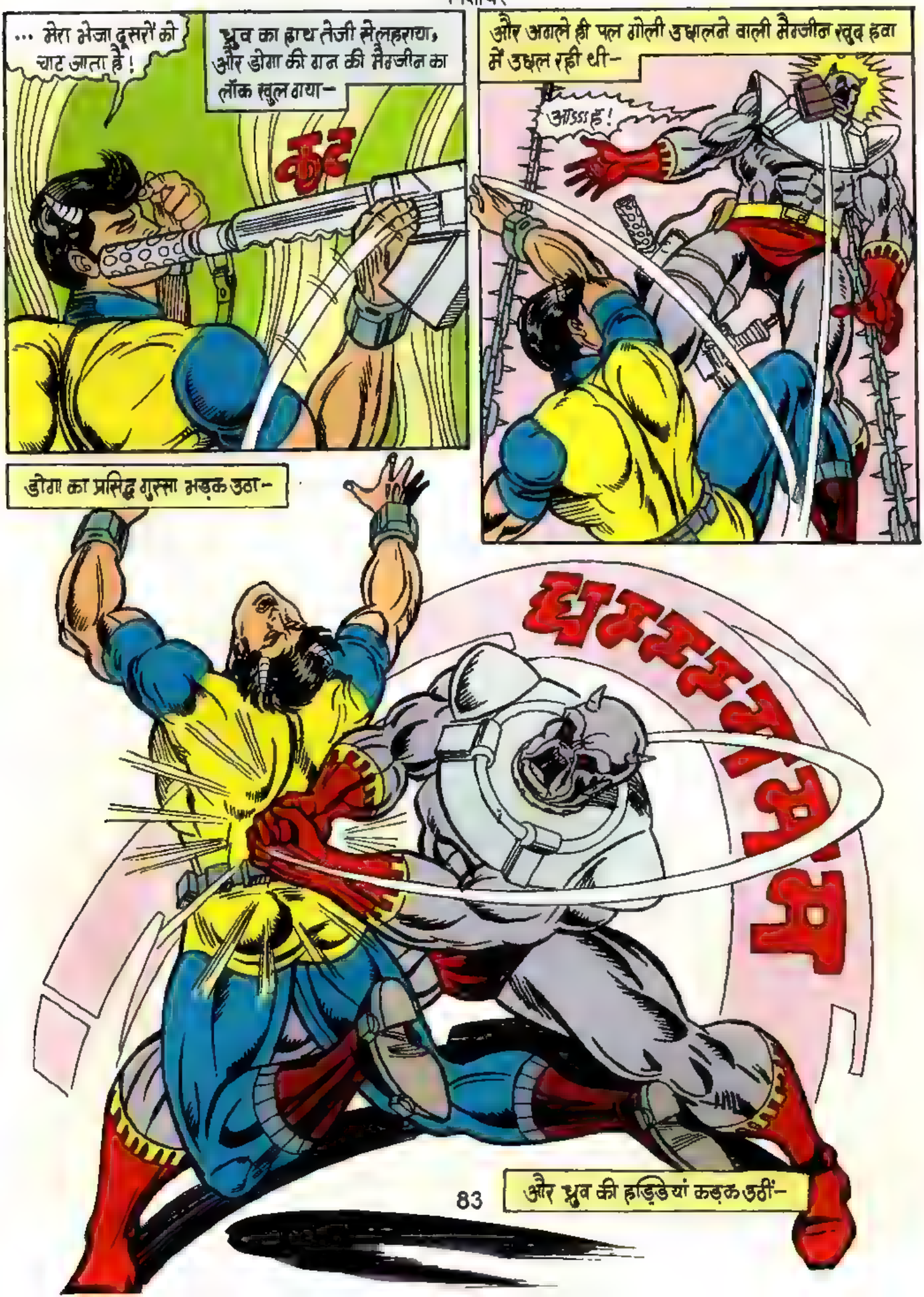

... मेरा भेजा दूसरों को चाट जाता है!
ध्रुव का हाथ तेजी से लहराया, और डोगा की गन की मैग्जीन का लॉक खुल गया−
कट
और अगले ही पल गोली उछालने वाली मैग्जीन खुद हवा में उछल रही थी−
आऽऽऽह!
डोगा का प्रसिद्ध गुस्सा भड़क उठा−
धम्मम्मम
और ध्रुव की हड्डियां कड़क उठीं−

ध्रुव के अन्दर भी हिंसा और पाप का भरा सागर ज्वार उठाने लगा–
यह निश्चित था कि कुछ ही मिनटों में या तो इनमें से कोई एक दूसरे को पीट-पीटकर मार डालने वाला था, या दोनों ही बुरी तरह से घायल होकर दम तोड़ देने वाले थे–
पर ऐसा होने से पहले ही दोनों के शरीर से दो अजीब से यंत्र आकर टकराए–
और दोनों चीख उठे–
एक पल के अन्दर ही दोनों पाप के सागर से बाहर आ चुके थे–
ओह, लोरी! तुम होश में आ गई? पर मेरा बदन जगह-जगह से दर्द क्यों कर रहा है?
मेरा भी! हम लोग कहीं गिर गए थे क्या?
अगर मैं समय पर होश में न आ जाती तो तुम दोनों हमेशा के लिए गिर जाते!
खैर, शुक्र है भगवान का, जिसने मेरे माध्यम से तुमको सही समय पर होश दिला दिया!

पर... पर ये सब क्या हो रहा था? तुम दोनों आपस में जानी दुश्मनों की तरह क्यों लड़ रहे थे? और... तुम दोनों के रूप शैतानों की तरह कैसे हो गए थे?
नारकी और पातकी के कारण! उन्होंने तुम्हें जान से मारने की धमकी देकर हमें यह रूप धारण करने पर मजबूर कर दिया था!
निशाचर से हमारा झगड़ा ही सही, पर वह हमारा जात भाई है। वैसे भी तुम लोगों ने आजाद होकर अपनी जिन्दगी से आजाद होने की ठान ली है! अब कुछ भी हो, हम तुमको जिन्दा नहीं छोड़ेंगे!
मैं समझ गई थी! इसीलिए मैंने तुम दोनों पर 'तंत्र वृत्त' का वार किया था!
ताकि वह तुम्हारी बुराइयों को नष्ट करके तुम लोगों को सामान्य बना दे! पर... नारकी और पातकी कहां हैं?
पता नहीं! उन्होंने अपनी बुराइयां हममें भरी, इतना तो हमें याद है। उसके बाद का हमें कुछ याद नहीं!
खैर, मौका अच्छा है। नारकी और पातकी गायब हैं, और निशाचर बेहोश है। निशाचर को काबू में करने का इससे अच्छा चांस नहीं मिलेगा!
नहीं, लड़की! नहीं!
आऽऽऽ ह! भागो! ये एकाएक कहां से आ गए? और अब तो इन्होंने सीपी और काले मोती को भी नष्ट कर दिया है। अब हम इनसे नहीं टकरा सकते!
सीपी और मोती को नष्ट कर दिया है? ओह, इनको पकड़ने का वही एक तरीका मालूम था मुझको! अब क्या होगा?

हमारी मौत! जल्दी ही कोई तरीका सोचो लोरी! इस काम की तो सिर्फ तुम ही एक एक्सपर्ट हो यहां पर! हम कुछ नहीं कर सकते, सिवाय भागने या मरने के!

सोचो, काले मोती और सीपी के अलावा ऐसी और कौन सी चीज है, जो इनको रोक सके, या कैद कर सके?

ये गुण सिर्फ काले मोती और सीपी के कांबीनेशन में ही है ध्रुव! उनके अणुओं में कुछ ऐसे जादुई गुण होते हैं!

और अगर इसके अलावा ऐसी और कोई वस्तु है तो मुझे उसकी जानकारी नहीं है!

ओफ्! मैं और लोरी तो खाली हो चुके। तुम्हारे पास कोई आइडिया हो तो बताओ डोगा.

मैं दिमाग से ज्यादा मसल्स का इस्तेमाल करता हूं ध्रुव! तुम्हारे साथ थोड़ी देर तक रहने से मुझ पर संगत का असर तो आया है, पर इतना नहीं कि मैं कोई आइडिया सोचना शुरू कर दूं!

संगत का असर...

...वाह, थैंक्यू डोगा!

तुमने एक रास्ता बता तो दिया है!

रास्ता

कैसा रास्ता, ध्रुव?

फूलप्रूफ रास्ता नहीं है लोरी, बस उसे ट्राई करके देखा जा सकता है! लेकिन उसके लिए हमको राजनगर तक जाना पड़ेगा!

मायायोगी के आश्रम तक! मेरा हेलीकॉप्टर सेवा में मौजूद है!

एक मिनट, एक मिनट ध्रुव! हमारे पास इतना वक्त नहीं है! और वह भी ऐसे आइडिया के लिए जिसके फूलप्रूफ होने में शक हो!

तुम बताओ वहां ले जाना क्या है? फिर मैं सोचती हूं कि मानसिक तरंगों का प्रयोग करना है या नहीं!

ध्रुव, लोरी को बताता चला गया-

और अगले ही पल लोरी के मस्तक से मानसिक तरंगें निकलकर, पलों में हजारों किलोमीटर की दूरी तय करने लगीं-

मुंबई के उस छोर से-

महानगर स्थित मायायोगी के आश्रम तक-

अरे! य... यह क्या हो रहा है, दीवार पर बना यह तंत्र टूटकर दीवार से अलग हो रहा है!

तंत्र सिर्फ टूटकर अलग ही नहीं हो रहा था, बल्कि हवा में उड़ता हुआ मुंबई की तरफ बढ़ रहा था-

उस टुकड़े को मुंबई के उस 'मिनी नर्क' तक पहुंचने में कुछ ही पलों का वक्त लगा–
ओऽऽऽ! मानसिक शक्ति! और इसकी मदद से तू मुझ पर पत्थर फेंक रही है! हा हा हा! अरी मूर्ख, मुझ पर पहाड़ भी दे मारेगी तो भी दर्द से पहाड़ ही चीखेगा...
नारकी इस यंत्र बने पत्थर को मामूली समझ कर गलती कर रहा था–
क्योंकि इसी वक्त लोरी की दूसरी मानसिक किरण, छोटे हाजी के शव को हटाती हुई वह भारी-भरकम पत्थर उठा रही थी, जिस पर कभी सीपी रखी होती थी–
और कुछ ही पलों बाद वह पत्थर भी उड़ता हुआ नारकी और पातकी की तरफ ही आ रहा था–
फिर पत्थर! तू क्यों खामख्वाह हमको गुदगुदी लगाने पर तुली है?
पातकी ने भी इसे नजर अन्दाज कर के भारी भूल कर दी थी
और नारकी एवं पातकी चीख उठे–
आऽऽऽह! य... यह क्या हो रहा है?
हमारे शरीर वैसे ही खिंच रहे हैं, जैसे मायायोगी द्वारा सीपी और मोती में खींचने से हुए थे। पर कैसे? हम तो सीपी को भी नष्ट कर चुके हैं, और मोती को भी!
क्योंकि अगले ही पल पत्थर और यंत्र बना प्लास्टर एक-दूसरे से चिपक गए–
साथ ही साथ, लोरी कुछ मंत्र बुदबुदा उठी–
लेकिन चिल्लाना न तो नारकी के काम आया और न ही पातकी के–

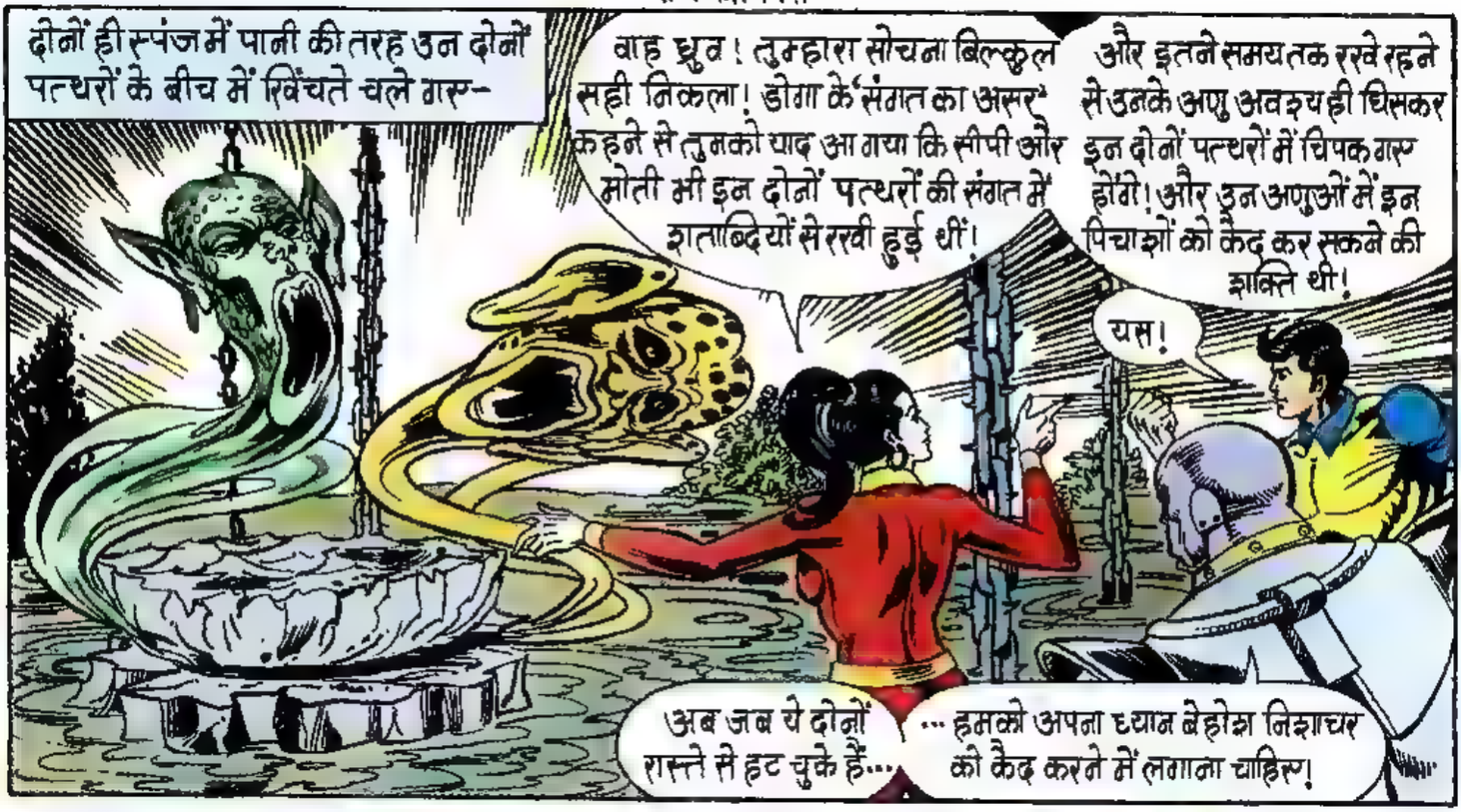
दोनों ही स्पंज में पानी की तरह उन दोनों पत्थरों के बीच में रिंचते चले गए–
वाह ध्रुव ! तुम्हारा सोचना बिल्कुल सही निकला ! डोगा के 'संगत का असर' कहने से तुमको याद आ गया कि सीपी और मोती भी इन दोनों पत्थरों की संगत में शताब्दियों से रखी हुई थीं !
और इतने समय तक रखे रहने से उनके अणु अवश्य ही घिसकर इन दोनों पत्थरों में चिपक गए होंगे ! और उन अणुओं में इन पिशाचों को कैद कर सकने की शक्ति थी !
यस !
अब जब ये दोनों रास्ते से हट चुके हैं...
... हमको अपना ध्यान बेहोश निशाचर को कैद करने में लगाना चाहिए !

पर निशाचर को कैद कैसे करोगी लोरी ? मुझे दयायोगी ने बताया था कि ये दोनों शैतान तो पहले भी आसानी से पकड़े गए थे, पर निशाचर पर इनका असर नहीं हुआ था !
नारकी और पातकी का असर समाप्त होते ही निशाचर पर भी कसा उनका शिकंजा ढीला होने लगा था–

कोई न कोई रास्ता तो होगा ही न ध्रुव ! क्योंकि निशाचर एक बार पहले भी पकड़ा जा चुका है !
उस बार उस स्वामी मायायोगी की किस्मत अच्छी थी बच्चो !...

... पर इस बार तुम लोगों की किस्मत उतनी अच्छी साबित नहीं होगी !
ओह ! निशाचर होश में आ गया है !...
... और इसके वार ने दोनों चट्टानों को नष्ट कर दिया है। पाप ने पाप को काट डाला है।
गुड ! यानी नारकी और पातकी अब हमेशा के लिए नष्ट हो चुके हैं !

और अब हम भी नष्ट होने वाले हैं। तीरी ! क्योंकि नारकी, पातकी को रोकने का तरीका तो कम से कम हमें मालूम था, पर निशाचर को कैद करना तो दूर उसे रोकने तक का तरीका हमें नहीं पता !
सॉरी गलती शायद मेरी ही है ध्रुव ! निशाचर मेरे ही कारण कब्र से बाहर आ पाया है ! अगर मैं वहां हिंसा न करता...
कब्र !
हे भगवान ! निशाचर को रोकने का तरीका ! तो इस पूरे समय हमारे सामने ही था ! इतनी शताब्दियों तक निशाचर कैसे सोया रहा ? मिट्टी में दबा तो बाहर क्यों नहीं निकल पाया ? क्योंकि मिट्टी के नीचे निशाचर की शक्तियां काम नहीं करती हैं ! पृथ्वी सोख लेती है निशाचर की शक्तियों को !
ये तो तुमने 'बिल्ली' के गले में घंटी बांधने जैसा तरीका सोचा है ध्रुव ! निशाचर को किसी गड्ढे में डालना, और फिर ऊपर से मिट्टी से भरना कोई बच्चों का खेल है क्या ? पहले तो यह कर पाना ही असंभव लगता है, और अगर किसी तरह से कर भी लिया, तो निशाचर उस ढीली मिट्टी को उखाड़ नहीं फेंकेगा क्या ? कोई और तरीका सोचो ध्रुव ! और कोई तरीका !
इसके अलावा मुझे रोकने का कोई और तरीका कम से कम इस ब्रह्माण्ड में तो नहीं है !...

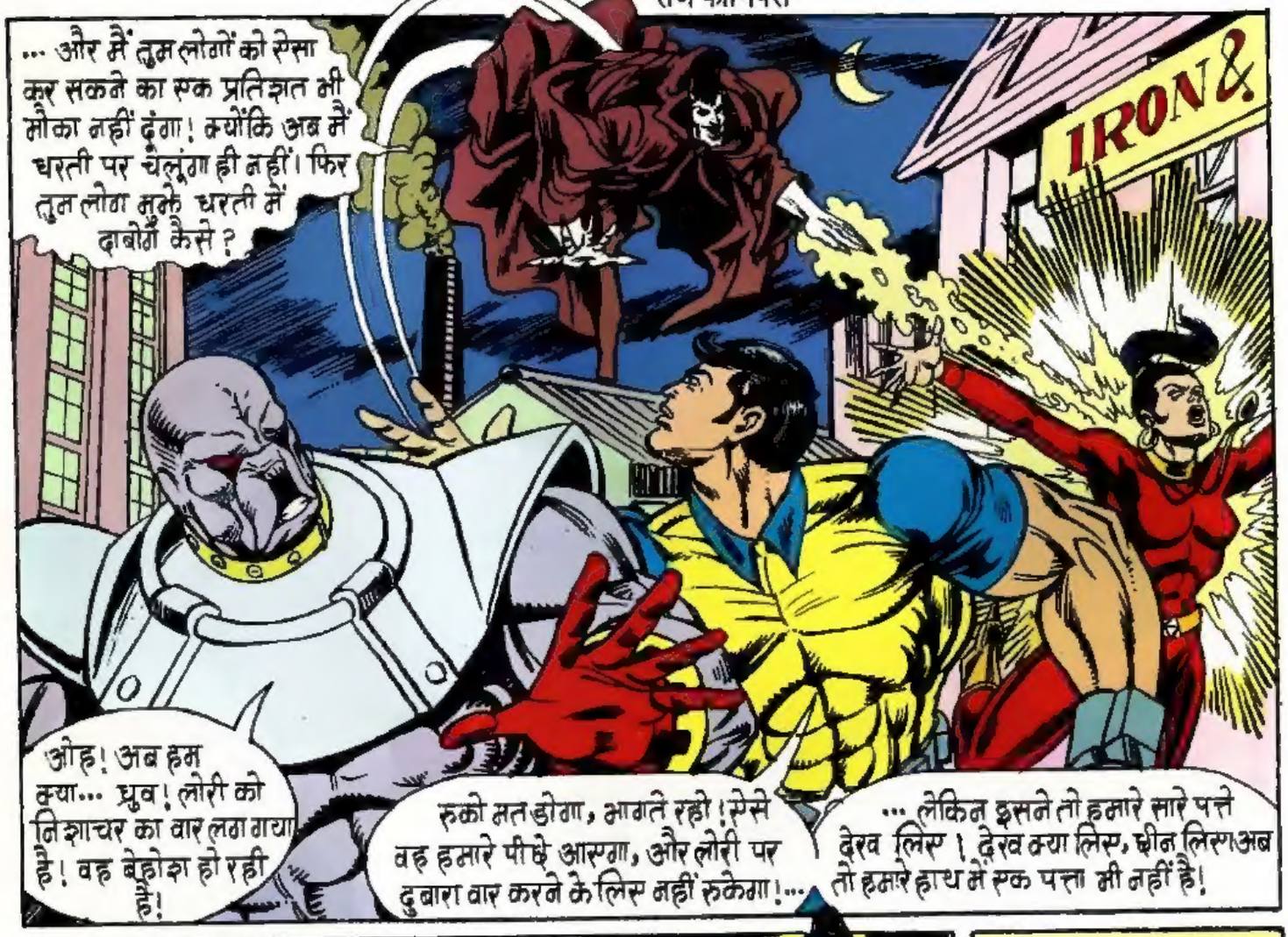

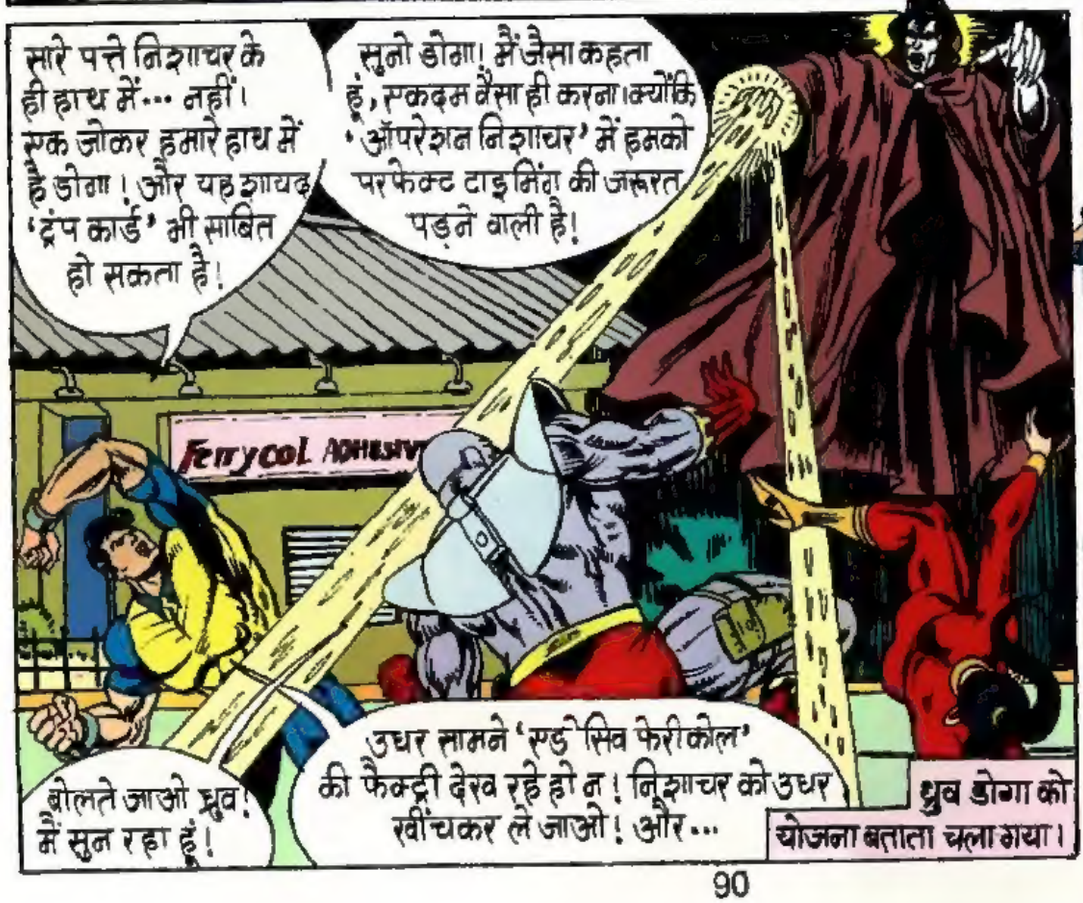

... और मैं तुम लोगों को ऐसा कर सकने का एक प्रतिशत भी मौका नहीं दूंगा! क्योंकि अब मैं धरती पर चलूंगा ही नहीं। फिर तुम लोग मुझे धरती में दबोगे कैसे?
IRON &
ओह! अब हम क्या... ध्रुव! लोरी को निशाचर का वार लग गया है! वह बेहोश हो रही है!
रुको मत डोगा, भागते रहो! ऐसे वह हमारे पीछे आएगा, और लोरी पर दुबारा वार करने के लिए नहीं रुकेगा!...
... लेकिन इसने तो हमारे सारे पत्ते देख लिए। देख क्या लिए, छीन लिए। अब तो हमारे हाथ में एक पत्ता भी नहीं है!
सारे पत्ते निशाचर के ही हाथ में... नहीं। एक जोकर हमारे हाथ में है डोगा। और यह शायद 'ट्रंप कार्ड' भी साबित हो सकता है।
सुनो डोगा! मैं जैसा कहता हूं, एकदम वैसा ही करना। क्योंकि 'ऑपरेशन निशाचर' में हमको परफेक्ट टाइमिंग की जरूरत पड़ने वाली है!
Ferrycol ADHESIVE
बोलते जाओ ध्रुव! मैं सुन रहा हूं!
उधर सामने 'एडेसिव फेरीकोल' की फैक्ट्री देख रहे हो न! निशाचर को उधर खींचकर ले जाओ! और...
ध्रुव डोगा को योजना बताता चला गया।
अगले ही पल, डोगा पलभर के लिए अपनी जगह पर थम गया, और ध्रुव दूसरी तरफ भागा—
जाहिर था कि निशाचर ध्रुव का पीछा करने के बजाय डोगा पर ही वार करता—

और निशाचर ने वैसा ही किया–

वाह! इसके वार ने तो फैक्ट्री की दीवार में ही छेद कर दिया... मेरा अन्दर घुसने का रास्ता आसान कर दिया!

इधर डोगा, योजना का अपना भाग बखूबी निभा रहा था–

और उधर, ध्रुव भी अपना रोल निभाने की तैयारी शुरू कर रहा था–

मिल गया! मैं जानता था कि किसी भी मैट्रो में रद्दी सड़क ढूंढ़ना कोई मुश्किल काम नहीं है! रद्दी सड़क तो मिल गई। बाकी काम ये बोरियां कर देंगी! और फिर मुझे रिमोट से बुलाना होगा अपने हैलीकॉप्टर को!

कुछ ही मिनटों बाद ध्रुव, स्टार हैलीकॉप्टर पर सवार होकर रूडहेसिव फैक्ट्री की तरफ बढ़ रहा था–

अब मुझे बहुत जल्दी करनी होगी। क्योंकि निशाचर के सामने डोगा ज्यादा देर तक नहीं टिक पायेगा! हे भगवान, हमें सफल करना!

आम इन्सान सचमुच इतनी देर तक निशाचर के सामने नहीं टिक सकता था! लेकिन यह डोगा था, जो काम खत्म होने के बाद ही हटता था। या तो पाप खत्म होता था, या डोगा की जान–

आऽऽहा! यही वह चीज है, जिसकी मुझे तलाश थी। फेरीकोल से भरे ड्रम! इंडस्ट्रियल इस्तेमाल के लिए!

पर इस वक्त इनका इस्तेमाल किसी और काम के लिए होगा!

योजना के अनुसार पहले मुझे हैलीकॉप्टर की हल्की सी आवाज आने तक इंतजार करना है। आ गई आवाज ! अब मुझे इन ड्रमों को उठाकर निशाचर पर फेंकना है। परन्तु निशाचर तो काफी ऊपर उड़ रहा है, और येण्डहेसिव से भरे ड्रम काफी भारी हैं। इनको तो उठाना ही मुश्किल है, और इतनी दूर फेंकना तो... खैर ! यही तेरे इम्तहान की घड़ी है ध्रुव ! लगा दे लॉयन जिम का सारा अनुभव ! सारी कसरत ! सारी ताकत !

सारी इच्छाशक्ति ! आ ऽऽऽऽ ऊ ऊ ह !

ड्रम, दूर हवा में उछल गया—

निशाचर के सर के ऊपर तक—

ओऽऽऽ तू इससे मुझे मारेगा ! ले देख ! इसका मैं वही हाल करूंगा...

... जो थोड़ी देर में तेरा आऽऽऽ ! यह क्या ? इससे तो... उलब... कोई चिपचिपा पदार्थ गिर रहा है।

निशाचर एण्डहेसिव में नहा गया—

और उसी पल ध्रुव ने रस्सी से लटकी और मिट्टी से भरी बोरियों को आजाद कर दिया—

और एण्डहेसिव से नहाए निशाचर पर मिट्टी की एक मोटी पर्त जम गई—

आऽऽ ह ! इस मिट्टी को मैं दूर झटक नहीं पा रहा हूं ! आऽऽऽ ह !

धम्म

देख निशाचर ? तू धरती की मिट्टी में दबे, या मिट्टी तुझे घेरे में ले ले, दोनों बातों का नतीजा तो एक सा निकलना है !

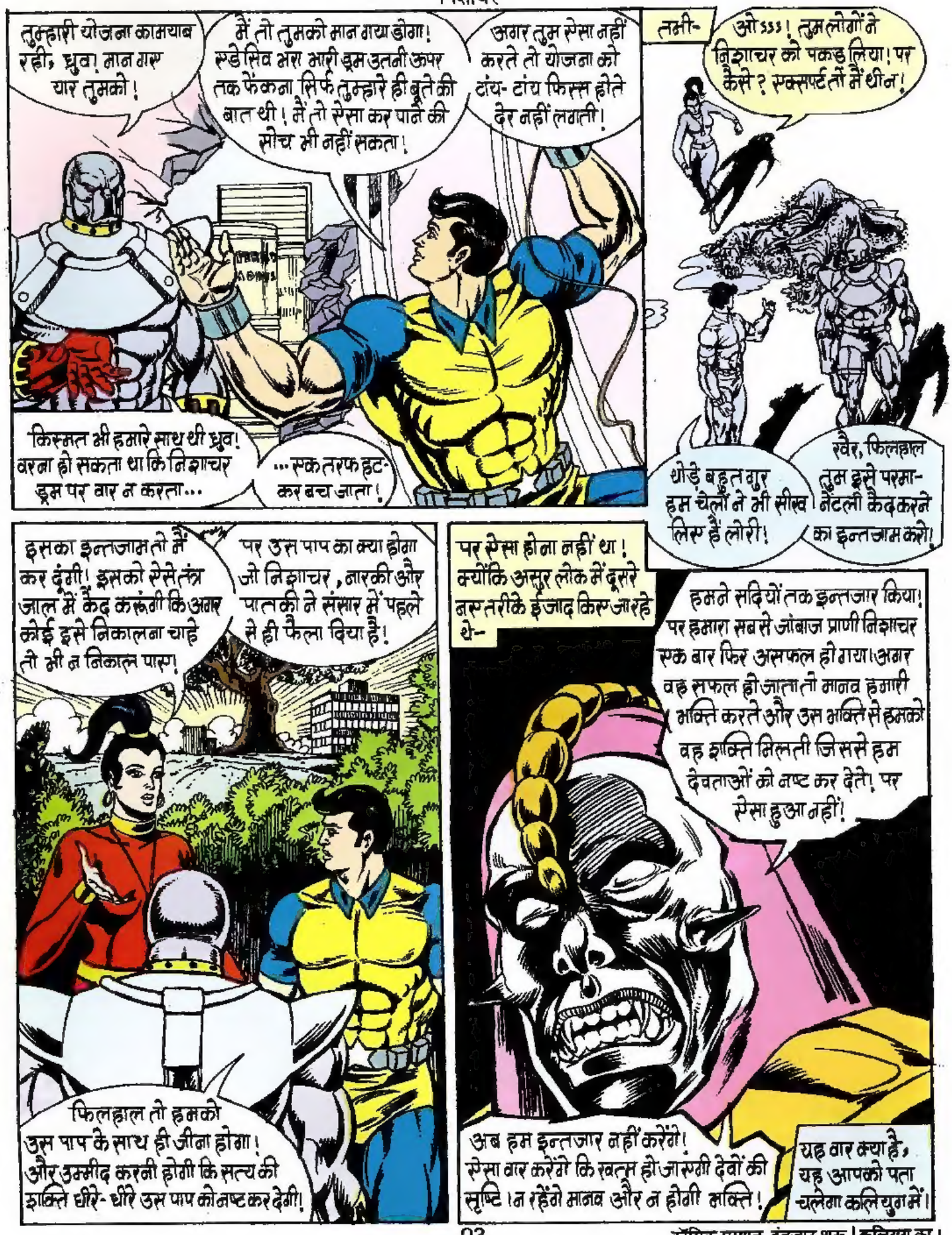

कॉमिक समाप्त, इंतजार शुरू! कलियुग का।